श्रीमती राजू देवी बैद

धर्मपत्नी कमलचन्द जी बैद, मुम्बई

के

मासखमण की तपस्या

पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

सप्रेम भेंट:-

मधु घट
द्वितीय संस्करण अक्षय तृतीया, अप्रैल 2009
प्रकाशक
श्री सूरजमल छाजेड़
चौपड़ा स्कूल के पास, नई लाईन
गगाशहर-334401 (बीकानेर)
मूल्य नित्य पठन

चाहे जो मजबूरी हो सामायिक जरूरी हो कि तर्ज पर ही चाहे जो मजबूरी हो इस किताब से 5 मिनिट का स्वाध्याय जरूरी हो। चाहे जितना भी कमालें कितनी धन सम्पत्ति बढ़ाले सब यहीं रह जायेगी। धर्म का एक क्षण भी जिया तो वह साथ जायेगा। जो हमारे साथ चले वही हमारे काम आना है तो फिर इससे पीछे क्यो ? आध्यात्म का चिन्तन मनन ही सच्चा सुख है। – सूरजमल छाजेड़

मुद्रक
अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
बीकानेर फोन 2547073, 9214555303

पाप कर्म न करना ही वस्तुत परम मंगल है।

तपस्विनी सेवाभाविनी

श्रीमती धन्नीदेवी छाजेड़

(गगाशहर-बीकानेर)

सेवाभावी तपस्विनी श्री धन्नीदेवी छाजेड का जन्म स्व श्री छगनमलजी सुराना, दिनहट्टा, कूचबिहार (गगाशहर-बीकानेर) की धर्मपत्नी श्रीमती सूरजादेवी की कुक्षि से 2004 आषाढ सुदी 5 को हुआ। आपका बाल्यकाल नानीसा की लाडली होने के कारण नानाजी श्री दीपचद जी एव मामाजी श्री जयचन्दलाल जी कलकत्ता (उदासर) के यहॉ बीता।

आपका शुभविवाह सवत् 2018, वैशाख सुदी 9 को रासीसर निवासी श्रेष्ठिवर्य श्री मगलचन्द जी छाजेड़ के द्वितीय पुत्र श्रीमान् सूरजमल जी, रासीसर निवासी के साथ सम्पन्न हुआ।

बाल्यकाल के धार्मिक सस्कार यहॉ आकर फलने-फूलने लगे क्योकि आपको ससुराल भी धार्मिक सस्कार वाला मिला। आपकी सासुजी श्रीमती पानी देवी जी भी बडी धार्मिक सस्कारो वाली होने तथा तपस्या में अग्रणी होने के कारण आपको भी वही वातावरण मिला। आपने श्रावण भादवा एकान्तर तप किया, उसके बाद 17 की बड़ी तपस्या घर का पूर्ण काम करते हुए सम्पन्न कर सबको चौंका दिया। आपने वर्षीतप उस यौवन अवस्था में पूर्ण कर सबको अचम्भित कर दिया। आपके प्रथम वर्षीतप का पारणा आचार्य श्री नानेश के गगाशहर (अक्षय तृतीया) प्रवास मे उनके सानिध्य मे बडे ही

साधु जनो का हृदय नवनीत (मक्खन) के समान कोमल होता है।

ठाठ-बाठ के साथ हुआ। ससुराल पक्ष व पीहर पक्ष में यह प्रथम तपस्या थी।

धार्मिक सस्कार, त्याग-तपस्या में रुचि होने के कारण आपमे मैत्री भाव, सेवाभावना जागृत हुई। आपने गॉव के गरीब बच्चो को कपड़े, भोजन आदि की सहायता करना शुरू किया। आप अस्पतालो में भर्ती मरीजो की सेवा सुश्रुषा करना, उन्हे दवाइयॉ आदि की व्यवस्था करके देना, आर्थिक रूप मे भी जितना सम्भव होता करतीं।

आपकी कुक्षि से चार बालिका रत्न पैदा हुईं। वैसे तो आज के सभ्य समाज मे पुत्र को ही रत्न कहा जाता है, लेकिन इन्होंने पुत्रियो को ही पुत्र रत्न से बढ़कर समझा तथा लालन-पालन उसी हिसाब से किया कि मॉ-बाप का नाम रोशन करे।

प्रथम पुत्री—राजू देवी बैद धर्मपत्नी श्री कमलचन्द जी बैद, नई लेन, गगाशहर (प्रवासी गोरेगाव-मुम्बई) मे रहती है और उनके मासखमण की तपस्या में **मधु घट** पुस्तक का द्वितीय सस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। यह भी अपनी मातुश्री की पथगामिनी बन त्याग-तपस्या, धर्म-ध्यान में सेवाभाव मे आगे बढ रही है। आपके एक पुत्री स्वाति एव एक पुत्र पीयूष है ।

दूसरी पुत्री—स्व डॉ वीणा छाजेड, एम बी बी एस। एम डी फीजिशयन करते जोधपुर महात्मा गॉधी हॉस्पिटल मे रोगियो की सेवा करते-करते अपने प्राण त्याग दिये ओर जिनकी यादगार मे उनकी छोटी बहिन डॉ शशिकला छाजेड़,

एम ए (दर्शन), पीएच डी ने उन्हीं की प्रेरणा से यह मधु-घट सकलित कर पूजनीय मातुश्री धन्नी देवी के दूसरे वर्षीतप पर तैयार कर भेंट की है।

तृतीय पुत्री रत्न-श्रीमती चन्द्रकला, एम ए (लोक प्रशासन) धर्मपत्नी डॉ प्रदीप कुमार जी कटारिया एम बी बी एस, एम डी , टी बी एव चेस्ट विशेषज्ञ है। इनके एक पुत्री निष्ठा एव पुत्र विभोर कुमार है।

चतुर्थ पुत्री रत्न-डॉ शशिकला छाजेड, एम ए (दर्शन), पीएच डी है जिन्होने इस **मधु-घट** का सकलन-सपादन कर प्रथम सस्करण तैयार किया। वर्तमान मे आप हुक्मगच्छीय साधुमार्गी जैन सघ के नानेश-रामेश आचार्य श्री के धर्म सघ की बगिया को विदुषी महासतीवर्या प्रणत प्रज्ञा श्री जी के नाम से महका रही है।

अपनी बहिन डॉ वीणा छाजेड, एमबीबीएस को हॉस्पिटल में रोगियो की सेवा करते, दवाइयॉ देते, उन्हे भर्ती कर इलाज कराते देख इनकी भावना भी सेवा सुश्रुषा में लग गई। अपनी बहिन डॉ वीणा का दिनाक 21 अप्रेल 1996 को आकस्मिक देहावसान होने के बाद आपके मन मे किसी भी प्रकार की आसक्ति नहीं रही।

डॉ वीणा के स्वर्गवास के बाद आपने पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नानेश से सम्यक्त्व ग्रहण किया तब से सासारिक देवी-देवता के स्थान पर वीतराग देव पर अटूट आस्था जम गई। सुगुरु, सुदेव, सुधर्म पर दृढ श्रद्धा हो गई। आजीवन सामायिक, सत दर्शन एव स्वाध्याय आदि आपकी रुचि का

प्रमुख अग बन गये।

गगाशहर (बीकानेर) मे 21 दीक्षा (12 फरवरी 1992) के प्रसग पर आजीवन सजोडे शीलव्रत अगीकार किया। 17-18 वर्षो तक सावन भादवा एकान्तर तप किये। दो वर्षीतप किये, 15 तक की लड़ी की तपस्या में 2-3 कडी बाकी रह गई है। 17 की तपस्या भी आपने प्रथम बार मे सम्पन्न की। वैसे उपवास, बेले, तेले, पचोले आदि की तपस्या भी अनेक बार की है।

आपके धार्मिक सस्कारो का प्रभाव आपके सपूर्ण परिवार पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आपके संस्कारो से ही आपकी बड़ी लड़की श्रीमती राजू देवी त्याग-तपस्या और सेवाभावना, गरीबो की सेवा आदि मे निरन्तर आगे बढ रही है। सबसे छोटी लड़की डॉ शशिकला ने 28 जनवरी 2007 को हुक्मगच्छीय (नवम् पट्टधर) साधुमार्गी जैन सघ के नवम् पट्टधर आचार्यश्री रामेश से खिड़किया (म प्र) में दीक्षा ग्रहण कर विदुषी महासती प्रणतप्रज्ञा के नाम से नानेश-रामेश की बगिया को महका रही है।

आपकी "वीणा" के तार तार-तार हो जाने पर (पुत्री डॉ वीणा छाजेड के स्वर्गवास होने के बाद) आपने भी उस मनहूस दिन की उस घटना से जूझने के लिए मन मे कुछ और ही ठान ली तथा ससार नश्वर लगने लगा। दीक्षा लेने के लिए अपने पतिदेव को दीक्षा की आज्ञा प्रदान हेतु कहा। पतिदेव ने भी राह में रोड़ा न अटकाते हुए अगर कोई अपना कल्याण करता है तो क्यो रूकावट पैदा की जावे। ससार सागर से तो

गुण और दोष के उत्पन्न होने का कारण भाव ही है।

अपनी करणी पार उतरनी है तो फिर क्या सोचना। आज्ञा मिल गई। अपनी बच्चियों से जब दीक्षा लेने की भावना बताई। देखते ही देखते दिनाक 28 जनवरी 2007 को वह दिन आ गया और हसते-हसते सबने आपको दीक्षा की सहर्ष आज्ञा दे दी। और इसी दिन अपनी छोटी लड़की के साथ ही दीक्षा ग्रहण करली।

आपकी तपस्या, सेवाभाव, शासननिष्ठा, सघ एव सघपति/आचार्यश्री पर पूर्ण श्रद्धा विश्वास एव समर्पणा दिन प्रतिदिन बढती जावे एव निरोग रहकर शासन सेवा करते हुए सघ को ऊँचाइयों पर ले जाते हुए सयम मे दृढ से दृढतम बन सलेखना सथारा सहित पण्डित मरण को प्राप्त करे। यही हमारी अरिहत, सिद्ध भगवन्तो सुदेव, सुगुरु जिनशासन देव से यही प्रार्थना, मगलकामना एव अभीप्सा है।

–कमल बैद, मुम्बई एवं
डॉ प्रदीप कटारिया
एम बी बी एस , एम डी
चेस्ट एव टी बी विशेषज्ञ, भीलवाड़ा

तपस्विनी सेवाभाविनी

श्रीमती राजू देवी बैद

(गौरेगाव-मुम्बई)

आपका जन्म श्रेष्ठिवर्य श्रीयुत् सूरजमल जी छाजेड़ रासीसर (हाल गगाशहर-बीकानेर) निवासी की धर्मपत्नी धर्मशीला श्रीमती धन्नीदेवी छाजेड़ की रत्न कुक्षि से प्रथम पुत्री रत्न रूप में हुआ। आपका शैशवकाल ननिहाल दिनहटा (कूचविहार) मे नानाजी स्व श्री छगनमल जी साहेब (नेताजी) एव नानीजी श्रीमती सुरजादेवी जी की गोदी मे बड़े लाड़-प्यार से बीता। फिर कुछ दिन रासीसर में दादाजी श्रेष्ठिवर्य श्री मगलचद जी एव दादीजी श्रीमती पानीदेवी की गोदी मे एव रासीसर के आगन मे किलकारिया का गूजन गटर-गूं करना, हाथ पैर चलाना आदि सीखा। फिर कुछ दिनो बाद अपने ननिहाल दिनहटा चली गई। वहीं पर धार्मिक सस्कारो मे पली तथा प्रारम्भिक विद्याभ्यास किया। चचल एव फुर्तीली होने के कारण ननिहाल मे बागान के पेड़ो पर कब जा छुपती थी, पता ही नहीं चलता और वे लोग इधर-उधर ढूढते रहते। इतनी सुकोमल शरीर वाली लचीली होने के कारण सभी ने उसका नाम किशमिश रखा। प्राथमिक शिक्षा के दरम्यान ही आपके ननिहाल में साध्वीजी श्री सोहना श्री जी म सा का चातुर्मास हुआ। आप में धर्म की ऐसी लगन लगी कि नमस्कार मत्र, अर्हत् प्रार्थना, तिक्खुतो, सामायिक पाटियो का अभ्यास आदि करने

लगी। उसी के साथ तपस्या की भी लगन लग गई और मात्र 8 वर्ष की उम्र में प्रथम अठाई की तपश्चर्या की।

रासीसर छोडकर माता-पिता जब गगाशहर आये तो आपको भी गगाशहर ले आये और यहॉ शिक्षा प्रारम्भ हुई। हाई स्कूल करने के बाद ग्यारहवीं मे प्रवेश लिया। पढाई मे विशेष रुचि न होने के कारण स्कूल जाना बद कर दिया। परिवारजनो को तपस्या करते एव सामायिक धर्मध्यान करते देख आप भी धर्म-ध्यान मे मन लगाती।

आपका विवाह श्रेष्ठिवर्य तोलाराम जी साहेब बैद, गगाशहर के द्वितीय पुत्र श्री कमलचन्द जी बैद के साथ हुआ। आपकी किस्मत की सराहना करे या कर्मों की या फिर बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति सस्कारो की कि आपको ससुराल पक्ष भी धार्मिक सस्कारों से ओतप्रोत मिला। आपके ससुरजी देवता तुल्य तो सासुजी देवी से भी बढकर है। तपस्याओ और धार्मिक प्रवृत्तियों का तो आपके ससुराल में ऐसे ठाठ-बाट है कि लोग तो दूर सत-सतिया जी महाराज भी आपके परिवार की तपस्या की बड़ाई करते नहीं अघाते है। आश्चर्य होता है जब आपके बैद परिवार में एक ही चातुर्मास मे 8-10 मासखमण की तपस्या देख। सुगुरु, सुदेव, सुधर्म पर जिन्हे श्रद्धा भक्ति और समर्पणा है वहाँ सब कुछ सम्भव है। यह आपके परिवार ने सिद्ध कर बता दिया है। आपका सम्पूर्ण परिवार धार्मिक सस्कारो से ओत-प्रोत है।

सम्यक् दर्शन से आत्मा ही सम्यक्त्व है।

आपने इससे पहले भी 1 से लेकर 15 की तपस्या पूर्ण कर रखी है तथा एक मासखमण की तपस्या तथा सावन-भादवा एकान्तर तप कई सालो तक इसके साथ बेला, तेला तो चलता ही रहता है। प्रथम मासखमण की तपस्या में 21-22 की तपस्या तक तो किसी को पता ही नहीं लगने दिया कि तपस्या चल रही है। घर का पूरा काम करते हुए धर्मध्यान, तपस्याए की। 22-23वे दिन गगाशहर आई। धर्मध्यान का ठाठ लग गया। उधर आचार्य महाप्रज्ञ श्री जी का चातुर्मास तो इधर बैद परिवार मे मासखमणो की झडी लगा दी।

इस बार के मासखमण की तपस्या में सासुजी ने अपना स्वास्थ्य अनुकूल न चलते हुए भी वह सेवा बजाई कि दिन रात एक कर दिया। सेवा मे कोई कमी नहीं रखी। पूरे परिवार ने दिन रात सेवा की। इधर आपके पतिदेव कमलचन्द जी क्यो पीछे रहते, उन्होने भी अपनी तरफ से कोई कमी नहीं रखी। तन-मन-धन से किसी बात की कमी नहीं रहने दी।

आपने तपस्या मे लेन-देन को बढावा न देते हुए धर्मध्यान की ओर ज्यादा लगाव को महत्त्व दिया।

आपकी ससारपक्षीय मातुश्री श्री धन्नी देवी एव बहिन डॉ शशिकला छाजेड़, एम ए, पीएच डी ने गृहस्थी मे रहते हुए आपकी पूर्व की तपस्याओं मे पूर्ण सहयोग दिया। अब वे हुक्मगच्छीय साधुमार्गी जैन सघ के श्री श्री 1008 पूज्य आचार्य श्री रामेश के सानिध्य मे दिनाक 28 जनवरी 2007 को खिडकिया (म प्र) मे भागवती दीक्षा अगीकार ग्रहण कर

वतेमान में वे विदुषी महासती धन्य श्री जी म सा एव वि अभि महासती प्रणत प्रज्ञा श्री जी म सा के नाम से नानेश-रामेश की धर्म बगिया को महका रही है।

आपकी त्याग-तपस्या, धर्म-ध्यान, सेवा भाव, शासन निष्ठा उत्तरोत्तर दिन प्रतिदिन बढती जावे एव निरोग रहकर शासन सेवा करती रहे, यही सुदेव से मगल प्रार्थना एव अभीप्सा है।

–डॉ. प्रदीप–चन्द्रा कटारिया, भीलवाड़ा
एव महेन्द्र छाजेड, रासीसर

हार्दिक क्षमायाचना

जीवन पानी के बुलबुले के समान है। श्वास कब निकल जाये पता नहीं। इसलिए मै **सूरजमल छाजेड (रासीसर)** हाथ जोड़, मान मोड़ 4 गति 84 लाख जीव योनियों से क्षमाते हुए आगम रहस्यज्ञाता, व्यसन मुक्ति प्रणेता आचार्य भगवन् श्री श्री 1008 रामलाल जी म सा एव उनके आज्ञानुवर्ती सर्व सन्त मुनिराज एव सर्व विदुषी महासतियॉ जी म सा के पावन चरणो में शत्-शत् वन्दन बार खतमखामणा करते हुए चतुर्विध सघ एव समस्त प्राणियो से खमतखामणा करता हूँ। मेरी भूलो पीड़ाओ के लिए सहृदय क्षमा करे।

हिसा और परिग्रह का त्याग ही वस्तुत भाव प्रव्रज्या है।

सम्पादकीय

आगम-शास्त्रो मे सगीत 1 काव्य स्वर 2 विज्ञान के बारे मे व्यवस्थित सामग्री प्राप्त होती है। गायन के उत्पत्ति स्थल उसके आकार, गुण-दोष, वर्ण, भाषा, वर्ण तथा स्वर तान आदि पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है।

काव्य के चार प्रकार बताये गये है-1 गद्यकाव्य, 2 पद्यकाव्य, 3 कथ्य काव्य एव, 4 गेय-काव्य।

गद्य हो चाहे पद्य अथवा कथ्य हो या गेय सभी विधाओ मे की गई रचनाए वीतरागता की ओर अग्रसर करने वाली होनी चाहिए, यह जैन दर्शन का मूल उद्देश्य है। साधक की राग, राग के लिए नहीं वीतरागता के लिए हो। दर्शन- प्रभावना के लिए आगमानूकुल कविताओ की रचना करने का हमे निर्देश प्राप्त होता है। वह भी इसीलिए कि व्यक्ति वीतरागता की ओर बढे।

मुनि कपिल को केवलज्ञान होने के बाद वे राजगृही के घने जगलो मे विचरण करते हुए पधारे। जहा बलभद्र प्रमुख पाच सौ चोरो ने उन्हे घेर लिया। बलभद्र कपिल केवली से कहता है-क्या नाचना आता हे ? कपिल-हा। बलभद्र-नाचो। कपिल- हम नाच नहीं सकते यह हमारा कल्प नहीं हे। बलभद्र क्या गायन आता है ? कपिल-हॉ। बलभद्र-गाकर बताओ। कपिल केवली ने प्रतिबोध को योग्य समझ कर धुवक राग में गायन प्रारम्भ किया। कपिल केवली द्वारा तत्कालीन जन-भाषा प्राकृत मे दिया गया गये-उपदेश पाच सो चोरो के अतर को झकझोर गया। वे प्रतिबुद्ध हो अणगार बन गये तथा आत्म

जो दभी है, वह श्रमण नहीं हो सकता।

कल्याण कर सिद्ध बुद्ध हो गये।

गायन मे कितनी बडी शक्ति है। गायन अन्तर को स्पन्दित कर सोचने को विवश कर देता है। अचेतन भाषा मे सचेतन आत्मा को आन्दोलित करने की गजब की क्षमता हे।

1 ठाण अ 4 उ 4

2 ठाण अ 7 उ 1

3 ठाण अ 4 उ 4

4 जो उत्तराध्ययन के आठवे अध्ययन मे सकलित है।

जिस प्रकार इलेक्ट्रोमेगनेटिक तरगो की शक्ति से अतरिक्ष मे भेजे गये राकेट की उडान को धरती पर से ही नियत्रित कर सकते है। उनकी यात्रिक खराबी दूर कर सकते है। लेजर किरणो की शक्ति से मोटी लोहे की चद्दरो मे छेद कर सकते है, उसी प्रकार गायन, सगीत, छन्दो की निकली तरगो से आत्मा पर आच्छादित कर्म को क्षय किया जा सकता है, आत्मा को नियत्रित किया जा सकता है।

आत्म नियत्रण के महत् उद्देश्य से ही प्रस्तुत पुस्तक मे प्राचीन अर्वाचीन, ढाल सगीत एव कविताओ का आकलन किया गया है। आस्थाशील धार्मिक क्षेत्र मे जिन पद्यो का महिलाए एव पुरुष श्रद्धा से पठन-गायन करते है, उनका एक पुस्तक मे सकलन दुर्लभता से मिलता है। मेरी इच्छा हुई कि इन सभी पद्यो का एक पुस्तक के रूप में सकलन हो। इस इच्छा-पूर्ति हेतु विभिन्न पुस्तको का प्रतिलेखन किया। शुद्ध प्रतियों का अभाव सदा खटकता रहा, फिर भी अधिकतम शुद्ध प्रतियो के आधार पर जो सकलन तैयार किया उसकी निष्पति

असंयम मे निवृत्ति और सयम में प्रवृत्ति करनी चाहिए।

मधु-घट के रूप मे प्रस्तुत है।

अक्षय-तृतीया के शुभ अवसर पर प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन होने से अक्षय-तृतीया के महत्व पर प्रकाश डालने वाला आचार्य श्री नानेश का प्रवचन एव वर्षीतप की विधि पत्र भी नत्थी कर दिया गया है ताकि तपस्वी इससे लाभ उठा सके।

कविरत्न विद्वान श्री गौतम मुनि जी म सा की शिक्षा के क्षेत्र मे प्रदत्त प्रेरणाए मेरे सबल को अभिवर्धित करती रही है। उन्हीं के आशीर्वाद से सकलन, सपादन एव लेखन के क्षेत्र मे मै पाव रखने का साहस कर पाई हूँ।

विदुषी साध्वी वर्य श्री सबोधि श्री जी म सा का सकलन सहकार, विद्वद्वर्य श्री प्रशम मुनि जी म सा का सशोधन-सहकार तथा उत्साही कार्यकर्त्ता श्री कमलचन्द जी बैद का पुस्तक प्रकाशन सम्बन्धी दायित्व का कुशलता से निर्वहन सदा स्मृति-पटल पर रहेगा।

सभी ज्ञात अज्ञात सहयोगियो का हृदय से आभार व्यक्त करना मेरा नैतिक दायित्व हे जिससे मे विमुख नहीं हो सकती।

प्रस्तुत मधु घट से पाठक यत्किंचित् भी मधु-पान कर पाये तो मै अपने परिश्रम को सार्थक समझूगी। प्रमादजन्य त्रुटियॉ सदैव उपेक्षणीय रही हे ओर पाठको से यही अपेक्षा हे।

– डॉ. शशि छाजेड़, एम ए , पीएच डी
गंगाशहर (बीकानेर)

क्रोध को जीत लेने से क्षमाभाव जागृत होता है।

प्रकाशकीय

विघ्न हरण मगल करण, गुरु नाना-राम रो नाम।
भक्ति भाव श्रद्धा से सुमिरन करो, सूरज सरे सब काम॥

मधु घट का जब प्रथम सस्करण प्रकाशित हुआ तब सारा कार्य सकलन, सपादन डॉ शशिकला छाजेड, एम ए (हिन्दी) (दर्शन), पीएच डी द्वारा किया गया एव उनकी मातुश्री धन्नी देवी छाजेड़ के द्वितीय वर्षीतप के पारणे पर वितरित की गई। जब यह मधु घट धर्मप्रेमी एव तपस्या वालो के हाथ मे गई तो इसकी सामग्री से सभी लाभान्वित हुए। पुरानी ढाले, भजन आदि सहजता से जो नहीं मिल पाते, उन्हे सहज ही उपलब्ध हो गए। पुरानी ढालो/भजनो की राग बिना किसी वाद्ययत्र के गले से ही इतनी मधुर होती थी कि सुनने वाला एव गाने वाला तल्लीन हो जाता था तथा पुरानो मे वही राग जमी हुई थी। वैसे तो बहुत सारी किताबो में भजन, तान, चौबीसी आदि मिल जाती है लेकिन जो पुरानी थी वह कम मिल पाती थी। इस मधु घट मे काफी कुछ वह सामग्री मिली। श्रावक-श्राविकागण वर्षीतप तो करते लेकिन कब से प्रारम्भ करना, कब पारणा करना, वर्षीतप की तपस्या की कार्यप्रणाली क्या विधि होती है उसका ज्ञान नहीं था। इसमे वह सब दिया गया है। प्रथम सस्करण लगभग समाप्त हो गया। लम्बे समय से कई जगहो से इसकी माग आ रही थी। मुझे कई जगहो से मधु घट की माग के पत्र मिले।

द्वितीय सस्करण प्रकाशित करने हेतु कुछ सशोधन, परिवर्द्धित कर मधु घट मे कुछ ऐसी सामग्री ढाले, स्तवन, भजन दी जाए तो तपस्या के समय गाया जा सके तथा जिसकी राग

सरल व सुरीली हो। नवीन सस्करण मे सामायिक की पाटिया, पच्चक्खान लेने, पारने की विधि, पौषध व्रत लेने, पारने की विधि तथा आलोयणा को भी जोडा है।

जिन्होने प्रथम सस्करण मे सकलन सपादन किया वे तो 28 जनवरी 2007 को सासारिकता से अलग होकर दीक्षा लेकर वि अभि महासती प्रणतप्रज्ञा जी बन गये। अब नये रूप का जिम्मा प्रकाशक पर छोड़ गये। काफी कुछ सोच-विचार करने के बाद अब यह नये सशोधित सवर्धित सस्करण तैयार कर आपके सेवार्थ पेश की जा रही है। यह कहाँ तक उपयोगी एव तपस्या आदि के भजन, तान, लोवडी के लिए काम मे आने वाला होगा, आपके हाथो मे आने पर आप ही इसका निर्णय कर बता पायेगे।

यह पुस्तक प्रकाशित करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता एव सतोष का अनुभव हो रहा है। हम निवेदन करते है कि पाठकगण इस पुस्तक को नियमित पढे, स्वाध्याय करें ओर जीवन में उतारने का प्रयत्न करे, तब ही हम हमारा श्रम सार्थक समझेगे।

इसको तैयार कर नया रूप देने मे जिन्होने अपना अमूल्य समय दिया हे, उनका मे ऋणी एव आभारी हूँ तथा उनको अनेकानेक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होने इसे उपयोगी बनाने मे अथक परिश्रम कर इसे तैयार करने मे मेरी सहायता की, उनका तहेदिल से प्रशसा करता हूँ। वे प्रशसा के पात्र है। प्रमादजन्य एव भूलवश त्रुटिया सदैव उपेक्षणीय रही है, इसलिए पाठकगण इस भूल चूक के लिए मुझे क्षमा करे।

मंगलचन्द सूरजमल छाजेड़ (रासीसर)

चौपड़ा स्कूल के पास, नई लाईन (दक्षिण की तरफ) गगाशहर- (बीकानेर)

प्रवासी महावीर इन्टरप्राइजेज, द्वितीय तल, 4474 गली राजा पटनामल, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006

कृत कर्मो का फल भोगे विना छुटकारा नहीं हे।

विषय सूची

विषय *पृष्ठ सं*

भाग–1

भाग–2

भाग–3

भाग–4

धर्म में श्रद्धा होना परम दुर्लभ है।

बुद्धिमान ज्ञान प्राप्त कर नम्र हो जाता है।

गुरुजनों के अनुशासन से क्षुब्ध नहीं होना चाहिए।

धर्म का मूल विनय है, और मोक्ष उसका अन्तिम फल है।

***

कर्ज छोटा मत समझो—कर्ज, शत्रु, बीमारी।

तपस्या री मटकी

हो हो रे-म्हारी तपस्या री मटकी
ले लो रे - म्हारी तपस्या री मटकी
झेलो रे - म्हारी तपस्या री मटकी
तपसी माखन खा गया, बाकी रह्या लटकी ॥टेर॥

तपसी री सेवा करे देवी और देवता-2
वर्षीतप पूरा कर दिया देखता ही देखता-2
(तपस्या वाला बढ गया रे देखता ही देखता)
तप बिना आत्मा भव भव मे भटकी ॥

तपस्या सू कट जावे पाप काला काला-2
तपस्या सू बढ जावे पुण्य धोला-2
धन्य धन्य धन्नी बाई पाप धूल झटकी ॥

तपस्या सू सोयो आतम देव भट जागे-2
तपस्या सू तन से ओ रोग सब भागे-2
मधु सम मीठी तप गोली ले ओ गटकी ॥

अपने माता-पिता का मन से दिया हुआ
आशीर्वाद जन्म जन्मान्तर तक हमारी रक्षा करता है।

संगठन में शक्ति भारी, यक्ष राक्षस की शक्ति हारी।

अक्षय तृतीया
एक विवेचन
एवं
वर्षीतप करने की विधि

अक्षय तृतीया एवं वर्षीतप एक विवेचन

आचार्य श्री नानेश

भारतीय सस्कृति मे पर्वो का महत्वपूर्ण स्थान है। पर्व लौकिक हो अथवा लोकोत्तर प्राय उनके पीछे उसका इतिहास अवश्य होता है। वैदिक सस्कृति मे दशहरा, दीपावली, होली, सक्राति आदि मुख्य पर्व है। मुस्लिम लोग ईद को महत्व देते है। ईसाई समाज क्रिसमस डे को श्रद्धा की दृष्टि से देखता है। जैन साहित्य में तीर्थंकरो के पच कल्याण, पर्यूषण महापर्व, अक्षय तृतीया, पाक्षिक दिवस आदि पर्वो का वर्णन मिलता है। सभी पर्व यथास्थान अपना महत्त्व रखते है एव उन पर विवेचन भी किया जा सकता है। किन्तु सभी अन्य पर्वो की विवेचना नहीं करते हुए प्रासगिक पर्व **अक्षय तृतीया** के सदर्भ में ही विचार करना है।

अक्षय तृतीया का प्रसग प्रागेतिहासिक है। इसका चितन हमें सुदूर अतीत मे पहुचा देता है। सरलचेता युगलो का वह काल था। आजीविका के लिये उनको किसी तरह का व्यापारिक प्रपच नहीं करना पडता था। सग्रहवृत्ति का नामोनिशान भी नहीं था। आवश्यकताओ की पूर्ति देवाधिष्ठित कल्पवृक्षो से हो जाया करती थी। पर जब आवश्यकताओ से अधिक ग्रहण करने की अभिलाषाए व्याप्त होने लगी तो ऐसे समय मे कुछ व्यवस्थाए भी की गई जो **कुल** के नाम से प्राख्यात हुई। उस कुल के सचालनकर्त्ता **कुलकर** पद से अलकृत हुए। हकार, मकार और धिक्कार दण्ड विधि का

क्षमा दान ही महादान है, इससे बढकर कोई बडा दान नहीं।

प्रयोग हुआ। किन्तु फिर भी मानव पूर्णतया व्यवस्थित नहीं हो पाया था। ऐसी विकट परिस्थिति में एक महान् युग पुरुष ने कुलकर नाभि के यहाँ मरुदेवी माता की कुक्षि से जन्म लिया। वे किशोरावस्था से ही तत्कालीन प्राणियो की समस्याए दूर करने लगे। उनकी कार्यपद्धति से नाभिराय प्रसन्न हो गये और उन्होने समस्याओ के समाधान का सारा उत्तरदायित्व उस युग पुरुष के सशक्त कधो पर डाल दिया। वे युग पुरुष ओर कोई नहीं, इसी अवसर्पिणी काल के आदि तीर्थंकर ऋषभ थे जो आदि युग पुरुष के नाम से भी अभिहित है। पिता द्वारा दिये गये उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए आपने मानव को आजीविका के लिए असि, मसि एव कृषि का पाठ पढाया। पुरुषो के लिए 72 एव स्त्रियो के लिए 64 कलाओ का निर्देश दिया। कार्य क्षमता के अनुसार वर्णव्यवस्था की। इस प्रकार मानवो की समस्त समस्याओ को समाहित कर जनता को आध्यात्मिकता का शिक्षण देने तथा स्वय की आत्मा के ऊर्ध्वारोहण हेतु सम्पूर्ण व्यवस्थाए ज्येष्ठ पुत्र भरत को सौपते हुए निर्ग्रन्थ प्रव्रज्या ग्रहण कर आध्यात्मिक साधना में सलग्न हुए।

निर्ग्रन्थ प्रव्रज्या अगीकार करते समय प्रभु ने निर्जल षष्टम तप स्वीकार किया था। षष्टम तप की सपूर्ति पर भिक्षाचरी हेतु गृहस्थ के घर मे प्रवेश करने पर भी लाभान्तर कर्मोदय से निर्दोष भिक्षा का अभाव ही रहा। जनता जनार्दन की प्रभु में अटूट श्रद्धा थी पर निर्दोष भिक्षा विधि से अज्ञात होने पर लोग प्रभु को हाथी, घोड़े, हीरे, जवाहरात आदि विभिन्न

विना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।

अवधि एक वर्ष से अधिक हो गयी। ऐसा 'एक वर्ष जगाम' शब्दो से स्पष्ट होता है। इसी से मिलता जुलता दिगम्बर परम्पराओ के हरिवश पुराण में वर्णन मिलता है। उन दोनो ग्रन्थो का उल्लेख करते हुए जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग 2 मे लिखा गया है कि इन उल्लेखो से यह सिद्ध होता है कि प्रभु ऋषभदेव का प्रथम तप एक वर्ष से अधिक समय का रहा पर व्यवहार मे ऊपर के दिनो को गौण मानकर इसे वर्षीतप ही कहा गया है तथा जिस प्रकार 20 वर्ष से कुछ माह कम की आयु वाले के लिए पूछा जाय कि यह कितने वर्ष का है तो उसका उत्तर व्यवहार दृष्टि से यही आता है कि यह व्यक्ति 20 वर्ष का है एवं पाच माह का चातुर्मास होने पर भी व्यवहार मे उसे चातुर्मास (यानी चार मास) ही कहा जाता है। पचमास नहीं कहा जाता। उसी प्रकार व्यवहार नय से प्रभु ऋषभदेव का पारणा भी एक सवत्सर से वैशाख शुक्ला तृतीया को होने का आगम सम्मत है। आगम पाठ का अर्थ करते हुए नय एव निक्षेप का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। यदि नय और निक्षेप का ध्यान नहीं रखा जाये तो अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त यह तो प्राय सभी स्वीकार करते है कि प्रभु का पारणा जिस दिन हुआ वह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है। यथा -

श्री रतनलाल डोसी, सैलाना वाले इस विषय में लिखते है कि - इस अवसर्पिणी के आदि महाश्रमण श्री ऋषभदेव जी ने दीक्षा लेने के एक वर्ष के बाद पहली बार इक्षुरस का पान किया। बेले के तप के साथ चेत्र कृष्णा अष्टमी

तथा युग सवत्सर भी पाच तरह के प्रतिपादित किये गये है, यथा -

जुग सवच्छरे पच विहेपण्णत्ते तजहा-(1) चदे (2) चदे (3) अभिवडिढय (4) चदे (5) अभिवडिढय-स्था 5/3/20

इस तरह सवत्सर के अलग-अलग भेद बतलाये गये है। दो युग चन्द्र सवत्सर के पश्चात् एक युग अभिवर्द्धित सवत्सर आता है, जो 13 माह का होता है। चन्द्र सवत्सर की दृष्टि से वह 13 माह का होता है और अभिवर्द्धित सवत्सर की अपेक्षा से 12 माह का है। प्रभु का पारणा अक्षय तृतीया के दिन होने से लगभग 400 दिन का अर्थात् 13 माह एव 10 दिन का तप होता है। उसे ऐसे समझना चाहिये अभिवर्द्धित सवत्सर की अपेक्षा से 13 माह एव प्रधानेन व्यपदेशा भवन्ति न्याय से माह के ऊपर के दिनों को नगण्य मानकर प्रधान रूप से प्रभु का पारणा एक सवत्सर से होने का विधान किया गया है। कल्प किरणावली पत्र के उल्लेख से भी इसकी पुष्टि होती है। यथा शुद्धाहारमलभमानस्य एक वर्ष जगाम तदा च तस्मिन् कमणि क्षयाय उन्मुखे सति ततस्तेन भगवान् सावत्सरिक तप पारणक कृत्वान्।

— कल्प किरणावली पत्र 154 (6)

अर्थात् शुद्धाहार न मिलने के कारण प्रभु की तपश्चर्या का एक वर्ष व्यतीत हो गया। फिर उस अतराय कर्म के क्षयार्थ उन्मुख होने पर प्रभु ने सावत्सरिक तप का पारणा किया।

उक्त ग्रन्थ मे भगवान् को शुद्धाहार नहीं मिलने की

इन उदाहरणो से यह तो भलीभाति स्पष्ट हो जाता है कि भगवान का पारणा जिस दिन हुआ, वह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अब भी यदि कोई यही आग्रह करता रहे कि भगवान ने चैत्र वदी अष्टमी को दीक्षा ग्रहण की थी और सवत्सर चैत्र कृष्णा अष्टमी को ही पूर्ण होता है, अत भगवान का पारणा चैत्र कृष्णा अष्टमी को ही हुआ। किन्तु यह मानना युक्ति-सगत प्रतीत नहीं होता कल्पना मात्र ही हो सकता है। क्योंकि भगवान का पारणा जिस दिन हुआ था वह अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ था। यदि अष्टमी को पारणा होता तो वह दिन अक्षय तृतीया न होकर अक्षय अष्टमी के नाम से प्रसिद्ध होता, पर ऐसा कहीं पर भी उल्लेख उपलब्ध नहीं है। अत भगवान का पारणा अक्षय तृतीया को ही हुआ, ऐसा मानना आगम सम्मत ही है।

भगवान ऋषभदेव की तपस्या को लक्ष्य मे रखकर अनेक भव्य प्राणी भी अपनी क्षमतानुसार तप करते है। वे लगातार वर्ष भर अनशन तप करने में सक्षम नहीं होने से एकातर (एक दिन का अनशन एव एक दिन आहार) तप अवधि को दो वर्ष मे पूर्ण करते है, जिसे वर्षीतप कहा जाता है। वर्षीतप तो लगातार वर्ष भर अनशन करने से होता है। इसीलिए एकातर को वर्षीतप कहना असत्य है। इस प्रकार की प्ररूपणा सुन कई भद्रिक प्राणी भ्रमित हो जाते है कि इस तप को वर्षीतप कैसे कहा जाय ? किन्तु उन्हे भ्रमित नहीं होना चाहिए। क्योकि आगमो मे उपवास को चउत्थ व दो दिन के उपवास को षष्टम तप आदि से पुकारा गया है। चउत्थ भत्त

की दीक्षा ली थी, जिसका पारणा एक वर्ष बाद हुआ। प्रभु के पारणे से मनुष्यो और देवो में प्रसन्नता छा गयी। आकाश मे देव-दुदुभि बजने लगी। देवगण अहोदान-महादान का उच्चारण करने लगे। रत्नो की वृष्टि, पाच वर्ण के उत्तम पुष्पो की वृष्टि, मनधोदक की वृष्टि और दस्त्री की वृष्टि इस प्रकार पाच दिव्य प्रकट हुए। इस दान के कारण वह दिन **अक्षय तृतीया** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

-तीर्थंकर चरित्र, भाग 1, पेज 61

आचार्य श्री मन्नालाल जी स्मृति ग्रन्थ में लिखा गया है कि- जिस दिन भगवान् ने इक्षु रस का पान किया था, वह वैशाख शुक्ला तृतीया का दिन था। उस सुपात्र दान के पुण्य प्रभाव से आगे चलकर **अक्षय तृतीया** के नाम से वह प्रसिद्ध हुआ।

-आचार्य श्री मन्नालाल जी स्मृति ग्रन्थ पृ स 7

अक्षय तृतीया के विषय में श्री देवेन्द्र मुनि जी शास्त्री लिखते है कि-इस प्रकार भगवान् श्री ऋषभदेव को एक सवत्सर के पश्चात् भिक्षा प्राप्त हुई और सर्वप्रथम इक्षुरस का पान करने के कारण वे काश्यप नाम से भी विश्रुत हुए। इसी कल्पना सूत्र में श्री देवेन्द्रमुनि जी ने आगे विवेचन करते हुए प्राचीन ग्रन्थ महावीर चरिय का नामोल्लेख करते हुए अक्षय तृतीया के विषय में लिखा है कि प्रस्तुत अवसर्पिणी काल मे सर्वप्रथम वैशाख शुक्ला तृतीया को श्रेयास ने **इक्षु-रस** का दान किया। अत वह तृतीया **इक्षु-तृतीया** या अक्षय तृतीया के रूप मे प्रसिद्ध हुई। उस महान् दान से तिथि भी अक्षय हो गई।

एक पल का क्रोध जीवन को बिगाड सकता है।

निमित्त से किया जा सकता है। ऐसे अनेक उदाहरण विद्यमान है जिनका उल्लेख नहीं है फिर भी परम्परा से स्वीकार्य है। उदाहरण के तौर पर कुछ उल्लेख किये जा रहे है।

किसी श्रावक ने तेले से ऊपर अनशन तप किया हो। ऐसा स्पष्ट आगम मे उल्लेख नहीं मिलता तथापि तपश्चर्या व आध्यात्मिक साधना में सहायक होने से श्रावक वर्ग को इसका उपदेश भी दिया जाता है और प्रत्याख्यान भी करवाये जाते है।

इसके अतिरिक्त श्रावक के सामायिक का काल निर्धारण 48 मिनट आगम मे नहीं मिलता।

द्वितीया, पचमी एव एकादशी को महत्त्व देकर त्याग-तपस्या करने का विधान भी शास्त्रो मे दृष्टिगोचर नहीं होता।

प्रतिक्रमण में लोगस्स के ध्यान का विधान आगम मे है किन्तु कितने लोगस्स का ध्यान करना इसका विधान नहीं है। फिर भी इनकी परम्परा को मान्य किया जाता है। आगम से अतिरिक्त परम्परा से आगत आध्यात्मिक साधना में सहयोगी विधानो को स्वीकार नहीं करने पर यह तर्क उपस्थित हो सकता है कि तेले से अधिक निर्मल तपस्या करने वाला श्रावक आराधक होगा या विराधक ? साथ ही उसको उक्त प्रत्याख्यान कराने वाले महात्मा की क्या दशा होगी ? आदि।

उक्त तर्क के उत्तर में सभी को परम्परा का अवलम्बन लेना ही होगा। यही नहीं, प्राय सभी जैन सम्प्रदाय परम्परा के अवलम्बन से ही चलते है। परम्परा के आधार बिना उपदेश देना भी असभव ही होगा अत एकात रूप से आगम का नाम लेकर आत्म-शुद्धि के लिये किसी भी तिथि के निमित्त से की

का शाब्दिक भावार्थ चार समय के आहार का त्याग होता है। यदि यही व्याख्या की गयी तो आगम से विरोध आना स्वाभाविक है क्योकि आगम में उल्लेख आता है कि प्रथम प्रहर स्वाध्याय, दूसरे प्रहर ध्यान, तीसरे प्रहर भिक्षाचर्या एव चतुर्थ प्रहर पुन स्वाध्याय करना चाहिये। यथा -

पढम पोरिसिसज्झाय, बीय झाण झियाभई।
तइयाए भिक्खायरिय पुणो चउत्थीए सज्झाय॥

—उत्तराध्ययन समाचारी अध्ययन, गाथा 12

इस विधान में दिन के तीसरे प्रहर में एक बार आहार ग्रहण करने का निर्देश है। ऐसी स्थिति में चार समय के आहार का विच्छेद चार दिन में ही सभव हो सकता है। जब कि उपवास एक अहोरात्र का होता है। अत चउत्थ, षष्टम् आदि उपवासादि के अभिसज्ञक नाम है। अर्थात् यह रूढ या पारिभाषिक नाम है। इसी तरह चैत्र बदी अष्टमी को एकातर प्रारम्भ कर दो वर्ष की अवधि तक एकातर एव अन्यान्य नियमों का पालन करते हुए दो वर्ष के पश्चात् आने वाली अक्षय तृतीया को एकातर तप पूर्ण करना वर्षीतप कहलाता है। यह वर्षीतप उक्त तप का सज्ञावाचक रूढ नाम है जैसा कि आगमो मे तपस्या के रत्नावली, कनकावली आदि सज्ञावाचक नाम आते है।

यदि यह कहा जाय कि वर्षीतप के रूप में आगम में तप का उल्लेख नहीं है, इसीलिए जो आगम मे है उसे ही मान्य किया जा सकता है, विशुद्ध परम्परा को नहीं तो यह प्ररूपणा भी मिथ्या है। आगम मे तप का वर्णन आता है। वह किसी भी

है, मगलपाठ सुना दीजिये। उसके निवेदन पर सत उसे मगल पाठ श्रवण कराते है। मंगल पाठ श्रवण कराने मात्र से सन्तो ने उसको अठाई या मासखमण का पारणा करवाया कहा जायेगा ? नहीं, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। यदि ऐसा कहा जाय तो सभी सन्त तपस्या का पारणा कराने वाले सिद्ध होगे, क्योकि ऐसे प्रसगो पर मगल पाठ सभी सुनाते है। ठीक इसी तरह अक्षय तृतीया के प्रसग पर वर्षीतप के तपस्वी, सन्तो से मगल पाठ श्रवण करते है। सतो का मगल पाठ श्रवण कराने के अतिरिक्त और कोई सम्बन्ध नहीं रहता, अत वर्षीतप का पारणा सन्त कराते है, यह कथन करना अज्ञानता का ही प्रतीक हे। हॉ, यदि सन्त निमत्रण देकर बुलवाते हो, उनके आवास-निवास आदि रखते हो, उसमे भाग लेते हो, सामने खडे रहकर पारणा करवाते हो तो यह सर्वथा गलत है। सन्तो को इस प्रपच में नहीं पड़ना चाहिये। उन्हे तटस्थता के साथ आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण का पथ प्रदर्शन करते रहना चाहिए।

प्रभु ऋषभदेव का पारणा अक्षय तृतीया को हुआ, ऐसा स्थानकवासी सम्प्रदाय 18-19 वर्ष से ही मानता हो, यह कहना भी योग्य नहीं है। ऊपर जो श्री देवेन्द्र मुनि द्वारा सम्पादित कल्प सूत्र का उल्लेख किया गया हे वह 1968 मे प्रकाशित हुआ है। उसे प्रकाशित हुए भी लगभग 28 वर्ष हो गए है। ऐसी स्थिति मे यह कहना कि स्थानकवासी परम्परा मे 18-19 वर्ष से ही यह मान्यता प्रचलित हे, नितात असत्य हे। 32 आगमो के अनुवादक आचार्य पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी म सा ने भी अपनी अक्षय-तृतीया नामक पुस्तक में वर्षीतप का

मन से प्रभु के चरणो के समीप रहना ही सच्चा उपवास है।

जाने वाली तपस्या का निषेध करना आत्म-शुद्धि मे बाधक बनना है। तथा प्रकारान्तर से आगम-प्ररूपित द्वादश विध तपस्या का विरोध करना है।

उक्त आगम सम्मत युक्तियो एव परम्पराओ के कथन से हस्तामलक की तरह अक्षय तृतीया को प्रभु ऋषभदेव का पारणा होना एव उस निमित्त से तपस्या करना आगम सम्मत सिद्ध हो जाता है। अक्षय तृतीया या वर्षीतप की प्ररूपणा किसी एक सम्प्रदाय विशेष ने ही प्रारम्भ की हो, ऐसा नहीं है। इसका समाधान पूर्व पक्तियो में हो चुका है। कभी-कभी यह चर्चा भी चलती है कि सतो को पारणा चाहिये या तपस्या का प्रत्याख्यान करवाना चाहिये ?

उक्त चर्चा का मुख्य कारण विवेक बुद्धि का अभाव अथवा नासमझी ही है क्योकि सत किसी भी श्रावक को पारणा नहीं करवा सकते, यह उनकी मर्यादा है। इस मर्यादा का जिनको ध्यान है तथा जिन्हे सतो पर श्रद्धा है वे कभी भी इस प्रकार की चर्चा नहीं कर सकते। पर जिनको साधु मर्यादाओ का पूर्ण विवेक नहीं है, ऐसे व्यक्ति सुनी-सुनायी बातो को लेकर भ्रमित हो जाते है। जैसे कहीं से उन्होने सुन लिया कि अक्षय तृतीया पर सत वर्षीतप का पारणा करवाते है, आदि। इस बात का श्रवण कर अनभिज्ञ अथवा अविवेकी व्यक्ति सोच बैठता है, किधर ! सत पारणा करवाते है। परन्तु यह वस्तुस्थिति नहीं है। वस्तुस्थिति यह है कि जैसे अठाई अथवा मासखमण की तपस्या वाला तपस्वी पारणे के दिन सतो की सेवा मे पहुच कर उनसे निवेदन करे कि महाराज सा ! आज मुझे पारणा करना

बाधाओ को पार करने के लिए सावधानी रखा जाना ही बुद्धिमानी है। ठीक इसी तरह ईख के छिलके आदि डालने मे विवेक की आवश्यकता है।

किसी स्थान विशेष पर कभी अविवेक हो जाय, उसे लेकर तपस्या मे बाधक बनना अन्तराय कर्म बन्ध का ही प्रसग उपस्थित करना है। जैसे सन्त दर्शन हेतु आने वाली गमनागमन सम्बन्धी आरम्भ जनक क्रिया से सन्तदर्शन आरम्भ जनक एव हिंसा युक्त नहीं होता ? वैसे ही आत्म शुद्धि के लिए की जाने वाली तपश्चर्या के निमित्त सामान्य आरम्भ-समारम्भ होने मात्र से वह तपस्या आरम्भकारी अथवा ससार बढाने वाली नहीं कही जा सकती है।

पवित्र धार्मिक क्रियाओ के निमित्त से होने वाले आरम्भ-समारम्भ से धार्मिक क्रिया अपवित्र नहीं होती। यदि निमित्त मात्र से पवित्र क्रिया ससार वृद्धि की मानी गयी तो तीर्थकरो के दर्शन आदि को भी ससार वृद्धि के कारणभूत मानने का प्रसग आयेगा, जो कि आगम के विरुद्ध है। क्योकि प्रभु के समवसरण मे असख्य योजनो से देवगण आते है। उनके गमनागमन की क्रिया से प्रभु दर्शन को दोष पूर्ण कैसे माना जा सकता है ?

गमनागमन आदि निमित्त से होने वाली हिसा हिसारूप है तथा सन्त दर्शन एव आत्म-शुद्धि हेतु की जाने वाली तपस्या आदि धार्मिक क्रियाए पवित्र होने से निर्जरा की कारणभूत है। अत· आत्म-शुद्धि के लिये की जाने वाली धार्मिक क्रियाओ को सावद्य कहना शास्त्र सम्मत नहीं है।

सूर्य की तरह परोपकार करो किन्तु अभिमान मत करो।

विस्तृत विवेचन किया है। अत अक्षय तृतीया के पारणे की मान्यता स्थानकवासी समाज मे 8-10 वर्षो से ही नहीं, अपितु काफी पुरातन है।

अक्षय तृतीया पर पारणा कराने में आरम्भ होता है अथवा कभी यह भी तर्क दिये जाते है कि ईख का रस निकाला जाता है उसके छिलके इधर-उधर डाल देने से हजारो चिटियो की हिसा होती है, आदि। किन्तु ऐसा तर्क उपस्थित करने वाले महानुभावों को तर्क उपस्थित करने से पूर्व चितन अवश्य कर लेना चाहिए। गृहस्थ के सम्पूर्ण आरम्भ समारम्भ का त्याग नहीं होता उसके आरम्भ सम्भारभ की क्रिया चालू रहती है। अक्षय तृतीया के अतिरिक्त समय मे भी गृहस्थ ईख का एव अन्य हरी वनस्पति आदि का आरम्भ करता है। ईख आरम्भ अक्षय तृतीया पर ही करता हो, यह अनुभव से युक्ति सगत नहीं लगता। चिटियो की हिसा का जहॉ तक प्रश्न है, वह अविवेक के कारण ही सम्भव हो सकती है। अविवेक के कारण गृह में बिना ढक्कन के रखे हुए घृत आदि में भी चिटिया, मक्खिया आदि गिरकर मर जाती है। उतने मात्र से क्या घर मे घृत आदि रखना छोड़ा जा सकता है ? न तो गृहस्थ ही घृत आदि रखना छोड सकते है और न सन्त वर्ग भी घृत आदि ग्रहण करना छोडते है। किसान खेती करता है। कभी अन्य पशु आकर फसल का कुछ हिस्सा खा जाता है। इतने मात्र से क्या किसान खेती करना छोड देता है ? भिखारी के डर से क्या रोटी बनाना छोड सकता है ? नहीं, ऐसा नहीं किया जा सकता। इन

जाना मात्र आडम्बर है। कदाचित् कोई अधिक सख्या में दर्शनार्थ उपस्थित होने मात्र से ही सन्तो की आडम्बरी मानने का मापदण्ड रखते है तो उनके इस मापदण्ड के अनुसार भगवान महावीर एव अन्य सभी तीर्थकर आडम्बरी कहे जायेगे। किन्तु इस प्रकार कहना उत्सूत्र प्ररूपणा की कोटि मे आ सकता है।

दर्शनार्थ उपस्थित होने वाले व्यक्ति अक्षय तृतीया के अतिरिक्त समय भी दर्शनार्थ उपस्थित होते है। अत अक्षय तृतीया पर सन्तों के पास भीड इकट्ठी होती है इसलिए वर्षीतप करना ठीक नहीं है। ऐसा यदि कोई कहता है तो यह भी युक्ति-सगत प्रतीत नही होता। पर्युषण पर्वाराधन के समय एव दीक्षाओ के प्रसंग से अथवा महावीर जयति आदि के अवसर पर भी श्रोताओ की सख्या अधिक हो जाती है तो क्या पर्यूषण पर्व मनाना एव दीक्षा देना बन्द किया जा सकता है।

सन्तगण अक्षय तृतीया पर अमुक क्षेत्र मे विराजने की स्वीकृति देते है इसीलिए दर्शनार्थियो से सबधित हिसा के सन्तजन भी भागीदार होते है, ऐसा सोचना सर्वथा अनुचित है। क्योकि अमुक क्षेत्र में पहुचने की अथवा विराजने की स्वीकृति देना आगम विरूद्ध नहीं है। चित्त श्रावक की विनती एव आग्रह से केशीकुमार श्रमण ने भी स्वीकृति प्रदान की थी।

चित्त श्रावक ने अपनी नगरी का वर्णन करते हुए दो तीन बार श्वेताविका (श्वेताम्बिका) नगरी पधारने की विनती की पर श्री केशीकुमार श्रमण ने उसकी विनती पर विशेष ध्यान नहीं दिया पर जब चित्त श्रावक ने पुन पुन पधारने का आग्रह

उक्त कथन का तात्पर्य यह नही है कि श्रावक आरम्भ एव अविवेक युक्त कार्य करे। श्रावक को प्रत्येक कार्य मे अनासक्त भाव के साथ-साथ विवेक और यतना का ध्यान तो रखना ही चाहिये। यहॉ जो विवेचन किया गया है वह केवल वस्तु तत्त्व को स्पष्ट करने के उद्देश्य से ही किया गया है।

कभी अनभिज्ञ मानस यह भी कह बैठता है कि सन्त आडम्बर करवाते है। किन्तु उन्हे यह ज्ञात नहीं है कि आडम्बर की परिभाषा क्या होती है ? यदि अनुभवी एव चिकित्सा पद्धति के मर्मज्ञ डॉक्टर के पास अधिक मात्रा मे अस्वस्थ व्यक्ति पहुचते है तो क्या वह डॉक्टर आडम्बरी हो गया। नहीं, ऐसा मानना नासमझी ही होगी। उसी प्रकार आध्यात्मिक जगत के अनुभवी, मोक्ष रूपी स्वस्थता का भान कराने वाले सन्तो की सेवा मे जन्म-जरा-मृत्यु रूप रोग से ग्रस्त प्राणी आध्यात्मिक स्वस्थता प्राप्त करने की भावना से अधिक सख्या में पहुच जाय तो वे आध्यात्मिक जगत के अनुभवी सन्त आडम्बरी है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। यदि अज्ञानतावश कोई ऐसी प्ररूपणा करते हो तो उन्हें ध्यान रखना चाहिये कि प्रकारान्तर से वे तीर्थकरो की अवेहलना-आशातना कर रहे है। क्योकि तीर्थकरो के समवसरण मे भी जन्म-जरा-मृत्यु रूप रोग से आक्रान्त अनेक भव्य प्राणी वर्तमान से भी अधिक सख्या मे जन्म-जरा-मृत्यु से छुटकारा पाने हेतु उपस्थित होते थे। इतना ही नहीं, जब राजा महाराजा दर्शनार्थ उपस्थित होते तो चतुरगी सेना (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल) सहित पहुचते थे। अत यह नहीं मानना चाहिए कि अधिक सख्या मे उपस्थित हो

तो वर्तमान में वीतराग प्रभु की विशुद्ध परम्परा के प्रतिकूल इन्द्रियों के पोषण करने वाली अनेक प्रवृत्तियाँ चल पड़ी है। प्रवृत्तियो में वे तपस्वी आत्माए, उनकी सताने एव अन्य पारिवारिक जन भी सम्मिलित हो सकते है। वहाँ वीतराग देव के सस्कार मिलने तो दूर रहे अपितु पाँचो इन्द्रियो के आकर्षित करने वाले ऐसे सस्कार पड सकते है जिससे वे निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के मूल रूप को भूलकर ससार अभिवर्द्धन के मार्ग को ही मोक्ष-मार्ग समझकर ससार परिभ्रमण की स्थिति बना सकते है। ऐसा होना सुज्ञ श्रावक वर्ग उपयुक्त नही समझते। इत्यादि कई कारणो को मस्तिष्क में रखकर विवेकी श्रावक वर्ग जहाँ भी निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के पवित्र सस्कार मिलने का प्रसग होता है वहाँ पहुच जाते है। इसीलिए पारणा कहाँ करना अथवा कहाँ नहीं करना, यह उन्हीं श्रावको पर निर्भर है।

अत उपयुक्त समस्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्षीतप आगम के विरूद्ध नहीं है। आत्म-शुद्धि हेतु अन्यान्य तपो की तरह वर्षीतप भी किया जा सकता है। वर्षीतप केवल एकातर तप ही नहीं है। वर्षीतप करने वालो को निम्नलिखित नियमो का भी पालन करना होता है। यथा -

1 ऋषभदेवाय नम मत्र का रोजाना 2160 बार जाप करना, अर्थात् 20 माला फेरना।
2 उभय काल प्रतिक्रमण करना एव 12 लोगस्स का ध्यान करना।
3 सस्तारक पर शयन करना। खाट, पलग आदि का उपयोग नहीं करना।

चाहे जो मजबूरी हो, सामायिक स्वाध्याय जरूरी हो।

किया तब केशीकुमार श्रमण ने कहा–तुम्हारी श्वेताविका (श्वेताम्बिका) नगरी मे प्रदेशी नाम का राजा है। वह अधार्मिक है, यावत् श्रमण-माहणो का वह सम्यक् प्रकार से सम्मान नहीं करता इसलिए हे चित्त ! मै तुम्हारी उस नगरी मे कैसे आ सकता हूँ ? इस पर चित्त श्रावक ने निवेदन किया, भगवन ! आपको प्रदेशी राजा से क्या करना है। श्वेताविका नगरी में अन्य भी बहुत से सेठ साहूकार, तलदर, सार्थवाह आदि रहते है। वे सब आपका सम्मान करेगे। वन्दन नमस्कार करेगे, यथावत् आपकी पर्युपासना करेंगे। आपको विपुल अश्न-पान-खादिम-स्वादिम् बहराकर प्रतिलाभित होगे। पीठ फलक, शय्या सस्तारक आदि प्रतिहारी वस्तुए भी वे आपको देगे। अत आप श्वेताबिका नगरी अवश्य पधारे। इस प्रकार चित्त श्रावक का आग्रह देख केशीकुमार श्रमण ने स्पष्ट रूप से कहा आवियाइचित ! समोसरिस्सामो (रायपसेणइय सुत्त) अर्थात् हे चित ! यदि ऐसी बात है तो मै श्वेताविका नगरी पहुचूगा। चित श्रावक एव केशीकुमार श्रमण सम्बन्धी मूल पाठ इस प्रकार है -

सेयवियानयरी समोसरहण भन्ते सेयविय नयारे। तएण से केसीकुमार समणे चितेण सारहिणा एव कुत्ते समाणे चितरस सारहिरस एयमट्ठ तो नो आढाइ नो परिजाणाई, तुसिणीय सचिट्ठई। ताएण से चित्त सारहि केसीकुमार समण दोच्च पितच्चपि एव वयासी एव खलु अह भते ! जियसत्तुणा रन्ना पएसिरस रन्नोइम महत्थ जाव विसज्जिए त चेव जाव समोसरहरण भते ! तुब्भे सेयविय नयरि। तएण केसीकुमार समणे चित्तेण सारहिणा दोच्च पितच्च पि एव कुत्ते समाणे चित्त

अक्षय-तृतीया

(तर्ज प्यार करो ऋतु प्यार की आई)

अक्षय तृतीया अक्षय रूप से, रिमझिम करती आई है।
आदिनाथ श्रेयास कवर की, देखो याद दिलाई है॥
ऋषभा ऽऽऽ ऋषभा ऽऽऽ ऋषभा ऽऽऽ ऋषभा ऽऽऽ॥टेर॥
घूम रहे थे बहुत काल से, प्रभु जी भिक्षा पाने को।
कर्मो का कुछ योग बना जो, मिला न कुछ भी खाने को॥
द्वार द्वार पर हीरे पन्ने, धामे लोग लुगाई है॥ ऋषभा
हाथी घोडे वसन और कुछ, रूप षोडशा लाते है।
देख देख कर पुन लौटते, ये क्या प्रभुजी चाहते है॥
धर्म-देव की पुष्प सुकोमल, काया हा ! मुर्झाई है॥ ऋषभा
कल्प वृक्ष मुर्झाया उसका सिचन कर हर्षाया हे।
राजकुमार श्रेयास सौभागी, सपना यह आया है॥
इधर प्रभु को देख हृदय की क्ली-क्ली विकसाई है॥ ऋषभा

तर्ज दिल के अरमा

हे प्रभु ! कुछ दान मुझसे लीजिए।
कर कृपा उत्थान मुझका कीजिए॥ टेर॥
है सरस रस मधुर इक्षु का यहाँ।
दास पर कुछ तो अनुग्रह कीजिए॥
देखकर चहुँ ओर प्रभु ने ज्ञान से।
कर बढा श्रेयास से कहा दीजिए॥

जिधर होगा गुरु का ईशारा, उधर बढ़ेगा कदम हमारा॥

4 सचित्त पदार्थो का त्याग करना। अचित्त की मर्यादा करना।

5 सत-सती विराजते हो तो रोजाना दर्शन करना।

6 नियमित रूप से व्याख्यान श्रवण करना अथवा शास्त्र या सत्साहित्य का स्वाध्याय करना।

7 पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना।

8 यथाशक्ति नवीन ज्ञानोपार्जन के साथ पुराने ज्ञान की परिभरण करना।

9 सुपात्र दान, अनुकम्पा दान आदि शुभ अनुष्ठान करना।

10 कषायो का शमन करना तथा विनय एव समभाव की आराधना करना।

11 प्रत्येक कार्य विवेक और यत्न पूर्वक सम्पन्न करना।

12 पारणे के दिन रस लोलुपता के त्याग पूर्वक सादा एव सात्विक आहार मौन पूर्वक करना, झूठा नहीं डालना।

वर्षीतप करने की विधि :-

चैत्र कृष्णा अष्टमी से बेला करके वर्षीतप प्रारम्भ कर दूसरी अक्षय तृतीया तक 760 दिनो मे 360 दिन पारणे के एव 400 दिन उपवास के इस तरह वर्षीतप पूर्ण होता है।

तीन चौमासी पक्खी, चतुर्दशी एव पक्खी को तथा बीच की अक्षय तृतीया को पारणा आने पर भी बेले का तप करना चाहिए।

25 एव 26 अप्रेल 1982
नवरगपुरा उपाश्रय, अहमदाबाद

आदिनाथ आदेश्वर म्हारे आंगण आया रे

(तर्ज म्हारे घणा मोल से माणकियो)

ऐ तो आदिनाथ आदेश्वर म्हारे आगण आया रे।
मै तो प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव रा मगल गाया रे।।टेर।।

धर्म कर्म रो मर्म बतायो जन्म मरण री लाय।
स्नेह पाश भयकरा रे जाणिया श्री जिनराय रे।।
विवेक जगायो रे।।1।।

भरत बाहुबल ब्राह्मी सुदर मरुदेवी जो माय।
गद्गद् बोले जनता डोले पूरी अयोध्या माय रे।।
सब छोड ने चाल्या रे।।2।।

ग्राम नगर में भिक्षा लेवा जावे घर घर माय।
अन्न पाणी तो कोय न देवे समझे नही मन माय रे।।
बाबा क्यू आया रे।।3।।

हाथी लावे घोड़ा लावे लावे रथ सिणगार।
कोई कहे कन्या परणो मारी आभूषण तैयार रे।।
रतना सू जड़िया रे।।4।।

विचरत विचरत प्रभुजी आया हथिणापुर रे माय।
अतराय तो छींको वालो टूट गयो तप माय रे।।
एक वर्ष बिताया रे।।5।।

श्रेयास कुवर कहे करो पारणा घड़ा एक सौ आठ।
दान दियो है उलट भाव सू मुनि अगर घय घाटरे।।
अक्षय तीज कहाया रे।।6।।

दे उलट भावों से रस श्रेयास ने।
विनय से अर्जी करी प्रभु पीजिए॥

तर्ज चालू

सबसे पहला दान हुआ, श्रेयास कवर के हाथो से
नगरी भर में खुशिया छाई, दान-दानी की बातो से
देव देवियो ने मिलकर, अहो-दान की भेरी बजाई है॥ ऋषभा
एक लाख पूरब तक प्रभु ने, आर्हत धर्म का प्रचार किया
सघ चतुर्विध स्थापित करके, भव्यो का उद्धार किया
आदिनाथ के स्वागत को 'गौतम' ने आख बिछाई है॥ ऋषभा

आश के दीपक

हे मेरे आश के दीपक
मेरे अन्तर मन के स्याह अधेरे को
निर्मल मन की चान्दनी से भर दे।
हे मेरे आश के दीपक
मेरे अन्तर मन की अतृप्त इच्छाओ को
पावन मन की शान्ति से भर दे।
हे मेरे आश के दीपक
मेरे अन्तर मन पर रीते असह मवाद को
अमर अमृत-औषधि से भर दे।
हे मेरे आश के दीपक
मेरे अन्तर मन में धधकती ज्वाला को
पवित्र नीर की धार से भर दे।

—कमल बैद 'पीयूष'

म्हारी रस सेलड़ी

म्हारी रस सेलड़ी, आदि जिनेश्वर कियो पारणो॥ टेर॥
सुपनो आयो सुन्दरी सरे जहाज आई घर बहार।
भारी वस्त्र पेरिया सरे जाग्या श्रेयास कुमार ॥
घड़ा एक सौ आठ सेलडी रस भरिया है नीका।
उलट भाव से दान दिया है माड लियो छे बूका॥
देव दुन्दुभी बाज रही सरे सोनैया की बरखा।
बारा मास मे कियो पारणो, गई भूख ने तिरसा॥
रिद्ध सिद्ध और मनोकामना, घर घर मगलाचार।
दुनिया हर्ष बधावना सरे कोई आखातीज तिवार॥
हाथ जोड़ ने करु विनती सारो म्हारा काज।
अरजी म्हारी मान लो सरे रिखबदेव महाराज॥

सब पर्वों का ताज संवत्सरी

सब पर्वो का ताज, पुण्य दिन आज,
सवत्सरी आई सबलो हर्ष मनाई॥टेर॥
चौरासी लाख जीव योनि से, जो वैर किया मन-वचन-तन से।
भूलो वह और लो, मैत्री भाव वधाई॥आज सवत्सरी आई ॥1॥
जो जान-बूझकर पाप किया, या अनजाने अतिचार हुवा।
लो दण्ड और दो, मिच्छामि दुक्कड भाई ॥आज सवत्सरी आई ॥2॥
अरिहन्त सिद्ध आचार्यश्री, उपाध्याय मुनि महासतियाजी,
श्रावक-श्राविका इन सबसे लो खमाई॥आज सवत्सरी आई ॥3॥
जो क्षमता और शुद्धि करता, वह प्राणी आराधक बनता।
आराधक की गति होती है सुखदायी॥आज सवत्सरी आई ॥4॥
यह पर्व नित्य नहीं आता है, पाले वो मुक्ति पाता है।
केवल कहते पारस अपना नरमाई॥ आज सवत्सरी आई ॥5॥

सगठन में शक्ति भारी, यक्ष राक्षस की शक्ति हारी।

बोल बोल आदीश्वर व्हाला

बोल बोल आदीश्वर व्हाला, काई थारी मरजी रे।
कि म्हासू मूडे बोल ।।टेर।।

मा मोरा देवी बाट जोवती, इतरे बधाई आई रे।
आज ऋषभ उतरिया बाग में सुण हरखाई रे।। कि ।।

नहाय धोय ने गज असवारी, करी मोरा देवी माता रे।
जाय बाग मे नन्दन निरख्यो, पाई साता रे।। कि ।।

राज छोड़ ने निकल्यो रिखवो, आ लीला अद्‌भूती रे।
चवर छत्र ले और सिहासन, मोहन मूरती रे।। कि ।।

दिन भर बैठी बाट जोवती, कद म्हारो रिखवो आवे रे।
कहती भरत ने आदिनाथ की, खबरा लावे रे।। कि ।।

किस्या देश मे गयो बालेश्वर, तुझ बिन वनीता सूनी रे।
बात कहो दिल खोल लालजी, क्यो बणिया थे मुनी रे।। कि ।।

रह्या मजे मे हुई सुख साता, खूब किया दिल चाया रे।
अब तो बोल आदीश्वर व्हाला, कलपे काया रे।। कि ।।

खैर हुई सो हो गई व्हाला, बात भली नहीं कीनी रे।
गया पछै कागद नहीं दीनो, म्हारी खबरा नहीं लीनी रे।। कि ।।

ओलम्भा मै देऊ कठे तक, पाछो क्यो नहीं बोले रे।
दु ख जननी को देख आदीश्वर, हिवडो डोले रे।। कि ।।

अनित्य भावना भाई रे माता, निज आतम ने तारी रे।
केवल पामी ने मोक्ष सिधाया, ज्याने वन्दना म्हारी रे।। कि ।।

मुक्ति का दरवाजा खोल्या, मोरा देवी माता रे।
काल असख्याता रह्या उघाडा, जम्बू जड गया ताला रे।। कि ।।

साल बहोत्तर तीर्थ ओसिया, गयवर प्रभु गुण गाया रे।
सूरती मोहनी प्रथम जिनद की, प्रणमू पाया रे।। कि ।।

दु ख मुक्त रहना चाहते हो तो स्वय को सदा व्यस्त रखो।

सामायिक सूत्र
प्रत्याख्यान सूत्र
एवं
आनुपूर्वी

4. तस्स उत्तरी का पाठ

तस्स उत्तारीकरणेण, पायच्छित्ताकरणेण, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माण निग्ध यणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग। अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि, एवमाइएहिं आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सगो, जाव अरिहंताण, भगवंताण, णमुक्कारेण, न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि।

5 लोगस्स का पाठ

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली।।1।।

उसभमजिय च वंदे, संभवमभिण दणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च च्रंदप्पह वदे।।2।।

सुविहि च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्म संति च वंदामि।।3।।

कुथु अर च मल्लिं वंदे, मुणिसुव्वयं नमि जिण च।
वदामि रिट्ठनेमि, पास तह वद्धमाण च।।4।।

एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीण जरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु।।5।।

कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तम दिंतु।।6।।

समस्त प्राणी सुखपूर्वक जीना चाहते हैं। मरना कोई नही चाहता।

।। श्री वीतरागाय नम ।।

सामायिक सूत्र

1- नमस्कार सूत्र

णमो अरिहताण। णमो सिद्धाण। णमो आयरियाण।
णमो उवज्झायाण। णमो लोए सव्वसाहूणं।
एसो पच णमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगल।।1।।

2 गुरु वन्दना- तिक्खुत्तो का पाठ

तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं (करेमि) वंदामि णमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मगल देवय चेइयं पज्जुवासामि * मत्थएण वन्दामि।

3 इरियावहियं (इच्छाकारेण) का पाठ

इच्छाकारेण सदिसह भगवं ! इरियावहिय पडिक्कामामि, इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउ इरियावहियाए विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कणमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा सकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, सघाइया सघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाण सकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

मूर्च्छा को ही वस्तुत. परिग्रह कहा है।

सामाइयस्स अणवट्टियस्स करणया, तस्स मिच्छा मि दुक्कड।

सामाइय सम्म काएण, न फासिय, न पालिय, न तीरिय, न किट्टिय, न सोहियं, न आराहियं, आणाए अणुपालिय न भवइ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सामायिक के बत्तीस दोष

मन के दस दोष

अविवेग जसोकित्ती लाभत्थी गव्व भय नियाणत्थी । ससय रोस अविणउ अबहुमाणा ए दोसा भणियव्वा।।कुवयण सहसाकारे, सच्छंद संखोव कलह च। विगहा वि हासोऽसुद्ध, णिरवेक्खो मुणमुणा दोसा दस ।।१

काया के 12 दोष

कुआसणं चलासणं चलदिट्ठी।
सावज्जकिरिया-लबणा कुंचण पसारण।
आलस्स मोडण मल विमासण।
निद्दा वेयावच्च त्ति बारस काय दोसा।।

सामायिक लेने की विधि

सर्वप्रथम स्थान, आसन, पूजणी, मुखवस्त्रिका आदि की पडिलेहणा करना। फिर यतनापूर्वक पूज कर आसन बिछाना। बाद मे आसन छोड कर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुह कर के दोनो हाथ जोडकर पचाग नमा कर '**तिक्खुत्तो**' के पाठ से तीन बार विधिपूर्वक वदना करना और श्रीसीमधर स्वामी या अपने धर्माचार्य जी (गुरुदेव) की आज्ञा लेकर

जहाँ भी कहीं क्लेश की सभावना हो उस स्थान से दूर रहना चाहिए/

चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा।
सागरवर गभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसन्तु।।7।।

6. करेमि भंते का पाठ

करेमि भते ! सामाइयं, सावज्ज जोग पच्चक्खामि जावनियम पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

7. णमोत्थुण का पाठ

णमोत्थुणं अरिहताण भगवताण आइगराणं तित्थयराणं सयं सबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाण पुरिससीहाण पुरिस-वर पुंडरिआणं पुरिसवर-गंध-हत्थीण, लोगु-त्तमाण लोगणाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाण, जीवदयाण बोहिदयाणं धम्मदयाणं, धम्भदेसयाण, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरन्त चक्कवट्टीण दीवो ताण सरणगई पईट्ठा अप्पडिहयवर नाणदंसणध राण विअट्टछउमाण जिणाण जावयाण, तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाण बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं, सव्वण्णूणं सव्वदरिसीण, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणराविति सिद्धिगइनामधेय ठाण सपत्ताणं णमो जिणाणं जिअभयाणं।

सामायिक पारने की विधि

एयस्स नवमस्स सामाइयवयस्स पच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तजहा ते आलोउ- मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइ अकरणया,

३२ दोषो का सेवन नहीं करना चाहिए।

सामायिक पारने की विधि

सामायिक पारने के समय **'नमस्कार मन्त्र'**, **'इच्छा-कारेणं'** और **'तस्स उत्तरी'** का पाठ बोलकर काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग में दो बार **'लोगस्स'** का पाठ मन मे कहना और **'णमो अरिहताण'** कह कर काउस्सग्ग पारना। फिर **'नमस्कार मन्त्र'** , **'ध्यान का पाठ'** और **'लोगस्स'** का पाठ प्रगट कहना। बाद मे बाया घुटना खडा रख कर ऊपर लिखे अनुसार दो बार **'णमोत्थुण'** का पाठ बोलना। फिर **'एयस्स नवमस्स'** सामायिक पारने का पूरा पाठ बोल कर अन्त मे तीन बार **'नमस्कार मंत्र'** गिन कर सामायिक पारना।

प्रत्याख्यान-सूत्र

नवकारसी-सूत्र

उग्गए सूरे नमोक्कर-सहिय पच्चक्खामि। चउव्विहपि आहार असण पाण खाइम साइम। अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण वोसिरामि।

पौरूषी-सूत्र

उग्गए सूरे पोरिसि पच्चक्खामि। चउव्विहपि आहार, असण पाण खाइम साइम। अन्नत्थणा, भोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण दिसा मोहेण, साहुवयणेण, सव्व समाहिवत्तियागारेण, वोसिरामि।

पूर्वार्ध-सूत्र

उग्गए सूरे पुरिमड्ढ पच्चक्खामि। चउव्विह पि आहार असण पाण खाइम साइम। अन्नत्थणा-भोगेण, सहसागारेण,

'नमस्कार मत्र', **'इच्छाकारेण'** और **'तस्स उत्तरी'** का पाठ बोल कर काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग मे **'इच्छाकारेणं'** का पाठ मन मे कहना। पाठ के अन्त मे **'तस्स मिच्छामि दुक्कड'** के स्थान पर **'तस्स आलोउ'** कहना और **'णमो अरिहताण'** कहकर काउस्सग्ग पारना। बाद मे **'नमस्कार मत्र'**, **'ध्यान का पाठ'** (काउस्सग्ग मे आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया हो, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्याया हो, काउस्सग्ग मे मन वचन काया चलित हुए हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड) और **'लोगस्स'** का पाठ कहना। फिर **'करेमि भते'** के पाठ से सामायिक लेना। 'करेमि भते' के पाठ मे जहा **'जाव नियम'** शब्द आता है वहा जितनी सामायिक लेनी हो उतनी सामायिक लेकर आगे का पाठ समाप्त करना। बाद मे नीचे बैठकर बाया घुटना खडा रख कर दो **'णमोत्थुण'** का पाठ बोलने के समय दूसरी बार 'णमोत्थुण' का पाठ बोलने के समय **'ठाण सपत्ताण'** के बदले **'ठाण सपाविउकम्माण'** बोलना।

सामायिक मे नया ज्ञान सीखना, सीखे हुए ज्ञान, थोकडा बोल आदि चितारना, स्वाध्याय करना, परमात्मा के स्तवन, प्रार्थना, स्तोत्र, स्तुति आदि बोलना, माला फेरना आदि ज्ञान–ध्यान करना। आशय यह है कि सामायिक का काल प्रमाद–रहित होकर ज्ञान, ध्यान, चिन्तन–मनन मे बिताना चाहिये। सन्त मुनिराज विराजते हो तो उनकी ओर पीठ करके नहीं बैठना चाहिए। स्वाध्याय, व्याख्यान या उपदेश दे रहे हो तो उसमे उपयोग रखना चाहिए। सामायिक मे विकार–जनक उपकरण नहीं रखना चाहिए। सामायिक के

आँखे फाडते हुए (घूरते हुए) नही देखना चाहिए।

अभिग्रह-सूत्र

अभिग्गह पच्चक्खामि। चउव्विह पि आहार–असण, पाण, खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहि वत्तियागारेण वोसिरामि।

निर्विकृतिक-सूत्र

विगईओ पच्चक्खामि, अन्नत्थाभोगेण सहसागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थससिट्ठेण, उक्खित्तविवेगेण, पडुच्चमक्खि एण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण, सव्व समाहिवत्ति– यागारेण वोसिरामि।

उपवास, दिवसचरिम, अभिग्रह आदि मे यदि पानी का आगार रखना हो तो 'चउव्विह' के स्थान पर 'तिविह' पाठ बोलना चाहिये और आगे 'पाण' का पाठ नही बोलना चाहिये।

प्रत्याख्यान पारणा-सूत्र

उग्गए सूरे नमोक्कार–सहिय

पच्चक्खाण कय त पच्चक्खाण सम्म काएण फासिय, पालिय, तीरिय, किट्टिय, आराहिय। ज च न आराहिय तस्स मिच्छामि दुक्कड।

पौषध–व्रत लेने का पाठ

एक्कारस पोसहोववासव्वय, असण-पाण-खाइम-साइम-पच्चक्खाण, अबभ-पच्चक्खाण, मणिसुवण्णाइ-पच्चक्खाण, माला-वण्णग-विलेवणाइ-पच्चक्खाण, सत्थ-मूसलाइ-सावज्जजोगपच्चक्खाण।

जाव अहोरत्त पज्जुवासामि दुविह तिविहेण न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भते,

पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहूवयणेण, महत्तरागारेण, सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरामि।

एकाशन-सूत्र

एगासण पच्चक्खामि। तिविह पि आहार-असण, खाइम साइम। अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, सागारियागारेण आउटणा-पसारणेण, गुरु अब्भुट्ठाणेण, महत्तरागारेण, सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरामि।

एकस्थान-सूत्र

एक्कासण एगट्ठाण पच्चक्खामि। तिविह पि आहार-असण पाण खाइम साइम। अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, सागारियागारेण, गुरु अब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठवणियागारेण, महत्तरागारेण, सव्व समाहिवत्तियागारेण, वोसिरामि।

आयम्बिल-सूत्र

आयबिल पच्चक्खामि। अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, लेवालेवेण उक्खित्तविवेगेण, गिहि ससट्ठेण, पारिट्ठावणियागारेण महत्तरागारेण सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरामि।

अभक्तार्थ-उपवास-सूत्र

उग्गए सूए अभत्तट्ठ ? पच्चक्खामि, चउव्विहपि पि, आहार असण (पाण) खाइम साइम। अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पारिट्ठावणिया गारेण महत्तरागारेण सव्व समाहि वत्तियागारेण वोसिरामि।

दिवसचरिम-सूत्र

दिवस चरिम पच्चक्खामि। चउव्विहपि आहार असण पाण खाइम साइम। अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहि वत्तियागारेण वोसिरामि।

मार्ग मे हँसते हुए नही चलना चाहिए।

आनुपूर्वी जप विधि

जहॉ 1 है वहॉ – णमो अरिहताण बोलना।
जहॉ 2 है वहॉ – णमो सिद्धाण बोलना।
जहॉ 3 है वहॉ – णमो आयरियाण बोलना।
जहॉ 4 है वहॉ – णमो उवज्झायाण बोलना।
जहॉ 5 है वहॉ – णमो लोए सव्वसाहूण बोलना।

卐卐卐

अनानुपूर्वी गुणवानों फल

आनुपूर्वी प्रतिदिन जपिये । चचल मन स्थिर हो जावे।
छह मासी तप का फल होवे, पाप पक सब धुल जावे॥
मत्रराज नवकार हृदय मे, शान्ति सुधारस बरसाता।
लौकिक जीवन सुखमय करके, अजर अमर पद पहुचाता॥
जिनवाणी का सार है, मन्त्रराज नवकार।
भाव सहित जपिए सदा, यही जैन आचार॥

***

इन तीनो चीजो को वश मे रखो। –मन, काम, क्रोध।

पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

सूचना—पौषध लेने और पारने की विधि सामायिक की विधि के अनुसार ही है। गृहस्थोचित वस्त्र कोट, पाजामा और पगडी आदि उतारकर, शुद्ध दुपट्टा और धोती आदि धारण कर पौषध व्रत लेना चाहिए। नवकार मत्र से लेकर सब पाठ सामायिक ग्रहण करने के अनुसार ही पढने चाहिए। केवल जहॉ सामायिक में करेमि भते बोला जाता है, वहॉ ऊपर लिखित पौषध लेने का पाठ बोलना चाहिए। इसी प्रकार पौषध पारते समय जहॉ सामायिक पारने का एयस्स नवमस्स पाठ बोला जाता है, वहॉ नीचे लिखा पौषध पारने का पाठ बोलना चाहिए।

पौषध-व्रत पारने का पाठ

एक्कारसस्स पोसहोववासव्वयस्स पच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तजहा–

अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सिज्जा-सथारए, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सिज्जा-सथारए, अप्पडिलेहिय-दुप्पमज्जिय-उच्चार-पासवण-भूमी, पोसहोववासस्स सम्म अणणुपालणाए, तस्स मिच्छामि दुक्कड।

***

आचार्य मंगल

मगल भगवान वीरो, मगल गौतम प्रभु।
मगल स्थूलि भद्राद्या , जैन धर्मोस्तु मगलम्॥

कामनाओं को दूर करना ही दुःखो को दूर करता है।

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

देना चाहते हो ? दूसरों को ज्ञान दो, सुख दो।

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

तीनो जीवन में ऐक बार मिलती है —माँ, बाप, जवानी

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

बोलना चाहते हो ? सबसे हितकारी मीठा बोलो।

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

देखना चाहते हो ? अपने पापो, दोषो को।

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

तीन चीजे प्रतिक्षा नहीं करती। –समय, मौत व ग्राहक

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

तीन को सम्मान करो —माता, पिता, गुरु

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

सदा डरो। किससे ? पापो से, दोषो से।

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

श्रीबृहदालोयणा

त्रिलोक-विजय-आलोयणा

आत्म शुद्धि : आलोयणा

देव गुरु धर्म सूत्र मे, नव तत्त्वादिक जोय।
अधिक ओछा जे कह्या, मिच्छामि दुक्कड मोय॥10॥

मोह अज्ञान मिथ्यात्व को, भरियो रोग अथाग।
वैद्यराज गुरु शरण से, औषध ज्ञान वैराग॥11॥

जे मै जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
प्रभो ! तुम्हारी साख से, बारम्बार धिक्कार॥12॥

बुरा-बुरा सबको कहूँ, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधूँ आपणो, तो मासु बुरा न कोय॥13॥

कहवा मे आवे नहीं, अवगुण भर्या अनन्त।
लिखवा मे क्योकर लिखू, जानो श्री भगवन्त॥14॥

करुणानिधि कृपा करी, कठिन कर्म मोय छेद।
मोह अज्ञान मिथ्यात्व को करजो ग्रथि भेद॥15॥

पतित उद्धारण नाथजी, अपनो विरुद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खमिये बारम्बार॥16॥

माफ करो सब माहरा, आज तलक ना दोष।
दीन दयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील सन्तोष॥17॥

आतम निन्दा शुद्ध भणी, गुणवन्त वदन भाव।
राग द्वेष पतला करी, सबसे खमत खमाव॥18॥

छूटू पिछला पाप से, नवा न बाधु कोय।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय॥19॥

वस्तुत बन्धन और मोक्ष अन्दर में ही है।

श्री लालाजी रणजीत सिह जी कृत

卐 श्रीबृहदालोयणा 卐

दोहा

सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगजन अरिहत।
इष्टदेव वदू सदा, भयभजन भगवत॥1॥

अरिहत सिद्ध समरु सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरण को, वदू शीश नमाय॥2॥

शासन नायक सुमरिये, भगवन्त वीर जिनन्द।
अलिय विघन दूर हरे, आपे परमानन्द॥3॥

अगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वाछित फल दातार॥4॥

श्री गुरुदेव प्रसाद से, होत मनोरथ सिद्ध।
ज्यू घन बरसत बेलि तरु, फूल फलन की वृद्ध॥5॥

पच परमेष्ठी देव को, भजनपूर पहिचान।
कर्म अरि भाजे सभी, होवे परम कल्याण॥6॥

श्री जिन युगपद कमल मे, मुझ मन भ्रमर बसाय।
कब ऊगे वो दिन करू, श्रीमुख दर्शन पाय॥7॥

प्रणमी पदपकज भणी, अरिगजन अरिहन्त।
कथन करू अब जीव को, किचित् मुझ विरतत॥8॥

आरम्भ विषय कषाय वश, भमियो काल अनन्त।
लख चौरासी योनि से, अब तारो भगवन्त॥9॥

ससार मे मानव भिन्न-भिन्न विचार वाले हैं।

द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असख्य प्रमाण।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान॥4॥

गर्भित पुद्गल पिण्ड मे, अलख अमूरति देव।
फिरे सहज भव चक्र मे, यह अनादि की टेव ॥5॥

फूल इत्तर घी दूध मे, तिल मे तेल छिपाय।
यू चेतन जड करम सग, बध्यो ममत दु ख पाय॥6॥

जो जो पुद्गल की दशा, ते निज माने हस।
या ही भरम विभावसे, बढे करम को वश॥7॥

रतन बध्यो गठड़ी, विषे, सूर्य छिप्यो घन माय।
सिह पिजरा मे दियो, जोर चले कुछ नाय॥8॥

ज्यो बन्दर मदिरा पियॉ, बिच्छु डकित गात।
भूत लग्यो कौतुक करे, त्यो कर्मो को उत्पात॥9॥

कर्म सग जीव मूढ है, पावे नाना रूप।
कर्म रूप मल के टले, चेतन सिद्ध सरूप॥10॥

शुद्ध चेतन उज्जवल दरब, रह्यो कर्म मल छाय।
ज्ञान आतम सु धोवता, ज्ञान ज्योति बढ जाय॥11॥

ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन श्रद्धा रूप।
चारित्र से आवत रुके, तपस्या क्षपन स्वरूप॥12॥

कर्म रूप मल के शुधे, चेतन चॉदी रूप।
निर्मल ज्योति प्रकट भया, केवल ज्ञान अनूप॥13॥

मूसी पावक सोहगी, फूका तणो उपाय।
राम चरण चारू मिल्या, मैल कनक को जाय॥14॥

कुछ लोग मामूली कहा-सुनी होते ही क्षुब्ध हो जाते है।

परिग्रह ममता तजी करी, पच महाव्रत धार।
अन्त समय आलोयणा, करू सथारो सार॥20॥

तीन मनोरथ1 ए कह्या, जो ध्यावे नित्य मन।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिवसुख धन॥21॥

अरिहन्त देव निर्ग्रन्थ गुरु, सवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र, यही जैनमत धर्म॥22॥

आरभ विषय कषाय तज, शुद्ध समकित व्रत धार।
जिन आज्ञा परमाण कर निश्चय खेवो पार॥23॥

खिण निकमो रहनो नहीं, करनो आतम काम।
भणनो गुणनो सीखनो, रमनो ज्ञान आराम ॥24॥

अरिहन्त सिद्ध सब साधुजी, जिन आज्ञा धर्मसार।
मागलिक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार॥25॥

घडी-घडी पल पल सदा, प्रभु सुमरण को चाव।
परभव सफलो जो करे, दान शील तप भाव॥26॥

2

सिद्धा जैसो जीव है, जीव सो ही सिद्ध होय।
कर्म मैल का आतरा, बूझे विरला कोय॥1॥

कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान।
दो मिलकर बहुरूप है, बिछुड्या पद निर्वाण॥2॥

जीव कर्म भिन्न-भिन्न करो, मनुष्य जन्म को पाय
ज्ञानातम वैराग्य से धीरज ध्यान जगाय॥3॥

बाध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्या न छुडाय।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ॥26॥

पथ कुपथ घट बध करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
यू पुण्य पाप किरिया करी, सुख दु ख जग मे पाय ॥27॥

सुख दिया सुख होत है, दुःख दिया दु·ख होय।
आप हणे नही अवर को, तो आपको हणे न कोय ॥28॥

ज्ञान गरीबी गुरु वचन, नरम वचन निर्दोष।
इनको कभी न छोडिये, श्रद्धा शील सतोष ॥29॥

सत मत छोड़ो हो ! नरा, लक्ष्मी चौगुनी होय।
सुख दु·ख रेखा कर्म की, टाली टले न कोय ॥30॥

गोधन गजधन रत्न धन, कचन खान सुखान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूल समान ॥31॥

शील रतन मोटो रतन, सब रतना की खान।
तीन लोक की सपर्दा, रही शील मे आन ॥32॥

शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग।
शीले अरि करि, केसरी, भय जावे सब भाग ॥33॥

शील रतन के पारखी, मीठा बोले बैन।
सब जग से ऊँचा रहे, जो नीचा राखे नैन ॥34॥

तन कर मन कर वचन कर, देत न काहु दु ख।
कर्म रोग पातक झड़े, देखत वॉ का मुख ॥35॥

पान खिरतो इम कहे, सुन तरुवर वनराय।
अब के बिछडे कब मिले, दूर पडेगे जाय ॥36॥

न अपनी अवहेलना करो और न दूसरों को।

कर्म रूप बादल मिटे, प्रगटे चेतन चद।
ज्ञानरूप गुण चादनी, निर्मल ज्योति अमन्द ॥15॥

रागद्वेष दो बीज से कर्म बध की व्याध।
ज्ञानातम वैराग्य से, पावे मुक्ति समाध ॥16॥

अवसर बीत्यो जात है, अपने वश कुछ होत।
पुण्य छता पुण्य होत है, दीपक दीपक ज्योत ॥17॥

कल्पवृक्ष चिन्तामणि, इण भव मे सुखकार।
ज्ञान वृद्धि इनसे अधिक, भव दु.ख भजनहार ॥18॥

राई मात्र घट वध नहीं, देख्या केवल ज्ञान।
यह निश्चय कर जानके, तजिये प्रथम ध्यान ॥19॥

दूजा कभी न चितिये, कर्म बध बहु दोष।
तीजा चौथा ध्याय के, करिये मन सतोष ॥20॥

गई वस्तु सोचे नहीं, आगम वाछा नाय।
वर्तमान वर्ते सदा, सो ज्ञानी जग माय ॥21॥

अहो समदृष्टि जीवडा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अन्तर्गत न्यारो रहे, ज्यु धाय खिलावे बाल ॥22॥

सुख दु.ख दोनु बसत है, ज्ञानी के घट माय।
गिरि सर दीसे मुकुर मे, भार भींजवो नाय ॥23॥

जो जो पुद्गल फरसना, निश्चय फरसे सोय।
ममता-समता भाव से करम बध क्षय होय ॥24॥

बाध्या सोई भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव।
फल निर्जरा होत है, यह समाधि चित्त चाव ॥25॥

शकाशील व्यक्ति को कभी समाप्ति नहीं मिलती।

जब लग जिसके पुण्य को, पहुचे नहीं करार।
तब लग उसको माफ है, अवगुण करे हजार॥8॥

पुण्य क्षीण जब होत है, उदय होत है पाप।
दाझे वन की लाकड़ी, प्रजले आपो आप॥9॥

पाप छिपाया ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दाबी दूबी ना रहे, रूई लपेटी आग॥10॥

बहुत बीती थोड़ी रही, अब तो सुरत सभार।
परभव निश्चय जावणो, वृथा जन्म मत हार॥11॥

चार कोस गामान्तरे, खरची बाधे लार।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म विचार॥12॥

रज विरज ऊँची गई, नरमाई के ताण।
पत्थर ठोकर खात है, करड़ाई के ताण॥13॥

अवगुण उर धरिये नहीं, जो होवे वृक्ष बबूल।
गुण लीजे 'कालू' कहे, नहीं छाया मे शूल॥14॥

जैसी जापे वस्तु है, वैसी दे दिखलाय।
वाका बुरा न मानिये, वो लेन कहा से जाय॥15॥

गुरु कारीगर सारिखा, टॉची वचन विचार।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार॥16॥1
सतन की सेवा किया, प्रभु रींझत है आप।
जाका बाल खिलाइये, ताका रींझत बाप॥17॥

भवसागर ससार मे, दीपा श्री जिनराज।
उद्यम करी पहुचे तीरे, बैठी धर्म जहाज॥18॥

संकट में मन को ऊंचा-नीचा नहीं होने देना चाहिए।

तब तरुवर उत्तर दियो, सुनो पत्र इक बात।
इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात॥37॥
बरस दिनो की गॉठ को, उत्सव गाय बजाय।
मूरख नर समझे नहीं, बरस गाठ को जाय॥3॥

सोरठा-पवन तणो विश्वास, किण कारण ते दृढ कियो।
इनकी एही रीत, आवे के आवे नहीं॥1॥

दोहा

करज बिराना काढ के, खर्च किया बहु नाम।
जब मुद्दत पूरी हुवे, देना पड़सी दाम॥1॥

बिन दियॉ छूटे नहीं, यह निश्चय कर मान।
हस-हंस के क्यू खरचिये, दाम बिराना जान॥2॥

जीव हिसा करता थका, लागे मिष्ट अज्ञान।
ज्ञानी इम जाने सही, विष मिलियो पकवान॥3॥

काम भोग प्यारा लगे, फल किपाक समान।
मीठी खाज खुजावता, पीछे दु ख की खान॥4॥

जप तप सजम दोहिलो, औषध कडवी जाण।
सुख कारण पीछे घणो, निश्चय पद निर्वाण॥5॥

डाभ अणी जल बिन्दुवो, सुख विषयन-को चाव।
भवसागर दु ख जल भर्‍यो, यह ससार स्वभाव॥6॥

चढ उत्तग जहा से पतन, शिखर नहीं वो कूप।
जिस सुख भीतर दु ख बसे, सो सुख भी दु ख रूप॥7॥

कठोर कटु वचन न बाले।

अरिहन्त सिद्ध समरु सदा, आचारज उवज्झाय।
साधु सकल के चरण को वदू शीश नमाय॥5॥

शासन नायक सुमरिए, वर्धमान जिनचन्द।
अलिय विघन दूर हरे, आपे परमानन्द॥6॥
अगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार।
श्री गुरु गौतम सुमरिए, वाछित फल दातार॥7॥

श्री जिन युग पद-कमल मे, मुझ मन अलिय बसाय।
कब ऊगे वो दिन करू, श्री मुख दर्शन पाय॥8॥

प्रणमी पद-पकज भणी, अरिगजन अरिहन्त।
कथन करू अब जीव को, किचित् मुझ विरतत॥9॥

गाथा

हूँ अपराधी अनादि को, जन्म-जन्म गुना किया भरपूर के।
लूटिया प्राण छ· काय ना, सेविया पाप अठारे करूर के।
श्री मुनि सुव्रत साहिबा॥1॥

आज दिन तक इस भव मे और पहले सख्यात, असख्यात, अनन्त भवो मे कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की सद्दहणा, प्ररूपणा, फरसना, सेवानादि सबधी पाप दोष लगा हो उनका मिच्छामि दुक्कड। मैने अज्ञानपन से, मिथ्यात्वपन से, कषापन से, अशुभयोग से, प्रमाद करके, अपछदा, अविनीतनपना किया, श्री अरिहन्त भगवत वीतराग देव, केवलज्ञानी, गणधर देव, आचार्य जी महाराज, धर्माचार्य जी महाराज, उपाध्याय जी महाराज, साधु जी महाराज, आर्या जी

जो असत्य की प्ररूपणा करते है, वे ससार-सागर को पार नहीं कर सकते।

निज आतम को दमन कर, पर आतम को चीन।
परमातम को भजन कर, सोही मत परवीन॥19॥

समझू शके पाप से, अण-समझू हरषन्त।
वे लूखा वे चीकणा, इण विध कर्म बधन्त॥20॥

समझ सार ससार मे, समझू टाले दोष।
समझ-समझ कर जीवडा, गया अनता मोक्ष॥21॥

उपशम विषय कषाय नो, सवर तीनो योग।
किरिया जतन विवेक से, मिटे कुकर्म दुःख रोग॥22॥

रोग मिटे समता वधे, समकित व्रत आराध।
निर्वेरी सब जीव का, पावे मुक्ति समाध॥23॥

॥ इति भूल चूक मिच्छामि दुक्कड॥

सिद्ध श्री परमात्मा अरिगजन अरिहन्त।
इष्टदेव वन्दू सदा, भयभजन भगवन्त॥1॥

अनन्त चौबीसी जिन नमू, सिद्ध अनन्ता क्रोड।
वर्तमान जिनवर सबे, केवली दो कोडी नव कोड॥2॥

गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार।
यथायोग्य वदन करू, जिन आज्ञा अनुसार॥3॥
(यहा एक बार नमस्कार मन्त्र का स्मरण करना चाहिए)

पच परमेष्ठी देव को, भजन पुर पहिचान।
कर्म अरि भाजे सभी, शिवसुख मगल थान॥4॥

असत् कभी सत् नहीं होता।

दुप्पडिलेहणा सम्बन्धी, अप्रमार्जना, दुष्प्रमार्जना सबधी, न्यूनाधिक विपरीत पडिलेहणा सबधी और आहार विहार आदि अनेक प्रकार के कर्त्तव्यो मे सख्यात, असख्यात और निगोद आसरी अनन्त जीवो के जितने प्राण लूटे उन सब जीवो का मै अपराधी हूँ, निश्चय करके बदले का देनदार हूँ, सब जीव मेरे को माफ करो, मेरी भूल, चूक, अवगुण अपराध सब माफ करो।

देवसी, राई, पक्खी, चौमासी और सम्वत्सरी सबधी बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड़, बारम्बार मै खमाता हूँ। आप सब क्षमा करो।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वें जीवा खमतु मे।
मित्ति मे सव्व भूएसु, वैर मज्झ न केणइ॥1॥

वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मै छ काय के वैर बदले से निवृत्त होऊँगा, समस्त चौरासी लाख जीव योनि को अभयदान देऊँगा वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा।

सुख दिया सुख होत है, दुःख दिया दु·ख होय।
आप हणे नहीं अवर को आपको हणे न कोय॥1॥

दूजा पाप मृषावाद-झूठ बोलना। क्रोध के वश, मान के वश, माया के वश, लोभ के वश हास्य वश, भय वश, मृषा (झूठ) वचन बोला, निदा, विकथा की, कर्कश-कठोर, मर्मकारी वचन बोला इत्यादि अनेक प्रकार से मृषावाद बोला, बोलवाया और अनुमोदा, उसका मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कड।

महाराज, तथा सम्यग्दृष्टि, स्वधर्मी श्रावक और श्राविका इन उत्तम पुरुषो की तथा शास्त्र, सूत्रपाठ, अर्थ, परमार्थ और धर्म सम्बन्धी समस्त पदार्थो की अविनय, अभक्ति, आशातना आदि की, कराई, अनुमोदी, मन, वचन, काया से द्रव्य, क्षेत्र काल, भाव से सम्यक प्रकार विनय भक्ति आराधना पालना फरसना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रम से नहीं की, नहीं कराई, नहीं अनुमोदी तो मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब मुझे माफ करो, मै मन, वचन, काया करके क्षमाता हूँ।

दोहा

मै अपराधी गुरुदेव को, तीन भवन को चोर
ठगू बिराना माल मै, हा हा कर्म कठोर॥1॥

कामी कपटी लालची अपछदा अविनीत।
अविवेकी क्रोधी कठिन, महापापी रणजीत॥2॥

जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार।
नाथ तुम्हारी साख से, बारम्बार धिक्कार॥3॥

मैने छकायपन से, छकाय की विराधना की – पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय–सन्नी, असन्नी, गर्भज चौदह प्रकार के सम्मूर्छिम आदि त्रस स्थावर जीवो की विराधना मन, वचन, काया से की, कराई, अनुमोदी, उठते बैठते, सोते, हालते, चालते, शस्त्र वस्त्र मकानादि उपकरण उठाते, धरते, लेते, देते, वर्तते वर्तावते, अप्पडिलेहणा

अज्ञानी आत्मा पाप करके भी उस पर अहंकार करता है।

पाचवॉ परिग्रह-सचित्त परिग्रह तो दास-दासी, द्विपद, चतुष्पद (पशु) आदि अनेक प्रकार के और अचित्त परिग्रह-सोना, चॉदी, वस्त्र आभूषण आदि नव प्रकार के है। उनकी ममता मूर्च्छा की, क्षेत्र, घर आदि नव प्रकार के बाह्य परिग्रह और चौदह प्रकार के आभ्यन्तर परिग्रह को रखा, रखवाया और अनुमोदा तथा रात्रि भोजन, अभक्ष्य आहारादि सम्बन्धी पाप दोष सेव्या हो वह मुझे धिक्कार-धिक्कारबारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। वह दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सब प्रकार के परिग्रह का त्याग कर ससार के प्रपच से निवर्तूगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥5॥

छठा क्रोध-क्रोध करके अपनी आत्मा को तथा पर आत्मा को दु खी किया ॥6॥

सातवा मान-अहकार भाव लाया तीन गारव और आठ मद आदि किया ॥7॥

आठवॉ माया – धर्म सम्बन्धी तथा ससार सम्बन्धी अनेक कर्त्तव्यो मे कपट किया ॥8॥

नववॉ लोभ – मूर्च्छा भाव लाया, आशा तृष्णा वाछा आदि की ॥9॥

दसवॉ राग – मन पसन्द वस्तु से स्नेह किया ॥10॥

ग्यारहवॉ द्वेष – नापसद वस्तु देखकर उस पर द्वेष किया ॥11॥

बारहवॉ कलह – अप्रशस्त (खराब) वचन बोलकर क्लेश उत्पन्न किया ॥12॥

तेरहवॉ अभ्याख्यान – झूठा कलक दिया ॥13॥

थापनमोसा मै किया, करी विश्वासघात।
परनारी धन चोरिया, प्रकट कह्यो नहीं जात॥1॥

मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। वह दिन धन्य होवेगा जिस दिन मै सर्व प्रकार से मृषावाद का त्याग करूगा, वह दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा॥2॥

तीसरा पाप अदत्तादान-बिना दी हुई वस्तु चोरी करके, लेना। यह बडी चोरी लौकिक विरुद्ध, अल्प चोरी मकान सबधी अनेक प्रकार के कर्त्तव्यो मे उपयोग सहित या बिना उपयोग से अदत्तादान-मन-वचन काया से चोरी की, कराई, अनुमोदी तथा धर्म-सम्बन्धी ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप श्री भगवन्त गुरुदेव की बिना आज्ञा किया, उसका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कडे। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन सर्व प्रकार से अदत्तादान कात्याग करूगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होवेगा॥3॥

चौथा पाप मैथुन सेवन करने के लिए मन वचन और काया के योग प्रवर्त्ताया, नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य नही पाला, नववाड मे अशुद्धपन से प्रवृत्ति हुई, मैने मैथुन सेवन किया, दूसरो से करवाया और सेवन करने वालो को अच्छा समझा, उसका मन वचन काया से मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्क ड। वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन मै नववाड सहित ब्रह्मचर्य-शीलरत्न आराधूगा यानी सर्वथा प्रकार से काम विकार से निवर्तूगा। वह दिन मेरा परम कल्याण का होगा॥4॥

जीवन-सूत्र टूट जाने के बाद फिर नहीं जुड पाता है।

विराधना की, परम कल्याणकारी इन बोलो की आराधना पालनादि मन वचन और काया से नहीं की, नहीं कराई और नहीं अनुमोदी। छह आवश्यक को सम्यक् प्रकार से विधि व उपयोग सहित आराधा नहीं, पाला नहीं, फरसा नहीं, विधि अनुपयोग निरादरपने की, किन्तु आदर सत्कार भाव भक्तिसहित नहीं किया। ज्ञान के चौदह, समकित के पाच, बारह व्रतो के साठ, कर्मादान के पन्द्रह, सलेखणा के पाच, इन निन्नाणवे अतिचारो मे तथा 124 अनाचारो मे तथा साधुजी के 125 अतिचारो मे तथा 52 अनाचारो का श्रद्धानादिक मे विराधना आदि जो कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार आदि सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा, जानते अजानते मन, वचन, काया से की उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड।

मैने जीव को अजीव श्रद्धया, प्ररूप्या, अजीव को जीव श्रद्धया, प्ररूप्या, धर्म को अधर्म और अधर्म को धर्म श्रद्धह्या प्ररूप्या तथा साधु को असाधु व असाधु को साधु श्रद्धया प्ररूप्या तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज महासतियाजी की सेवा भक्ति मान्यता आदि यथाविधि नहीं की, नहीं कराई, नहीं अनुमोदी तथाा असाधुओं की सेवा भक्ति मान्यता आदि का पक्ष लिया, मुक्तिमार्ग मे ससार का मार्ग यावत् पच्चीस मिथ्यात्व मे से किसी मिथ्यात्व का सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा मन, वचन, काया से की, पच्चीस कषाय सम्बन्धी, पच्चीस क्रिया सम्बन्धी, तेतीस आशातना सम्बन्धी, ध्यान के 19 दोष, वदना के 32 दोष, सामायिक के 32 दोष, पौषध के

चौदहवॉ पैशुन्य – दूसरे की चुगली की ॥14॥

पन्द्रहवॉ पर परिवाद – दूसरे का अवगुण वाद (अवर्णवाद) बोला, निदा की ॥15॥

सोलहवॉ रति अरति – पाच इन्द्रियो के 23 विषय और 240 विकार है, इनमे मनपसन्द पर राग किया और नापसन्द पर द्वेष किया तथा सयम तप आदि पर अरति रखी तथा आरम्भादिक असयम और प्रमाद मे रति भाव किया ॥16॥

सतरहवा माया मृषावाद-कपट सहित झूठ बोला ॥17॥

अठारहवॉ मिथ्या दर्शनशल्य-श्री जिनेश्वर देव के मार्ग मे शका काक्षा आदि विपरीत श्रद्धा प्ररूपणा की + ॥18॥

इस प्रकार अठारह पाप का द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से जानते, अजानते मन, वचन और काया से सेवन किया, कराया, और अनुमोदा, दिया वा, राओ वा एगओ वा, परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, इस भव मे, परभव मे, पहिले के सख्यात, असख्यात, अनन्त भवो मे भवभ्रमण करते आज दिन ※ तक राग-द्वेष, विषय, कषाय, आलस, प्रमाद आदि।

पौद्गलिक प्रपच, परगुण पर्याय की विकल्प भूल की ज्ञान की विराधना की, दर्शन की विराधना की, चारित्र की विराधना की, चारित्राचारित्र की व तन की विराधना की, शुद्ध श्रद्धा, शील, सतोष, क्षमा आदि निज स्वरूप की विराधना की, उपशम, विवेक, सवर, सामायिक, पौषध, प्रतिक्रमण, ध्यान, मौन आदि व्रत पच्चक्खाण, दान, शील, तप वगैरह की

दानों में अभय दान ही सर्वश्रेष्ठ दान है।

रतन बध्यो गठडी विषे, भानु छिप्यो घन माय।
सिह पिजरा मे दियो, जोर चले कुछ नाय॥13॥

बुरा-बुरा सबको कहूँ, बुरा न दीसे कोय।
जो घट शोधु आपणो, मोसूँ बुरो न कोय॥14॥

कामी कपटी लालची, कठिन लोह को दाम।
तुम पारस परसग थी, सुवर्ण थासु स्वाम॥15॥

श्लोक

मै जपहीन हूँ, तपहीन हूँ, प्रभु हीन सवर समगत। हे दयाल ! कृपाल करूणानिधि, आयो तुम शरणागत। प्रभु आयो तुम शरणागत॥16॥

दोहा

नहीं विद्या नहीं वचन बल, नहीं धीरज गुण ज्ञान।
तुलसीदास गरीब की, पत राखो भगवान्॥17॥

विषय कषाय अनादि को, भरियो रोग अगाध।
वैद्यराज गुरु शरण से, पाऊँ चित्त समाध॥18॥

कहवा मे आवे नहीं, अवगुण भर्या अनन्त।
लिखवा मे क्यू कर लिखू, जाणो श्री भगवन्त॥19॥

आठ कर्म प्रबल करी, भमियो जीव अनादि।
आठ कर्म छेदन करी, पावे मुक्ति समाधि॥20॥

पथ कुपथ कारण करी, रोग हानि वृद्धि थाय।
इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुख जग मे पाय॥21॥

सुव्रती साधक कम खाये, कम पीये, और कम बोले।

18 दोष आदि मे मन वचन और काया से जो कोई पाप दोष लगा हो लगाया हो, अनुमोदा हो, उसका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। महामोहनीय कर्मबध के तीस स्थानक को मन वचन और काया से सेवन किया, सेवन कराया, अनुमोदा की, शील की नववाड़ तथा आठ प्रवचन माता की विराधनादि की, श्रावक के 21 गुण और बारह व्रत की विराधनादि मन वचन और काया से की कराई, अनुमोदी तथा तीन अशुभ लेश्या के लक्षणो की, और अन्य बोलो की सेवना की व तीन शुभ लेश्या के लक्षणो की और अन्य और बोलो की विराधना की, चर्चा वार्त्ता वगैरह मे श्री जिनेश्वर देव का मार्ग लोपा, गोपा, नहीं माना, अछते को स्थापना की, छते की स्थापना नहीं की। और अछते को निषेध नहीं किया, छते की स्थापना और अछूते को निषेध करने का नियम नहीं किया, कलुषता की, तथा छह प्रकार के ज्ञानावरणीय बन्ध के बोल, ऐसे ही छह प्रकार के दर्शनावरणीय बन्ध के बोल, आठ कर्म की अशुभ प्रकृति के बोल, सत्तावन कारणो से पाप की बयासी प्रकृति बाधी, बधाई, अनुमोदी, मन वचन काया करके तो उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड। एक-एक बोल से लगाकर क्रोडा क्रोडी यावत् सख्याता असख्याता अनता-अनत बोलो से जानने योग्य बोलो को सम्यक् प्रकार से जाना नहीं, श्रद्धह्या नहीं, प्ररूप्या नहीं, तथा विपरीतपने से श्रद्धा आदि की, कराई अनुमोदी, मन, वचन काया से तो, उनका मुझे धिक्कार-धिक्कार बारम्बार मिच्छा मि दुक्कड।

प्रत्येक प्राणी अपने ही कृत कर्मों से कष्ट पाता है।

माफ करो सब माहरा, आज तलक रा दोष।
दीन दयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील सन्तोष॥33॥

देव अरिहन्त निर्ग्रन्थ गुरु, सवर निर्जरा धर्म।
केवली भाषित शास्त्र है, यही जैनमत धर्म॥34॥

इस अपार ससार मे, शरण नहीं अरु कोय।
या ते तुम पद कमल ही, भक्त सहायी होय॥35॥

छूटू पिछला पाप से, नवा न बाधू कोय।
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय॥36॥

आरभ परिग्रह तजी करी, समकित व्रत आराध।
अन्त समय आलोय के, अनशन चित्त समाध॥37॥

तीन मनोरथ ए कह्या, जे ध्यावे नित्य मन्न।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न॥38॥

श्री पच परमेष्ठी भगवत गुरुदेव महाराज जी आपकी आज्ञा है। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप सयम, सवर, निर्जरा और मुक्ति मार्ग यथाशक्ति से शुद्ध उपयोग सहित आराधने फरसने सेवने की आज्ञा है। बारम्बार शुभयोग सम्बन्धी, सज्झाय, ध्यानादिक अभिग्रह, नियम पक्चक्खाण आदि करने की, करावने की समिति गुप्ति प्रमुख आराधने की सर्व प्रकार आज्ञा है।

निश्चय चित्त शुद्ध मुख पढत, तीन योग थिर थाय।
दुर्लभ दीसे कायरा, हलुकर्मी चित्त भाय॥1॥

अक्षर पद हीणो अधिक, भूल चूक जो होय।
अरिहत सिद्ध आत्म साख से, मिच्छा दुष्कृत मोय॥2॥

भूल चूक मिच्छा मि दुक्कड।

मुनि को मर्यादा से अधिक नही हँसना चाहिए।

बाध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगत्या न छुटाय।
आप ही करता भोगता, आप ही दूर कराय ॥22॥

हूँ अविवेक, मोहवश आख मीच अधियार।
मकड़ी जाल बिछायके, फसु आप धिक्कार ॥23॥

सर्व भक्षी जिम अग्नि हूँ, तज्यो विषय कषाय।
स्वच्छन्दी अविनीत मै, धर्मी ठग दु ख दाय ॥24॥

कहा भयो घर छाड के, तजियो न माया सग।
नाग तजी जिम कॉचली, विष नहीं तजियो अग ॥25॥

आलस विषय कषाय वश, आरम्भ परिग्रह काज।
योनि चौरासी लख भम्यो, अब तारो महाराज ॥26॥

आतम निदा शुद्ध भणी, गुणवन्त वदन भाव।
राग द्वेष उपशम करी, सबसे खमत खमाव ॥27॥

पुत्र कुपुत्र जो मैं हुओ, अवगुण भरह्या अनन्त।
अपनो विरूद विचार के, माफ, करो भगवत ॥28॥

शासनपति वर्धमान जी, तुम लग मेरी दौड।
जैसे समुद्र जहाज बिन, सूझत और न ठौड़ ॥29॥

भव भ्रमण ससार दु·ख ताका वार न पार।
निर्लोभी सतगुरु बिना, कौन उतारे पार ॥30॥

भव सागर ससार मे, दीपो श्री जिनराज।
उद्यम करी पहुॅचे तीरे, बैठी धर्म जहाज ॥31॥

पतित उद्धारन नाथजी, अपनो विरूद विचार।
भूल चूक सब माहरी, खमिये बारम्बार ॥32॥

जो कुछ बोले—पहले विचार कर बोले।

मे अजीर्ण (35) धर्म मे सुशरण (36) गन्ध में कृष्णागर (37) आगर में रत्नाकर (38) सागर मे स्वयभु रमण (39) धर्म मे जैन (40) इन्द्री मे नैन (41) अयन में उत्तरायन (42) पाषाण मे पारस (43) जोड़ा मे सारस (44) मास में श्रावण (45) दैत्य में रावण (46) फूल मे अरविद (47) भोगी मे गोविद (48) वस्त्र में क्षोम युगल (49) पापो में चुगल (50) वन में नन्दन (51) रथ मे हरि स्पन्दन (52) क्षेत्र मे महाविदेह (53) दुख बीज मे स्नेह (54) वृक्ष मे जम्बू (55) जगजीवन मे अम्बू (56) सती मे सीता (57) नदी मे गगा (58) तिथि में पूनम (59) स्थिति मे अनुत्तर वैमान की (60) बुद्धि में उत्पात (61) सूत्र में दृष्टिवाद (62) बाजा में भभा (63) रूप में रभा (64) दीर्घ गिरि मे निषढ (65) वृद्धि वृक्ष में बड (66) पक्षी में गरुड (67) ससार श्रेणी में भवि (68) तेज मे रवि (69) मणि में चिन्तामणि (70) हस्ती में एरावत (71) उर्ध्वगिरि मे सुदर्शन (72) देवलोक मे ब्रह्म (73) सभा मे सौधर्म (74) अक्ल मे पहेली (75) वेली में चित्रावेली (76) ससार को कारण क्रोध (77) मुक्ति को कारण बोध (78) माता मे तीर्थंकर की (79) साता मे मरु देवी (80) सिह मे शार्दूल (81) वृषभ मारवाड को (82) सुख में युगलिया (83) शृगार में मुकुट (84) देश मे मगध (85) गच्छ मे गणधर (86) उपकारी मे विक्रम (87) विनीत मे श्रवण (88) देव पदवी मे महेन्द्र की (89) छवि भगवन्त की (90) स्त्री मे सती (91) गति मे सिद्ध गति (92) पृथ्वी में इषत्प्पभारा (93) तपे शूरा अणगारा (94) सुमति मे भाषा

अभिमान करना अज्ञानी का लक्षण है।

त्रिलोक-विजय-आलोयणा

णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण।

यह णमोकार महामन्त्र है, जिस पर 96 ओपमा। ज्यो सर्व देवताओ में इन्द्र मोटा और प्रधान त्यो सर्व मन्त्रो में नवकार मन्त्र मोटा और प्रधान। (1) मनुष्य-ऋद्धि मे चक्रवर्ती की रिद्धि मोटी और प्रधान, त्यो सर्व मन्त्रो मे नवकार मन्त्र मोटा और प्रधान। (2) चार तीर्थो मे तीर्थंकर मोटा (3) शूर पुरुषो में वासुदेव (4) दानेश्वरी में वेश्रमण (5) पदवी में तीर्थकर की (6) बल में तीर्थकर को (7) शल्य में अभवी को (8) ज्ञान मे केवलज्ञान (9) ध्यान मे शुक्ल ध्यान (10) दान में अभयदान (11) खान मे वज्र हीरो की खान (12) बाण में राधा बाण (13) गोत्र मे तीर्थकर को (14) चारित्र में यथाख्यात (15) घात मे कर्म की घात (16) छात मे अनुत्तरविमान की छात (17) बात मे सत्य बात (18) भात में क्षीर चावल को भात (19) रात मे दीवाली की रात (20) मोटा और प्रधान, त्यो सर्व मन्त्रो मे नवकार मन्त्र मोटा और प्रधान। समकित में खायक। (21) गायक मे गान्धर्व (22) कर्म मे मोह (23) व्रत में शील (24) घिरत मे गऊ को (25) नृत्य में इन्द्राणी को (26) कृत्य मे जिनकल्पी को (27) गाय में कामधेनु (28) सघयण में वज्रऋषभनाराच (29) सठाण में सम चउरस (30) यश मे भगवन्त को (31) रस में इक्षु को (32) वर्ण में शुक्ल वर्ण (33) मरण में पडित मरण (34) रोग

शून्य व्यर्थ बिन अक को, समझ कहे तिल्लोक॥4॥
एक समकित पाये बिना तप जप किरिया फोक।
ज्यो मुरदा सिणगारवो, समझ कहे तिल्लोक॥5॥

एक समकित पाये बिना तप जप किरिया फोक।
बहेरा आगे गावणो, समझ कहे तिल्लोक॥6॥

एक समकित पाये बिना तप जप किरिया फोक।
ज्यूँ अन्धे को आरसी, समझ कहे तिल्लोक॥7॥

एक समकित पाये बिना तप जप किरिया फोक।
खार खेत में बोवणो, समझ कहे तिल्लोक॥8॥

अतीत काले अरिहन्त हुए, वर्तमान काले अरिहन्त है, आगामी काले अरिहन्त होगे, उन सबो ने ऐसा कहा है। सर्व प्राण, भूत, जीव, सत्त्व को दु.ख सताप क्लेश, उत्पन्न करना नहीं, किसी को त्रासित करना नहीं, एव जान से मारना नहीं, यही धर्म है, शुद्ध, ध्रुव, नित्य, शाश्वत रूप है। सर्व जीव सुख और जीवन के अभिलाषी है। हिसा में दोष नहीं। ऐसा वचन अनार्यम्लेच्छ लोगो का है ऐसी श्रद्धा करे।

द्रव्य से नवतत्त्व, षटद्रव्य, षटकाय का स्वरूप शुद्ध एव सत्य श्रद्धे, क्षेत्र से 343 राजू प्रमाण लोक और असख्य द्वीप समुद्र तथा अनन्त अलोक सत्य माने, काल से समय आवलिका, मुहूर्त्त, दिनरात पक्ष मास, ऋतु, अयन, वर्ष, पूर्व, पल्य-सागरोपम, सर्पिणी, कालचक्र पुद्गल परावर्त आदि सत्य श्रद्धे, भाव से वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, द्रव्य, गुण, पर्याय, सत्य श्रद्धे, तप सयमादिक का फल सत्य श्रद्धे, वह निश्चय

सन्तोषी साधक कभी कोई पाप नहीं करते।

और (95) गुप्ति में मन (96) मोटा और प्रधान है, त्यो सर्व मन्त्रो में नवकार मन्त्र मोटा और प्रधान जानो। चौदह पूर्व को सार, कर्मबन्ध को काटणहार, मिथ्यात्व को निवारणहार, बोध बीज को, दातार, अजर अमर पदवी को दातार, मन-इच्छा को पूर्णहार, चिन्ता को चूर्णहार, भवोदधितारण, दु ख, विदारण, कल्याणिक, मगलिक, वन्दनीय, पूजनीय, डायणी सायणी, भूत विहडणी, मोह निखडणी, मोक्ष निमडणी, कर्मरिपु-दडणी, अष्टसिद्धि नवनिधि को दाता, परम मन्त्र, परम जन्त्र, परम तन्त्र, परम रतन, परम जतन, परमापरम रसायण, सेवा मे सेवा, मेवा मे मेवा, जप मे जप, तप मे तप, सम मे सम, दम में दम, ज्ञान मे ज्ञान, ध्यान मे ध्यान, दान मे दान 9 लाख रटे तो 66 लाख जीवा जोणी कटे और 8 क्रोड़ 8 लाख 8 हजार 808 जाप कर ले तो वे आत्मा तीर्थकर हो जाय, ऐसा नवकार मन्त्र को मुझे भव-भव मे सरणो हो।

*** दोहा ***

एक समकित पाये बिना, तप जप किरिया फोक।
जन्म मरण मिटसी नही, समझ कहे तिल्लोक॥1॥

एक समकित पाये बिना, तप जप किरिया फोक।
जैसो छारी लीपणो, समझ कहे तिल्लोक॥2॥

एक समकित पाये बिना जप जप किरिया फोक।
जैसो नीर विलोवणो, समझ कहे तिल्लोक॥3॥

एक समकित पाये बिना जप जप किरिया फोक।

घनघाती वज्र-कर्मो का क्षय कर देते है, तब अप्रतिपाती अनावरणी अनन्त विमल केवल ज्ञान, केवल दर्शन, उत्पन्न करके अनन्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एव लोकालोक सकल चराचर के जानने और देखने वाले होते है। तिलमात्र पदार्थ भी जिन्हो से अगम्य नहीं रहते। अष्ट महा प्रतिहार्य चौतीस अतिशयवत, दुर्गति में गिरते हुए जीवो का आधाररूप, रक्षण-रूप, जगतगुरु, जगनबाधव, जगत-ईश्वर, जगत-आलम्बन, जगत-दीपक, जगत-जीव, जगत-बालेश्वर, धर्मचक्री, धर्मावतार, अनाथ के नाथ, अशरण के शरण, अत्राण के त्राता, भवसमुद्र मे जहाज समान, आनन्द आह्लाद हर्ष के उत्पादक, गन्ध हस्ती समान 363 पाखडियों का मान-मर्दनहार मवसरण त्रिगढा सहित। उस त्रिगढे का वर्णन-पहला कोट चादी का सुवर्ण के कागुरे। 1300 धनुष्यान्तर स्वर्ण का कोट रत्न के कागुरे। फिर 1300 धनुष के अन्तर रत्नों का कोट मणियों के कागुरे। प्रथम कोट के 10,000 पक्तियो, दूसरे कोट के 5-5 हजार पक्तिये, सर्व 20,000 पक्तियो का ढाई कोस ऊँचा समवसरण की रचना होती है। उस पर 12 सुगुण युत भगवत विराजमान होते है। वहाँ 12 जाति की परिषद् एकत्रित होती है। श्रावक-श्राविका वैमाणिक देव ईशान कोण मे। साधु-सध्वियाँ वैमाणिक देविये अग्नि कोण मे। भवनपति, व्यन्तर व ज्योतिषी वायु कोण मे। तीनो की देवियाँ नैऋत्य कोण मे रहे, उनमे पुरुष बैठ जाते हे और स्त्री जाति सब खडी रहती हे। तब भगवत 35 वचनातिशययुक्त सकल जीव-

समकिती जानना, वह उत्कृष्ट 15 भव अन्दर नियमा (निश्चय) मोक्ष मे जाय। ऐसा समकिती जीव चार शरण धारण करता है।

पहला शरणा श्री अरिहन्तदेवजी का, वो अरिहतदेव कैसे होते है। यहाँ से पूर्व तीसरे भव में 20 बोल मे से किसी बोल को सेवन कर तीर्थकर गोत्र बाधते है। तीन ज्ञान युक्त 14 स्वप्न देकर मातेश्वरी की कोंख में आते है। शुभमुहूर्त मे जन्म लेवे जिस कुल मे 49 पीढी पहले की और 49 पीढी पीछे की निर्मल निष्कलक होती है। उस कुल मे उनका जन्म होता है। चौसठ इन्द्र सुरगिरि पर महोत्सव करते है। 56 दिशा कुमारिकाएँ सूतक निवारण करती है। इन्द्र से भी अधिक रूपवन्त, सूर्य से अधिक तेजस्वी, चन्द्र से भी अधिक शीतल, अनन्त बली, 1008 उत्तम लक्षण के धणी। जघन्य 7 हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष शरीर वाले। जघन्य 72 वर्ष उत्कृष्ट 84 लाख पूर्व आयुष्य वाले, भोगावली कर्म उदास वालो से भोगकर आखिर प्रतिदिन 1 करोड 8 लाख सोनैया का वर्षभर दान देकर प्रतिबन्ध रहित सर्वथा सावद्य योग का प्रत्याख्यान करते है, उसी समय चौथा मन पर्यव ज्ञान की प्राप्ति होती है। घोर महा दुष्कर 2 अनुकूल, प्रतिकूल मनुष्य पशु देव सम्बन्धी कष्टो को सहन करते हुए, 12 प्रकार का कठोर तप और 17 प्रकार का विशुद्ध सयम का पालन करते है। शान्त-दान्त क्षमासागर करुणा के भडार सम्यग्दृष्टि सुमेरुवत् अचल आत्मवश करके क्षपक श्रेणि चढते हुए शुक्ल ध्यान चौथे पाये पहुँच कर

17 महाभद्र स्वामी 18 देवयश स्वामी 19 अजित वीर्य स्वामी 20 ये चार तीर्थकर पुष्करार्द्ध की पश्चिम महाविदेह विद्युत्माली मेरु के पास विचर रहे है। ऐसे जयवन्त अरिहन्त भगवन्तजी की मुझे घड़ी-घडीपल-पल समय-समय सदाकाल शरणा हो ॥1॥

दूसरा शरण श्री सिद्ध भगवन्तजी का, जिनके सकल कार्य सिद्ध हो गये वे सिद्ध भगवन्त कहाँ रहते है ? सम भूतल से 750 योजन ऊपर तारामडल आता है, वहाँ से 10 योजन ऊपर सूर्य विमान आता है। वहाँ से 80 योजन ऊपर चन्द्र विमान आता है। वहाँ से 4 योजन ऊपर नक्षत्र माल आते है। वहाँ से 4 योजना ऊपर ग्रहमाल आते है। वहाँ से 4 योजन ऊपर बुध का विमान आता है। वहाँ से 3 योजन ऊपर शुक्र का विमान आता है। वहाँ से तीन योजन ऊपर मगल का विमान आता है। वहाँ से तीन योजन ऊपर शनिजी का विमान आता है। एव भूतल से 900 योजन है, ज्योतिषी चक्र जानना। वहाँ से 1½ राजू ऊपर पहला सौधर्म और दूसरा ईशान देवलोक आते है, दोनो अर्द्धचन्द्राकार जानना। पहला देवलोक मे 32 लाख विमान और दूसरे मे 28 लाख विमान है। सख्यात योजन के विमानो में सख्यात देव सहते है और असख्यात योजन के विमान में असख्यात देव रहते है। वहाँ 2700 योजन की अगणयी ओर 500 योजन ऊँचे महल है। वह महल 100 योजन मूल मे चोडा 50 योजन बीच मे चोडा और 25 योजन ऊपर जाडा हे। 300 योजन का कोट, ऊँचा अर्द्ध योजन का कागुरा, मणिरत्नो की भीती विचित्र चित्रोकर चित्रित है। उस

हितकारिणी छ भाषा मे बाणी वागरे। सस्कृत, प्राकृत, मागधी, सौरशेनी, पिशाची और अपभ्रश, अनेकान्त, स्याद्वाद, नयागम, तत्वानुयोग द्वादशाग वाणी का प्रतिपादन करते है। बाणी की ध्वनि मेघ गर्जना-समान चार कोस पहुँचती है। उस वाणी को आर्य-अनार्य पशु-पक्षी मनुष्य देवता सर्व नि सन्देह समझे, प्रतिबोध पामे, आपस मे वैर-विरोध किचितमात्र जगे नहीं। सुनते किसी को अरुचि आती नहीं, उस जगह देवता इन्द्र चक्रवर्ती बलदेव वासुदेवादिको का अहकार उतर जाता है। ससार से उदास हो के कई सम्यग्दृष्टि, कई श्रावकवृत्ति, कई साधुवृत्ति धारण करते है और जन्म जरामरण से भय मुक्त हो के शिवपुर पाटण के अधिकारी होते है। ऐसे अरिहन्त भगवन्त वर्तमान काल मे 20 विराजमान है। श्री सीमधर स्वामी 1 युग मन्दर स्वामी 2 बाहु स्वामी 3 सुबाहु स्वामी 4 ये चार तीर्थंकर जम्बू द्वीप के सुदर्शन मेरू से दो पूर्व विदेह व दो पश्चिम विदेह में विचरते है। सुजात प्रभ स्वामी 6 ऋषभानन्द स्वामी 7 अनन्त वीर्य स्वामी 8 ये चार तीर्थकर घातकीखड द्वीप के पूर्व स्वामी 5 स्वय महाविदेह के विजय नामा मेरु के पास विचरते है। सूर प्रभु स्वामी 9 विशालधर स्वामी 10 वज्रधर स्वामी 11 चन्द्रानन स्वामी 12 ये चार तीर्थकर धातकी खड के पश्चिम महाविदेह के अचल मेरु के पास विचरते है। चन्द्रबाहु स्वामी 13 भुजग स्वामी 14 ईश्वर स्वामी 15 नेम प्रभ स्वामी 16 ये चार तीर्थंकर पुष्करार्द्ध की पूर्व महाविदेह मे मन्दिर मेरु के पास विचरते है। वीरसेन स्वामी

कुॅवर निकाल कर 32 विधि का नाटक करते है, 49 प्रकार के बाजित्रो का निर्घोष होता है। छ राग और तीस रागनियों की ध्वनि से स्वर्ग लोक गूज उठता है, एक नाटक पूर्ण होने में वहॉ पर दो घड़ी बीती समझते है और यहॉ पर दो हजार वर्ष पूर्ण हो जाते है। यहॉ सम्बन्धी सब खतम हो जाते है, तब उस देवता का स्नेह-बन्धन टूट जाता है, उस महल के चौतरफ छटादार बगीचा है, नाना प्रकार के उत्तम वृक्ष शाश्वते है, सर्व रत्नमय है। जाई, जुई, मोगरा, चमेली, कनक-लता, पदम-लता, नाग-लता छा रही है, स्वर्ण-रजत की रेती बिछी हुई है। तोरणादार अनेक छत्रियॉ है, जहाँ रत्नों के सिहासन, भद्रासन, मकरासन, गरुड़ासन, दीर्घासिन लगे हुए है। उस बाग मे नन्दापुष्करणी नामक बावडी है, जिसका वज्रहीरो का तला है। सोना रूपा की पक्तिया है। लोहिताक्ष रत्न की सन्धी है। पचवर्ण मणिमय सॉकली डोरी का अवलम्बन लगा है। शीतल निर्मल मीठा नीर भरा है। तोरण ध्वजा एव मोतियो की झालरीयुक्त बावड़ी बहुत शोभित है। वहॉ काटा-ककर, कीचड कुछ नहीं है। उस जगह बहुत देवी-देवता क्रीडा-कौतूहल करते है। दिव्य देव सुखो का आनन्द भोगते है। पृच्छा–हे भगवन् ! वह घर किसका है ? हे गौतम–जिसने दान दिया, शील पाला, तपस्या की, शुभभावना भाई, क्षमा, दया, सत्य, सन्तोष, समकित, अणुव्रत, महाव्रत जैसी उत्तम करणी की हो। उन पुरुषो का वह घर है। 'सेवभते, सेवभते, तमेव सच्चम्'–वहॉ से एक राजू ऊपर चले तब तीसरा सनतकुमार और चौथा माहेन्द्र

महल मे नागदन्ता खूँटियाँ है, जिस पर एकावली, रत्नावली, कनकावली, मुक्तावली हार लटक रहे है। सोना, रूपा की सॉकल पर छींका है, उसमे अबीर के पुडे, इतर के पुडे, तगर के पुडे, कपूर के पूडे, केशर के पुड़े, कस्तूरी के पुडे, खसखस के पुड़े, सरसब के पुडे, कुकुम के पुडे, इलायची के पुडे आदि सुगन्धित पुडे सदा शाश्वत रहते है तथा सुगन्धी धूप के धूपारणे महक रहे है। स्थभ-स्थभ पर पूतलियाँ लगी है किसी के हाथ में चामर है, किसी के हाथ मे छत्र है, किसी के हाथ मे बीजणा है, किसी के हाथ में झारी है, किसी के हाथ मे दर्पण है, किसी के हाथ मे कमल है, किसी के हाथ मे जाई-जूई मोगरा गुलाब के फूल है, किसी के हाथ मे रत्नहार है, किसी के हाथ मे पुष्पहार है। अति सुन्दर हाथ-भाव कटाक्ष-लीला से देख रही है और हँस रही है। उस महल मे उपपात शय्या है, जिस पर देव दुष्य वस्त्र ढका है। तप सयमादि शुभकरणी वाला वहाँ शय्या मे उत्पन्न होता है, एक मुहूर्त मे 50 पर्यायो को बाधकर नौजवान 32 वर्षी दिव्य शरीरी देव उठ खडा होता है। महा ऋद्धि, महा द्युति, महा कान्ति, महा सुख-सौभाग्य युक्त होता है। तब हजारो देव-देवियाँ हाथ जोड़ खमा करते हुए आते है और बोलते है—अहो महानुभाव ! आपने ऐसी क्या उच्चतर करणी की है ? जिससे आप हमारे नाथ बन के आए है। तब वह देव अवधिज्ञान द्वारा पीछे का हाल देखता है और अपनी दिव्य देवऋद्धि अपने सम्बन्धियो को दिखाने के लिए निकलने लगता है, तब देवी-देवता नाटक मे ललचा कर वहीं रोक लेते है। बाई भुजा से 108 कन्याएँ और दाहिनी भुजा से 108

लम्बा चौड़ा पूर्ण चन्द्राकार है। जम्बू द्वीप के ऊपर 7 राजू ऊँचा है, स्फटिक रत्नमय है। 2100 योजन की अगणाई और 1100 योजन का महल ऊचा है। उस महल मे एक चन्द्रवा है, उसमे 253 मोतियो का झूमका लगा हुआ है। बीच का एक मोती 64 मण का है। उनके चौतरफ चार मोती 32-32 मण के है। उनके चौतरफ 8 मोती 16-16 मण के है। उनके चौतरफ 16 मोती आठ-आठ मण के है। उनके चौतरफ 32 मोती चार-चार मण के है। उनके चौतरफ 64 मोती 2-2 मण के है। उनके चौतरफ 128 मोती एक-एक मण के है एव 253 मोतियो का झूमका 832 मण वजन का लटक रहा है। हजारो सूर्यकाति से भी उनकी कान्ति विशेष है। चारो दिशि की हवा बजने पर मोती परस्पर सघर्ष होता है। तब उनमे से छ राग तीस रागनिये निकलती हैं। चारो जाति के देवो की वीणा के मधुर राग से भी अत्यन्त इष्टकारी शब्द होता है। उस विमान में अनुत्तर वर्ण, अनुत्तर गन्ध, अनुत्तर रस, अनुत्तर स्पर्श, अनुत्तर प्रधान वस्तु मिली है। ससार का सर्व पुद्गलिक सुखो से अनन्त गुणा सुख है। किसी की मालकी नहीं, किसी की ताबेदारी नहीं, सर्व उपशान्त मोहा, सर्व समदृष्टि, सर्व आराधिक, सर्व एकाभवतारी, सर्व की स्थिति 33 सागरोपम की। 33 पखवाड़ा से श्वास लेवे, 33 हजार वर्ष से आहार की इच्छा पैदा होती है। द्वादशागी, चौदह पूर्व का पाठी वहाँ उत्पन्न होते है, कठस्थ ज्ञान का परियटन करता हुआ तैंतीस सागर पूर्ण करे, अपने ज्ञान में तल्लीन रहे, सन्देह पड़े तो वहीं पर ही

क्षमा, संतोष, सरलता और नम्रता—ये चार कर्म के द्वार है।

देवलोक आता है। तीसरे मे 12 लाख और चौथे मे 8 लाख विमान है। 2600 योजन की अगणाई और 600 योजन के महल है। शेष वर्णन पूर्ववत। वहॉ से अर्द्ध राजू ऊपर पॉचवॉ ब्रह्म देवलोक तथा वहॉ से अर्द्ध राजू ऊपर छट्ठा लान्तक देवलोक आता है। पॉचवा मे 4 लाख विमान, छठे मे 50 हजार विमान है, 2500 योजन की अगणाई व 700 योजन के महल है। वहॉ से पाव राजू ऊपर सातवा महाशुक्र देवलोक और वहॉ से पाव राजू ऊपर आठवा सहस्रार देवलोक आता है। सातवा मे 40 हजार और आठवा मे 6000 विमान है। 2400 योजन की अगणाई तथा 800 योजन का महल है। यह चारो देवलोक गागर-बेडा के आकार जानना। वहॉ से पाव राजू ऊपर नौवा आणत देवलोक और दशवा प्राणत देवलोक आता है, दोनो में विमान 400 है। वहॉ से अर्द्ध राजू ऊपर ग्यारहवा आरण देवलोक और बारहवा अच्युत देवलोक आता है। विमान दोनो मे 300 है। चारो मे अगणाई 2300 योजन की और 900 योजन का महल है। वहॉ से पाव राजू ऊपर नवग्रह वेग गागर-बेडाकार तीन तर्को में विभक्त है, विमान पहली तर्क में 111, दूसरी तर्क मे 107, तीसरी तर्क मे 100 है। 2200 योजन की अगणाई और 1000 योजन का महल ऊचा है। वहॉ से एक राजू ऊपर पॉच अनुत्तर विमान आते है। सर्व 84 लाख 97 हजार 23 विमानो मे यह विमान महाप्रधान मगलकारी है। चार दिशि मे चार विमान असख्य कोड़ा-कोड़ी योजन लबा चौडा जानना और मध्य मे सर्वार्थ-सिद्ध विमान एक लक्ष योजन

किया। दो प्रकार मोहनीय कर्म क्षय करके अक्षय गुण पैदा किया। चार प्रकार आयु कर्म क्षय करके अमर हुए। दो प्रकार नाम क्षय करके अमूर्तिगुण पैदा किया। दो प्रकार गौत्र कर्म क्षय करके अगुरु लघु गुण प्रगट किया। पॉच प्रकार अन्तराय कर्म क्षय करके अनन्त वीर्य-शक्ति सम्पन्न हुए। जहॉ काला, नीला, राता, पीला, धोला, सुरभिगन्ध, दुरभिगन्ध, तीखा, कडवा, कषायला, खट्टा, मीठा, हल्का, भारी, लूखा, चोपडिया, ठण्डा, गर्म, खरदरा, सुहाला, मंडलाकार नहीं, गोल, तिखूणा, चौखूणा, स्त्री, पुरुष, नपुसक, जन्म, जरा, मरण, दु ख, रोग, शोक, भोग, जोग, वियोग, वैरी, मित्र, चाकर, ठाकर, रग-राग, बस्ती, उजाड, भय, भावड, कर्म, भर्म, नर्म, काया, माया, कठण, हटण, पुर, पाटण, न्याय, अन्याय, हॉसी, खासी, उदासी, बिलासी, रामत, खुसामत, लाचारी, आचारी, व्यवहारी, सोवणो नहीं, जागणो, भूख, प्यास, आस, श्वास, हार, जीत, मान, मनुहार, रूसना, मनावणा, गावणा, बजावणा, हिलना नहीं, चलना नहीं, सूरज, चन्द्र, रात, दिन, उपद्रव रहित, अचल, अटल, अक्षय, आरोग्य, अजर, अमर, अविनाशी, अविकारी, अरूपी, अखड, अवेदी, अलेसी, अयोगी, अकषायी, अलख, निरजन, निराकार, निकलक, निशरीरी, सदा निश्चल ध्यान में विराजमान हे, तीन काल के इन्द्रो के सर्व सुखों से अनन्त गुण सुख, एक मे अनेक, अनेक मे एक निरूपम ज्योति मे ज्योति विराजमान है, उन सिद्ध भगवन्तजी को मुझे घडी-घडी पल-पल समय-समय भवे-भवे

रोगी की सेवा के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

रहता हुआ केवलियो से सन्दह की निवृत्ति करे। मोटा पुण्य का धणी, उत्कृष्टि आराधना का धणी। तप सयम से महा प्रतापी होते है। सर्व अधिकार सूत्र से जान जो, तहत कर मानजो, शका मत आनजो, ज्ञान-दर्शन से पहचानजो खोटी श्रद्धा मत तानजो। उस सर्वार्थसिद्ध विमान से 12 योजन ऊपर त्रसनाली के मस्तक पर सिद्ध शिला है, वह 45 लाख योजन की लम्बी-चौडी, 1 क्रोड 42 लाख 30 हजार 249 योजन कुछ अधिक परिधि वाली, समछत्र के आकार, तेल भरा दीपक के आकार, तासा वाजित्र, अर्द्ध कबीठ, पतासा के आकार की है। बीच मे 8 योजन की जाड़ी और चरमान्त मक्षिका की पख जैसी पतली है। अर्जुन स्वर्णमय उज्ज्वल, शख का तला, मुचकन्द मोगरा, चमेली का फूल, मोती का हार, चॉदी का पात्र, गाय का दूध, कमल का ततु, समुद्र का फेन, शरद का चन्द्र, दही का गॅज, चावल का आटा, स्पष्टिक रत्न से भी अनन्त गुणी ऊजली। अच्छी घटारी, मठारी, सुहाली, निर्मली, दर्शनीय, अतीव मनोहर सदाकाल शाश्वती है, उसके ऊपर एक योजन के चौबीसवे भाग में शुद्ध मनुष्य लोक के ऊपर 45 लाख योजन के गहराव मे अनन्त सिद्ध भगवन्त विराजमान है। अष्ट कर्मरूप बीजो को जला के एक समय अविग्रहपन से मुक्ति हुए है। आठ कर्मो को क्षय करके आठ गुणो की प्राप्ति की, पॉच प्रकार से ज्ञानावरण को क्षय करके केवल ज्ञान प्राप्त कर लोकालोक के स्वरूप को जाना। नौ प्रकारे दर्शनावरण क्षय करके लोकालोक के स्वरूप को देखा। दो प्रकार वेदनीय कर्म क्षय करके निराबाध अनन्त सुख प्रगट

वाचालता सत्य वचन का विघात करती है।

स्थविर भगवन्त बहुत श्रुतिजी-स्वमत परमत मे पूर्ण विशारद, प्रतिवादियो मे जयमाला प्राप्त करने वाले, जिसे विवाद मे मनुष्य तथा देवता कोई भी जीतने मे सामर्थ्यवान नहीं। अनेक ग्रन्थ, तर्क, न्याय, निक्षेप नय, प्रमाण, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग अपवाद मार्ग के विधाता, 16 उपमा युक्त तथा सर्व साधु एव महासतियॉ जी, ढाई द्वीप 15 क्षेत्रो मे विचरने वाले तिरण-तारण, अशरण के शरण, चन्द्र समान शीतल, बावन प्राण के रक्षक, ज्ञानामृत के दातार, मिथ्यामद के गालक, नव कल्पविहारी, कषाय दावानल के ठारक, भविक जन्म-सुधारक, पच महाव्रत के पालनहार, पचेन्द्री के दमनहार, छ काय के दयाल गोवाल, रक्षपाल, सात भय के टालनहार, आठ मद के गालन हार, नव बाड़ विशुद्ध ब्रह्मचर्य के पालनहार, दस यतिधर्म के धारी, बारह तप के तपनहार, 13 क्रिया के टालनहार, 17 सयम के पालनहार, 18 पापो के त्यागी, 22 परिषह के जीतनहार, 27 गुण के धणी, 30 मोहनीय कर्म के टालनहार, 33 आशातना के टालनहार, 42 दोषो को टाल आहार-पानी के लेवनहार 52 अनाचीर्ण के टालनहार ससार से अपूठा, मुक्ति के सन्मुख, आत्मार्थी, लुक्षवृत्ति, छत्ति ऋद्धि के त्यागी, महापडित, तप सयम रूप धन के धरणहार, शूरवीर धीर, शम, दम, उपशम गुण के आगर, मेरु समान अचल, सिह समान साहसिक, पृथ्वी सम क्षमावन्त, परम उदासी, परम वैरागी, कचन-ककर, ठाकर-चाकर, परसमभावी, दयाधर्म का मडनहार, हिसा-धर्म का खडनहार, न्यायपक्षी कोमल

सदाकाल शरणा हो ॥2॥

तीसरा शरण श्री साधुजी महाराज का है। वह साधुजी कैसे है–गणधरजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, स्थविरजी, बहुश्रुति जी। प्रथम गणधरजी–उप्पनेवा विणसेवा धुवेवा अर्थात् उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य त्रिपदी ज्ञान के धारक, तीनो पदो में 14 पूर्व गूथन करने वाले, निर्मल चार ज्ञान के धारक, सूर्य समान तेजस्वी, आमोसहि खेलोसहि आदि 28 लब्धियो के भडार, भगवन्त की गादी के मालिक 'अजिणे जिण सकासा' जिन नहीं पिण जिन सरीखे। आचार्यजी-पाचाचार के पालक, समकित, मिथ्यात्व और निश्चय व्यवहार के स्वरूप-दर्शक 36 गुण–युक्त जाति-सम्पन्न, कुल-सम्पन्न, बल-सम्पन्न, तप-सम्पन्न-विनय-सम्पन्न, आठ महा सपदा के धारक, चारो तीर्थ में मुकुटमणि समान, धोरी समान, सिह समान, कमल समान, हस्ती समान, शूरवीर धीर, समदम उपशम सहित, मोह ममता विषय कषाय रहित, सघ का बालेश्वर जीवन जडी समान, देवता को पिणवल्लभ लगे, कुँतिया वनभूत, ऐसे श्री गणाधिपति जिनशासन के सचालक आचार्य भगवन्त। श्री उपाध्यायजी–ग्यारह अग, बारह उपाग के पाठी, 363 मत पाखडियो के मान-मर्दक, धर्म-दीपक, अनेक जीवो को मिथ्यान्धकार से उद्धारक, महा त्यागी, वैरागी, सौभागी, कपट कितौल चपलता रहित, मधुर वचनी, करण सित्तरी, चरण सित्तरी, 25 गुणो से सुशोभित है। स्थविरजी-त्रिविध स्थविर पद के धारक, धर्म से डिगते हुए को स्थिर करने वाले, ज्ञानरूप रत्नागर समान,

समय-समय भवे-भवे सदाकाल शरणा हो।

चौथा शरण श्री केवली प्ररूपित दयाधर्म का यथा–सूक्ष्म बादर, त्रस और स्थावर, पर्याप्त तथा अपर्याप्त एकेन्द्रिय यावत् पचेन्द्रिय, किसी जीव को हनन करना नहीं, दु ख क्लेश उत्पन्न करना नहीं, यही धर्म सदा शाश्वत, ध्रुव, नित्य प्रधान, निष्कलक, कर्मशल्य का काटने वाला, दुर्गति मे गिरते जीवो का रक्षणहार, धर्म के चार प्रकार–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, ज्ञान से वस्तु के स्वरूप को यथार्थ जाने, दर्शन से वस्तु तत्त्व पर पूर्ण श्रद्धा, प्रतीत एव रुचि रक्खे, चारित्र से आगामी कर्मो को रोके, तप से पूर्व सचित कर्म का क्षय करे। मूल गुण उत्तर गुण जिसमे श्री जिनेश्वर जी की आज्ञा की प्रवृत्ति हो वही धर्म है। ऐसा धर्म माथा का मुकुट समान यावत् कलेजा की कोर समान ऐसा धर्म का आराधन करके अनन्त जीव गत काल तिर गये, वर्तमान मे तिर रहे है, आवते अनन्तकाल जीव तिरेगे तथा इसे विराधन करके अनन्त जीव गत काल मे डूबे वर्तमान मे डूब रहे है और आगामी काल मे डूबेगे। ऐसा परम पावन धर्म का मुझे घड़ी-घडी पल-पल समय-समय भवे-भवे सदाकाल शरणा हो।

पॉच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत बारह व्रत रूप गृही धर्म की विराधना की हो तो आज दिन पर्यन्त तस्स मिच्छामि दुक्कड। पॉच महाव्रत रूप निर्ग्रन्थ धर्म की विराधना की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड। गृहस्थ के 99 अतिचार और साधु के 125 अतिचारो मे से कोई अतिचार का सेवन किया

जीव न बढ़ते है, न घटते है, किन्तु सदा अवस्थित रहते है।

प्रकृति, भद्र परिणामी, 14 पूर्वी, 10 पूर्वी, श्रुत कवली, द्वादशागी मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मन पर्यव ज्ञानी, केवलज्ञानी, ऋजुमति, विपुल मति, सुमतिया, गुप्तिया, गुप्त ब्रह्मचारी, घोर ब्रह्मचारी, जघाचारी, विद्याचारी, वैक्रेय लब्धि, पुलाक लब्धि, तेजोलेशी, शीतल लेशी, अताहारी, पताहारी, लुखाहारी, तुच्छाहारी, अरसाहारी, विरसाहारी, निरसाहारी, चउथ भत्तिया यावत् छ मासिया, एकावली, रत्नावली, कनकावली, मुक्तावली, लघु सिह, वृहत् सिह, भद्र, महाभद्र, शिवभद्र, सर्वतोभद्र प्रतिमा, मोय पडिमा, जव मध्य पडिमा, वज्र मध्य पडिमा, चन्द्र पडिमा, भिक्षु पडिमा, गुणरत्न, सवत्सर, आयबिल, वर्द्धमान, कर्मचूर आदि उग्र तपस्या के करनहार, उकड्ड आसण, लगडासण, वीरासन, पद्मासन, शीर्षासिन, शिर्सासिन, गोदुहासन, दडासन आदि आसनों के करनहार, आरभ परिगह रहित, ज्ञान का भडारी, कुतिया बन भूया, चितामणि रत्न समान, कल्पवृक्ष समान, पारसमणि समान, चित्रावेली समान, जीवन जडी समान, काम कुम्भ समान, कामधेनु समान, चक्रवृर्तीका, निधान समान, माथा का मुकुट समान, हिया का हार समान, काना का कुण्डल समान, आखो की कीकी समान कलेजा की कोर समान, भवोभव मन इच्छा का पूर्णहार, ढाई द्वीप 15 क्षेत्रो मे जघन्य दो हजार क्रोड साधु-साध्वी, उत्कृष्ट नौ हजार क्रोड साधु साध्वीजी हाडा पर खूटी लगा के साधुवृत्ति पालने वाले, वीतराग भगवान की आज्ञा का आराधिक उन उत्तम पुरुषो का मुझे घडी-घडी पल-पल

असन्नी अपर्याप्ता, पर्याप्ता चार लाख तिर्यच पचेन्द्रिय चार लाख देवता चार लाख नारक और 14 लाख मनुष्य पचेन्द्रिय जीवो की विराधना की हो, कराई हो, करते हुए को अच्छा जाना हो तो एकेक जीवो के साथ 18 लाख 24 हजार 120 बार अनन्त अरिहन्त सिद्ध भगवन्त केवली की साक्षी से आज पर्यन्त या सवत्सरी सम्बन्धी तस्स मिच्छामि दुक्कड। पृथ्वीकाय की 12 लाख कुल क्रोड़ी, अप्काय की 7 लाख क्रोडी, तेउकाय की 3 लाख कुल क्रोडी, वायुकाय की 7 लाख कुल क्रोडी, वनस्पति की 28 लाख कुल , बेइन्द्रिय की 7 लाख , तेइन्द्रिय की 8 लाख कुल , चौरेन्द्रिय की 9 लख कुल कोडी, जलचर की 12½ लाख कुल , स्थलचार की 10 लाख कुल , खेचर की 12 लाख कुल , उरपर की 10 लाख कुल , भुजपर की 9 लाख कुल , मनुष्य की 12 लाख , नारकी की 25 लाख कुल देवता को 26 लाख कुल क्रोडी एव एक करोड 97½ लाख कुल क्रोडी की विराधना की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड।

18 पाप स्थानक–त्रस स्थावर जीवो की विराधना की हो। उठते-बैठते, सोते-जागते, हालते-चालते शस्त्र वस्त्र मकान तथा उपकरण उठाते धरते लेते देते अप्रतिलेखन दुष्प्रतिलेखन व अप्रमार्जन, दुप्रमार्जन सम्बन्धी कम ज्यादा या विपरीत रोतीय की, तथा आहार विहारादिक हर कार्य मे उपयोग बिना उपयोग सख्यात, असख्यात और निगोद आश्रीय अनन्त जीवो का प्राण लूटा, उन सर्व जीवो का मै अपराधी हूॅ, निश्चय रूप बदला देनदार हूॅ, सर्व जीव मुझे माफ करो, मेरी

हिसा के कटुफल को भोगे बिना छुटकारा नही है।

हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड। पृथ्वीकाय–मिट्टी मरड हिंगलु हरताल खडी, गेरू, पाण्डू, लूण हडमिच, भोडल, प्रस्तर आदि 7 लाख पृथ्वीकाय जीवो की विराधना की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड। अप्काय–ठार, ओस, हीम, गडा, धूवर, छाट, मिश्र पाणी व कुवा, निवाण, नदी, द्रह, तालाब, सरोवर आदि 7 लाख अप्काय के जीवो की विराधना की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड। तेउकाय–खीरा, भोभर, झाल, बिजली, उल्कापात, पत्थर, रगडन, चकमक आदि 7 लाख तेउकाय के जीवों की विराधना की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड। वायुकाय–उकलियावाय, मडलियावाय, गूजावाय, शुद्ध वाय, सफेद वाय, घणवाय, तणवाय आदि 7 लाख वायुकाय जीवो की विराधना की हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड। वनस्पतिकाय–लीलण, फूलण, कद, मूल, बीज, हरी, अकूरा, लता, फूल, फल आदि 24 लाख वनस्पति काय जीवो की विराधना। बेइन्द्रिय– सीप, शख, कोडी, कर्मिया लट, गिन्डोला, अलसिया, बाला, झोक आदि 2 लाख बेइन्द्रिय जीवो की विराधना। तेइन्द्रिय–जू, लीख, कीडी, मकोड़ा, चाचण, माकण, उदेई, गदेइया, धनेरिया, सुरसली, कुन्थुवा, चीचडा, चचलाई आदि दो लाख त्रिइन्द्रिय जीवो की विराधना। चौरेन्द्रिय–बग, माखी, मच्छर, डॉस, काकेडा, बिच्छू, भमरा, टीड, पतगिया, गोकडा, फून्दी, बक्तरा, मकड़ी, कसारी, आदि 2 लाख चौरेन्द्रिय जीवो की विराधना। पचेन्द्रिय–जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपर, भुजपर, सन्नी,

विकारो का पोषण किया। मन वचन काय से नवबाड ब्रह्मचर्य नहीं पाला हो तो आज दिन पर्यन्त तस्स मिच्छामि दुक्कड। जिस दिन मे विशुद्ध ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके कामवासनाओ से अलग होऊगा। वह दिन मेरा परम सौभाग्यशाली होगा। पॉचवा पाप परिग्रह—कुटुम्ब कबीला, दास-दासी, द्विपद-चतुष्पद, सोना, रूपा, वस्त्र, आभरण, क्षेत्र घरादिक पर ममता मूर्छा की, कराई अनुमोदी तथा रात्रि भोजन, अभक्ष आहारादि से सेवन किया कराया तो आज दिन पर्यन्त तस्स मिच्छामि दुक्कड। वह दिन धन्य होगा, जिस दिन मै सर्वथा माया ममता की बेड़ी से छुटकारा पाकर ससार के सब प्रपचो से निवृत्तन होऊगा। छठा पाप क्रोध—अपनी या पराई आत्मा को तपाई। सातवा मान—अहकार भाव किया हो, तीन गारव आठ मद में छका हो। आठवीं माया—ससार या धर्म कार्यों मे कपट किया हो। नोवा लोभ—आशा तृष्णा वाछा मूर्छा की हो। दशवा राग—गमती वस्तु पर स्नेह किया हो। ग्यारहवा द्वेष—बिना गमती वस्तु पर जला हो। बारहवा कलह—लड़ाई-झगडा दूगा, फिसाद किया कराया। तेरहवा अभ्याख्यान—किसी पर अछत्ता आल कलक दिया, किसी का पानी उतार फजीत किया। चौदहवा पैशून्य किसी की निन्दा की हो। पन्द्रहवा परपरिवाद—किसी का अवगुण बोला हो, गाली-गलोच दिया हो। सोलहवा रति अरति—इन्द्रिय विषयो मे रुचि की, तप सयमादि में अरुचि की। सतरहवा माया मृषा-कपट साथ झूठ बोला हो। अठारहवा मिथ्यात्व शल्य—श्री जिनेश्वर मार्ग में शका काक्षादि दोष धारण

भूल चूक अवगुण अपराध माफ करो, देवसी, राइअ, पाक्षिक, चौमासी और सवत्सरी पूर्वक मुझे बार-बार धिक्कार-धिक्कार तस्स मिच्छामि दुक्कड।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमतु मे। मित्ति मे सव्व भूएसु, वेर मज्झ न केणई॥1॥

वह दिन धन्य होगा जिस दिन मै छ काय के जीवो से वैर बदला से निवृत्ति हो सर्व चौरासी लक्ष जीव योनि को अभयदान दूगा। वह दिन मेरा परम कल्याणरूप होगा। दूसरा पाप मृषावाद-क्रोध के वश, लोभ के वश, भय के वश, हास्य के वश, झूठ बोला हो, निन्दा, विकथा की हो, कर्कश, कठोर, छेदन, भेदन, मर्म, ताडन, तर्जनकारी वचन तथा निमित्तादि प्रकाशन किया हो, इत्यादिक झूठ बोला, बोलाया, बोलते को भला जाना तो मुझे धिक्कार-धिक्कार बार-बार मिच्छामि दुक्कड। जिस दिन मै सर्वथा मृषावाद का परित्याग कर दूगा, वह दिन मेरा परम धन्य कल्याणकारी होगा। तीसरा पाप अदत्तादान-बिना दी हुई वस्तु चोर के ली हो, बडी चोरी लोक-विरूद्ध, अल्प चोरी घर सबधी, छोटे-बडे कर्त्तव्यो मे उपयोग या बिना उपयोग से चोरी करी, कराई या अनुमोदन की मन वचन काय से, तथा धर्म सम्बन्धी, ज्ञान-दर्शन-चारित्र तप भगवन्त गुरुदेव की अनाज्ञा वर्तन की हो तस्स मिच्छामि दुक्कड। जिस दिन सर्वथा अदत्तादान त्याग कर दूगा, वह दिन मेरा परम धन्य कल्याण-स्वरूप होगा। चौथा पाप मैथुन-कुशील आप सेवन किया, दूसरे से सेवन करवाया, करते को भला जाना, विषय

शरीर का आदि भी है, और अन्त भी है।

परिचय किया कराया हो, अनुमोदा से तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

कुदेव–ईश्वर, महेश्वर, ब्रह्मा, महादेव, ग्रह, गोत्रज, गणेश, दिग्पाल, क्षेत्रपाल, शीतला, बोदरी, चौथ, बीजासन, काला, गोरा, भैरू, देव, दिहाड़ी, चडी, मुॅडी, भवानी, काली, अम्बा, श्री माता, कुकडेश्वरी, भारती, ज्वालामुखी, चावण्डा, भैसा काली, एक मुखी, पच मुखी, हनुमान, पीर, पैगम्बर, काठ का, पीतल का, सोना का, चादी का, तॉबा का, लोहा का, पाषाण का, सप्त धातु का, गारा का, गोबर का, कागज का, इत्यादिको लौकिक–पणे, लोकोत्तरपणे, देव करके माना हो, पूजा हो, फल-फूल, पानी, अग्नि, धूप, दीप, केसर, चन्दनादिक से चरचा हो, चरचाया हो, चरे चरते को अनुमोदन किया हो, अर्थे अनर्थे, धर्म अर्थ, काम अर्थे, लोक अर्थ, इस भवे पर तो वोसिरे वोसिरे वोसिरे तस्स मिच्छामि दुक्कड।

कुगुरु–जोगी, जगम, भेषधारी, तापस, नागा, सन्यासी, परिव्राजक, कुल गुरु, गगा गुरु, गया गुरु, विद्या गुरु, कपिलादिक, षट् दर्शनीय, बौद्धमति, गोशाला मति, खाखी, जटाधारी, दादूपथी, नानकपथी, कबीरपथी, कुण्डापथी, रामानन्दी, राधास्वामी, निन्हव, पासत्था, उसन्ना, कुशिलिया, ससक्ता, अपच्छन्दा, नशा करे, नावे धोवे, सवारी करे, छ काय का आरम्भ समारम्भ करे, कनक-कामिणी के भोगी, जिनोक्त मार्ग से उलटे, मिथ दृष्टियो को गुरु-बुद्धि से माना हो, वन्द्या हो तो वोसिरे वोसिरे तस्स

कियो, खोटी सर्द्धना प्ररूपणा की, कराई अनुमोदन की। यह 18 पाप द्रव्य से, क्षेत्र से, काल से, भाव से, जानते, अजानते, मन वचन काय से सेव्या, सेवाया, अनुमोदन किया अर्थे, अनर्थे, ससार के अर्थ, धर्म के अर्थ, काम के वश, मोह के वश, स्ववश, परवश, दिन को, रात को, एकाएक या परिषद् मे सूता, जागता, इस भवे परभवे, सख्यात भवे, असख्यात भवे, तथा अनन्त भवो में भ्रमण करते आज दिन मिति   अनन्त ज्ञानी की साख से मुझे धिक्कार-धिक्कार बार बार तस्स मिच्छामि दुक्कड। आज दिन तक राग-द्वेष विषय, कषाय, आलस्य, प्रमादादिक, पोद्‌गलिक, प्रपच, परगुण, पर्याय की विकल्प भूल करी। ज्ञान की, दर्शन की, चारित्र की, तप की, श्रद्धा की, शील की, सन्तोष की, क्षमा की, दया की, उपशम की, विवेक की, सवर की, सामायिक की, पौषध की, प्रतिक्रमण की, ध्यान मौन नियम व्रत पचक्कखाण की, दान की, विनय की, वैयावच्च की, छ आवश्यक की, विराधना करी, कराई अनुमोदी हो तथा जिनेश्वर देव के मार्ग को लोपन किया, गोपन किया, अछत्ते की स्थापना और छत्ते की उथापना की हो तो मुझे धिक्कार-धिक्कार बार बार तस्स मिच्छामि दुक्कड। 25 मिथ्यात्व 25 क्रिया, 25 कषाय, ध्यान का 19 दोष, वन्दना का 32 दोष, सामायिक का 32 दोष, पौषध का 18 दोष, सेवन किया कराया अनुमोदन किया तस्स मिच्छामि दुक्कड। समकित के 5 दूषण–शका, कखा, वितिगिच्छा, पर पासड पससा पर पासड

बणजारा ० लूटारा ० लोहार ० सुतार ० सुनार ० कुम्भार ० चमार ० पुँवार ० तुनार ० कहार ० चिडीमार ० चरवादार ० फौजदार ० हौजदार ० तपेदार ० खेतदार ० नम्बरदार ० कालीदार ० गोलमदार ० जमादार ० तहसीलदार ० ताल्लुकादार ० सूबादार ० थाणादार ० हवलदार ० सिरस्तादार ० नाकादार ० ठेकादार ० चरखीदार ० तोपदार ० छड़ीदार ० चोबदार ० पोतदार ० किलादार ० रसोईदार ० नीलदार ० राहदार ० कुमासदार ० अमलदार ० पेशकार० मेवा का ० मेवाती ० कानूगा का ० चौधरी ० पटेल ० पटवारी ० भडारी ० कोठारी का ० बागवान० डोडीवान ० दरवान ० सरवान ० पहलवान ० पासवान ० चित्तावान ० कुत्तावान ० ऊटवान ० कोटवान ० फ्रासवान ० गाडीवान ० फेरायत० कासीद ०कलाल ० दलाल ० जलाल ० हलाल ० हमाल ० गवाल ० चडाल ० कुदाल ० मजुरिया ० खोजा ० दायी ० दारोगा ० वेश्या ० भगतण ० भडवा ० भडभूजा ० भोपा का ० भील ० भणसाली ० बोला ० बलाई ० नटवा ० पटवा ० खारोल ० ओड ० भरावा ० सिलावट ० कुमावत ० जाट ० गूजर ० गाडरी ० धोबी ० धाकड० सेणा ० मीणा ० आगड़ ० जागड ० दरजी ० कागदी ० जडिया ० पायक ० कायथ ० क्षत्री ० ठाकुर ० घोसी ० घरसाल्वो ० कुलगुरु ० ढोली ० डोम ० भाट ० भाड ० भोजक ० चारण ० जागा ० राव ० गान्धर्व ० कापडिया ० कजर ० कालवेलिया ० सासी ० ठग ० धूर्त्त ० चार ० धीवर ० माली ० महावत ० खेरादी ० कजडा ० कनफड़िया ० तमकिया बोहरा ० दासी ० दूती ० भोई ० भवाई ० रासधारी ० ब्राह्मण ० गुजराती ० ज्योतिषी ० गारुड़िया ०

मनुष्य लोभग्रस्त होकर झूठ बोलता है।

मिच्छामि दुक्कड।

कुधर्म–स्नान, दान, यज्ञ, हवन, महोत्सव, सक्रान्ति, व्यतिपात, ग्रहण, होली, दीवाली, दशहरा, पीपल, वट, तुलसी, नदी, कुवा, बावडी, सर, तालाब, देहरा, मकबरा, मस्जिद, चौताला, तीर्थयात्रा गिरी, बाग, पर्वत, आबू, गिरनार, शत्रुजय, समेत शिखर, अबोली पड़वा, भाई बीज, आखा तीज, करवा चौथ, गणेश चौथ, नागपचमी, बसत पचमी, राधन छठ, शीलसप्तमी, जन्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, गोगा नवमी, विजयादशमी, निर्जली ग्यारस, झूलणी ग्यारस, वत्स-वारस, धन तेरस, रूप चउदस, अनन्त चउदस, सोमतो, शरदरी, पर्वणी, राखी, ब्रह्मभोज, रोजा, ईद, रमजान इत्यादिक को, धर्म अर्थे काम-अर्थे मोक्ष-अर्थे स्व-वश परवश श्रद्धा हो, माना, मनाया हो, अनुमोदन किया हो तो आज पर्यन्त वोसिरे-वोसिरे तस्स मिच्छामि दुक्कड।

परभव आश्री नारकपने, तिर्यचपने, मनुष्यपने, देवपने, काजी का, मुल्ला का, कीर का, कसाई का, वागुरिया का, थोरी का, हलालखोर का, खटीक ० नाई ० तेली ० तमोली० कोली ० पचोली० गान्धी ० घाची ० मोची ० काछी ० छींपा ० रगरेज ० अगरेज ० नीलगर ० तीरगर ० सबणीगर ० डबगर ० शीशीगर ० कनीगर ० पनीगर ० दारूगर ० कुदीगर ० शाहीगर ० सोदागर ० सौरीगर ० सिकलीगर ० मच्छीगर ० फासीगर ० वादीगर ० बाजीगर० साजीगर ० निहारगर ० कठिहारा का ० मणिहार ० चितार ० लखारा ० ठठार ० कसारा ० पींजारा ० हल्कारा ०

ऐसा सत्य वचन बोलना चाहिए, जो हित, मित और ग्राह्य हो।

मूसल, ताला, कूँची, कलम, मसी, तराजू, काटा, वाट, बाट, खीला, चरखा-चरखी, रेटया-रेटी, रुछ, गाडी, रथ, वाहन, सिविका सुखपाल, नालकी, पालकी, तागो, तामझाम, हाथी, ऊँट, घोडा, गधा, नारदा, उखरड़ी, गोठ, घूघरी, ब्याव-शादी, नोगा, नुक्ता इत्यादि अल्पारम्भी, महारम्भी, हिसाकारी, सावद्यकारी, आश्रवकारी, अनर्थकारी कर्मो का अधिकरण उपकरण किया हो, कराया हो, अनुमोदन किया हो, अर्थे अनर्थे धर्म के वश, काम के वश, मोह के वश, स्ववश, परवश किया, कराया हो, अनुमोदा हो तो वह अनन्त भगवन्त केवली की साख से त्रिविधि 2 वोसिरे 2 तस्स मिच्छामि दुक्कड।

*** अन्तिम मगल ***

शिवमस्तु सर्वजगत:, परहितनिरता. भवन्तु भूतगणा:।
दोषा: प्रयान्तु नाश, सर्वत्र सुखी भवतु लोक॰॥

अर्थात्– अखिल विश्व का कल्याण हो, जगत् के प्राणी परोपकारलीन रहे। दोष नष्ट हो और सब जगह लोक सदा सुखी रहे।

॥ श्री त्रिलोक-विजय-आलोयणा सम्पूर्णम्॥

अनित्य भावना (भरत महाराज)

राजा राणा छत्रपति, हथियन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार॥

स्वयं डरा हुआ व्यक्ति दूसरो को भी डरा देता है।

डाकोत ० नाजर ० मिश्र ० भटका ० नागर वणिया ० नन्द वाणिया ० हाट वाणिया ० सेठ ० शाह ० वजाजी ० सरापी ० पसारी ० जुवारी ० राजा ० महाराजा ० युवराजा ० बादशाह ० वजीर ० हाकिम ० प्रधान ० पुरोहित ० कोटवाल ० रावल ० उमराव ० मुगल ० पठाण ० कम्पनी ० रेवाडी ० माडवी कोडबी का इत्यादि आर्य भवो में अनार्य भवो मे आरभी उपकरण आसन, वासन, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र, गाव, नगर, खेडा, गढ़, कोट, किल्ला, पोल, प्राकार, जाल, झरोखा, कागुरा, महल, गुमटी, धुड़शाल, सेतखाना, छत्री, हाट, हवेली, बगला, बुर्ज, सराय, सडक, सोना, रूपा, लोहा, तावादिक का आगर, खाई, चबूतरा, कुडाकुडी, कुवा, बावडी, तालाब, सरोवर, द्रह पाज, पक्तिया, बाग, बगीचा, वृक्ष, चौक, चौगान, चोहटा, बाजार, मेला, कौमुदी महोत्सव, नाव, जहाजा, घाणा घाणी, लील की, कोठा, कोठी, जाल, फन्द, खोडा, बेड़ी, हथकडी, साकल, भाखसी, बन्दीखाना, कठजरा, पींजरा, कारागृह, आगल, भोगल, कपाट, तलवार, कटारी, भाला, वरछी, मुद्गल, गदा, तोप, बन्दूक, तमचा, पिस्तोल, शूल, त्रिशूल, गुप्ति, धनुष, तीर, कमान, नाली, दारू, गोला, गोली, चक्र, करवत, खलबत्ता, बखतर, टोप, कुहाडा, कुहाड़ी, बसोला, बीजणा, धमणी, एरण, हथोडा, छीणी, उस्तरा, नेहरणी, दुधारी, फरसी, कुडछी, चिमटा, झारो, चमचो, खुरपो, छरपलो, चाकू, छुरा, छुरी, कैची, सूई, कूसी, कुदाला, फावड़ा, फावडी, हल, बखर, घट्टी, ऊखल,

हेम गिरा दिया गाल, दीनानाथ जी ॥5॥

अहोनाथजी !
अधर आकाश ना झेलिया,
भर भर मेलिया, ऊना ठडा भेलिया,
दीना अर्थ अनर्थ ढोल, किया अणजाण्या अघोल,
जाणे माडी भैसा रोल, दीनानाथ जी ॥6॥

अहोनाथजी !
मातासु बाल बिछोविया, घणा रोविया, दुधिया दोविया,
खोस्या नानडिया-सा बाल, पराये पेटा पाडी झाल,
तोड्या पाखियो रा माल, दीनानाथ जी ॥7॥

अहोनाथजी !
जू माकड ने मारिया, रोकिन राखिया, रस्ते नाखिया,
तडके दिया माचा मेल, ऊपर उना पाणी ठेल,
आगे होसी घणी हेल, दीनानाथ जी ॥8॥

अहोनाथजी !
सियाले सिगडी करी, खीरा भरी, चवडे धरी,
माही पड पड मरिया जीव, पाप किया निश दीव
दीधी नरका री नींव, दीनानाथ जी ॥9॥

अहोनाथजी !
उनाले वाय विजिया, फूल बिछाविया, पाणी सिचिया,
कीधी बागा माहे गोठ, खाया चूरमा ने रोट,
बाधी पाप तणी पोट, दीनानाथ जी ॥10॥

देखकर मत हँसो। किसको ? **दीन को, दु:खियों को**

आत्म शुद्धि : आलोयणा

अहोनाथजी !
पाप आलोऊ पाछला, दिन रातरा, केइ जातरा,
किया पचेन्द्रिय विनाश, मार्या गले देइ फास,
घणा खाया मद्य मास, दीनानाथजी, सगला के सग,
माफी मागू आज जी, मानो बातजी।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड ॥टेर॥1॥

अहोनाथजी !
प्राण लूटया छ कायना, कई जाण मे, केई अनजाण मे,
मै नहीं जाणी पर पीड़ा, चाप्या कुथुवा ने कीडा,
खाया पान सेती बीडा, दीनानाथ जी 2॥

अहोनाथजी !
वनस्पती तीन जातरी, केइ भातरी, छमकी सातरी,
तोड़्या पत्र-फूल, सेक्या गाजर कद मूल,
खाया भर भर लूण, दीनानाथ जी ॥3॥

अहोनाथजी !
अचार घाल्या हाथ सू, चीप्या दात सू, घणी खात सू,
माही भर्या है मसाला, खादा भर भर प्याला,
आया फुलणियारा जाला, दीनानाथ जी ॥4॥

अहोनाथजी !
पानी आलोच्या तलाब रा, कुआ बावरा, नदिया नालरा,
फोडी सरवर नी पाल, तोड़ी तरूवर नी नाल,

मै नहीं जाण्यो अज्ञानी, निदा कीधी छानी छानी,
मै नहीं धाम्यो अन्न पाणी, दीनानाथ जी ॥16॥

अहोनाथजी !
सूस किया मै मोटका, केई छोटका, किया खोटका,
छाने छाने किया पाप, सो तो देखी रह्या आप,
मारे थे छो माय बाप, दीनानाथजी ॥17॥

अहोनाथजी !
भोजन भली भली भातरा, केई जातरा, खाया रातरा,
पीधा अण छाण्या पाणी, दया दिल नहीं आणी,
पर पीड़ा न पिछानी, दीनानाथजी ॥18॥

अहोनाथजी !
सासु सोक सुहासणी, पाडोसणी, सताई घणी,
मुख सु बोली मोटी गाल, मै तो दिया कूडा आल,
रोगी तपसी बूढा बाल,
जाकी कीधी न सभाल, दीनानाथजी ॥19॥

अहोनाथजी !
स्त्री भात पडाविया, गर्भ गलाविया, जीव जलाविया,
मारी जू ने फोडी लीख, बैठी पापी रे नजीक,
नहीं मानी सतगुरु सीख, दीनानाथजी ॥20॥

अहोनाथजी !
थापण राखी पारखी साहुकार की,
कई हजार की, देता किधी खटपट, माग्या तुरत गयो नट,
कीधा सगलाई गट, दीनानाथजी ॥21॥

अहोनाथजी !
चौमासे हल हाकिया, बैल भूखा राखिया,
मार्या चाबूकिया, फोड़या पृथ्वी रा पेट, मार्या साप सपलेट,
दया नहीं आणी ठेट, दीनानाथ जी ॥11॥

अहोनाथजी !
जूना नवा कर बेचिया, सुलिया सचिया,
अनसोया दीधा पीस, इल्या मारी दस बीस,
दया नहीं अणी शेष, दीनानाथ जी ॥12॥

अहोनाथजी !
दूध, दही, छाछ, आछरा, शरबत दाखरा, केरीपाकरा,
वली घीरत ने तेल, दिया उघाड़ा ही मेल,
किडिया आई रेलम ठेल, दीनानाथजी ॥13॥

अहोनाथजी !
कूड कपट छल ताकिया, नहीं भाखिया, छाना राखिया,
बोल्या मृषावाद झूठ, धाडो पाड लाया लूट,
जत्र मत्र मारी मूठ, दीनानाथजी. ॥14॥

अहोनाथजी !
पनारी धन चोरिया, होली खेलिया, गाइ गारिया,
देख्या तमाशा ने तीज, ताल्या पाडी होय हीज,
गाल्या गाई घणी रींज, दीनानाथजी ॥15॥

अहोनाथजी !
अवगुणवाद गुरु तणा, बोल्या घणा, अणसुहावणा,

चले चलो ? कहाँ पर ? धर्मस्थान में, सत्संगत में।

वीर-स्तुति

1 गुरुदेव मुझसे पूछते है शुद्ध सयम सग्रही।
ब्राह्मण गृहस्थाश्रम-निवासी बोद्ध आदि मताग्रही॥
वह कौन है, जिसने बताया पूर्ण तत्त्व विचार कर।
तुलना रहित सद्धर्म, जग का सर्वथा कल्याणकर॥

2 उस ज्ञात नन्दन वीर का कैसा विशदतर ज्ञान था ?
कैसा सुदर्शन था तथा कैसा चरित्र महान् था ?
अच्छी तरह से जानते हो आप तो गुरुवर ! सभी।
जैसा सुना, निश्चय किया, वैसा कहो मुझसे अभी॥

3 श्रीवीर आत्म-स्वरूप के ज्ञाता तथा खेदज्ञ थे।
दुष्कर्म-कुश-नायक महर्षि अनत-दर्शक विज्ञ थे॥
सबसे अधिक यशवत, लोचन-मार्ग-सस्थित जानिए॥
उनके बताए धर्म को, उनकी धृती को देखिए॥

4 उस प्राज्ञ ने ऊची अध तिरछी दिशा में जीव जो।
जगम व स्थावर भेद से ससार मे है व्याप्त जो॥
अच्छी तरह से जान उनको नित अनित के रूप से॥
वर्णन किया वर दीप-सम सद्धर्म का समभाव से॥

5 वे सर्वदर्शी रिपु-जयी सद्ज्ञान के आगार थे।
निर्दोष चारित्री, अचल स्व-स्थित परम अविकार थे।
ससार मे सबके शिरोमणि, तत्त्व ज्ञानी ईश थे।
भय-मुक्त आयुष के अबधक ग्रथ मुक्त मुनीश थे।

6 श्रीवीर जग रक्षा-व्रती अनियत-विहारी थे प्रखर।
भव सिधु-तीर्ण अनत ज्ञानी धैर्य-धारी थे प्रवर।

मृत्यु जीवन का अतिम मूल्याकन है।

अहोनाथजी !
जप तप सयम शील रो, भणता ज्ञान रो, देता दान रो,
इण सू मोक्ष नहीं पाय, पड्यो करे हाय हाय,
रूल्यो चौरासी के माय, दीनानाथजी ॥22॥

अहोनाथजी !
माता पिता गुरुदेव तणा, अविनीत पणा, कीधा घणा,
रूलिया चौरासी रे माय, ज्यासु बाध्या वेर भाव,
खमावु निर्मल भाव, दीनानाथजी ॥23॥

अहोनाथजी !
सार करीने सभालजो, मती विसारजो, पार उतारजो,
सवत उगणीसे बासठ, सुणी मती कीजो हठ,
दर्शन दीजो म्हाने झठ, दीनानाथजी ॥24॥

अहोनाथजी !
आलोयणा ऐसी कीजिये,
कर्म छीजिये, मिच्छामि दुक्कड दीजिये,
जयपुर में जडाव, ज्यारो निर्मल भाव,
जोड किधी चित्त चाव, दीनानाथजी ॥25॥

***

अशरण भावना (भरत महाराज)

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियॉ जीव को, कोई न राखनहार।

जो वाणी निकल गई वापस नहीं आती।

मेखला से दुर्ग सारे पर्वतो मे श्रेष्ठ है।
भूदेश-तुल्य विचित्र शोभायमान अति उत्कृष्ट है॥

13 भूमध्य में स्थित पर्वतेश्वर लोक मे प्रज्ञात है।
मार्तण्ड-मडल तुल्य शुद्ध सुतेज-युत विख्यात है॥
पूर्वक्ति शोभावान बहुविध वर्ण से अभिराम है।
दर्शक-मनोहर सूर्य-सम उद्द्योत कर छवि-धाम है॥

14 जैसे महापर्वत सुदर्शन मेरु का यश लोक मे॥
तैसे जगद्-गुरु वीर का करते सुयश है लोक मे॥
ऐसे सदुपमा युक्त मुनिवर ज्ञात-पुत्र महान् थे।
सद्ज्ञान जाति, सुकीर्ति, दर्शन, शील में असमान थे॥

15 जैसे निषध है श्रेष्ठ सारे दीर्घ पर्वत-वृन्द मे॥
जैसे रुचक है श्रेष्ठ सारे वर्तुलाचल-वृन्द में॥
इस ही तरह वीर है जग मे प्रवर मति के धनी।
सब बुद्धिमानों ने कहा मुनियो मे सर्वोत्तम मुनी॥

16 ससार-तारक धर्म का उपदेश दे ससार को।
ध्याते सुनिर्मल ध्यान प्रभुकर दूर चित्त-विकार को॥
वह ध्यान निर्मलता-विषय मे श्वेत से भी श्वेत है।
जल-फेन शख शशाक के सम अत्याधिक सुश्वेत है॥

17 नि शेष कर्म-समूह को पूरी तरह से नष्ट कर।
सर्वातिवर लोकाग्र में स्थित हो गए है साधुवर।
सद्ज्ञान दर्शन शील द्वारा शुद्ध अपने को किया।
उत्कृष्ट सादि अनत मुक्ति स्थान को है पा लिया॥

18 जैसे सकल तरु-वृन्द मे तरु शाल्मली की श्रेष्ठता।
जिस पर सुपर्ण कुमार करते प्राप्त नित्य प्रसन्नता॥

ईर्ष्या मनुष्य को जला देती है।

सुविशुद्ध तपस्या के करैय्या सूर्य-पावक-तेज सम।
सद्ज्ञान का सुप्रकाश कीना नष्ट कर आज्ञानतम्॥
7 ऋषभादि जिन-वर्णित अतुल शिव-धर्म के नेता महा।
मुनिनाथ, काश्यप-वश-दीपक, दिव्य-ज्ञानी थे अहा॥
सुर लोक मे सुर-वृन्द मे प्रभु शुक्र शोभित है यथा।
मुनि वृन्द मे अति श्रेष्ठ नायक वीर शोभित थे तथा॥
8 निर्मल अनत अपार-सभूरमण सागर है यथा।
श्रीवीर भी वर-बुद्धि से अक्षय-पयोनिधि थे तथा।
भव-बन्धनो से मुक्त, भिक्षु कषाय मल से दूर थे।
देव-स्वामी शक्र-सम धृतिमान, विजयी शूर थे॥
9 वे वीर्य से प्रतिपूर्ण बलशाली जगत मे थे सही।
सब पर्वतो में श्रेष्ठतर जैसे सुदर्शन है सही॥
आनद दाता देवगण को यह सुमेरु है यथा।
नाना गुणालकृत महाप्रभु वीर जिनवर थे तथा॥
10 जिस मेरु गिरि की उच्चता का लक्ष योजन मान है।
पडगाभिध बन ध्वजायुत तीन काण्ड महान् है॥
निन्याणवे हजार योजन तुग अम्बर मे खड़ा।
है सहस्र योजन एक पूरा मेदिनी तल मे गडा॥
11 वह भूमि को आकाश को है स्पर्श कर ठहरा हुआ।
चहु ओर ज्योतिषगण फिरे फेरी सदा देता हुआ॥
है नदनादिक चार वन से युक्त कान्ति सुवर्ण-धर।
अनुभव करें रति का सदा देवेन्द्र जिस पर आन कर॥
12 वर मेरु पर्वत किन्नरो के गान से नित गूजता।
मल-मुक्त काचन तुल्य वह दैदिप्यमान सुशोभता॥

सकट की घड़ियों में मन को डावाडोल मत होने दीजिये।

ससार के सब धर्म वर निर्वाण-पद प्राधान्य है।
श्री ज्ञात नदन वीर-सम ज्ञानी न कोई अन्य है॥

25 भगवान पृथ्वी-तुल्य सर्वाधार निश्चल शक्त थे।
थे कर्म-मल से रहित, आशातीत सग्रह-मुक्त थे॥
थे सर्वदा उपयोग वाले, भीम भवदधि तैर कर।
सपूर्ण जग-जीवों के रक्षक थे, अपरिमित ज्ञान-धर।

26 श्री वीर स्वामी क्रोध को, अभिमान, माया को तथा
चौथे भयकर लोभ को, अध्यात्म दोषो को तथा॥
सारी तरह से त्याग करके हो गए अर्हन्त मुनि।
खुद पाप ना करते कभी नाही कराते है गुणी॥

27 श्री वीर स्वामी ने क्रियामत अक्रियामत को तथा।
अज्ञान विनयक पक्ष को भी जानकर के सर्वथा॥
अन्यान्य भी मत पक्ष सब समझा बुझा सम्यक् तया।
सयम-क्रिया में जन्म भर तत्पर रहे सम्यक् तया॥

28 श्रीमत तपस्वी वीर ने दु ख नष्ट करने के लिए।
झट रात्रि-भोजन मैथुनादिक पाप सारे तज दिए॥
इस लोक को, परलोक को अच्छी तरह से जान कर।
सब ही तरह सबका निवारण कर दिया शुभ ध्यान धर॥

29 अर्हत-भाषित, अर्थ पद से शुद्धतर सम्यक् कथित।
ससार-विश्रुत धर्म को सुनकर सदा जो हो मुदित॥
श्रद्धा करे जो धर्म पर वे देवपति हो जायेगे।
वा आयुकर्म-विमुक्त होकर सिद्ध पद को पायेंगे॥

***

सारे वनो मे नन्दनाभिध ही महावन श्रेष्ठ है।
इस ही तरह से वीर, ज्ञान सुशील से सुश्रेष्ठ है॥

19 जैसे घनाधन-गर्जना सब शब्द मे उत्कृष्ट है।
जैसे कलानिधि चन्द्रमा नक्षत्र-गण मे श्रेष्ठ हैं॥
जैसे सुगधित वस्तुओ में मलय चदन श्रेष्ठ है।
तैसे अकामी वीर सारे साधुओं में श्रेष्ठ है॥

20 जैसे स्वयभू सागरो में श्रेष्ठ कहलाता महा।
सब नागवशी देवगण मे श्रेष्ठ धरणिद्र को कहा॥
सारे रसो मे इक्षु रस की श्रेष्ठता विख्यात है।
तप-पुंज द्वारा वीर की भी श्रेष्ठता यो ज्ञात है॥

21 सारे गजो मे श्रेष्ठ है गजराज ऐरावत यथा।
पशुओं में निर्भय केशरी नदियो मे गगा है यथा॥
सब पक्षियो में वेणुदेव सुवैनतेय महान् है।
निर्वाणवादी-वृन्द में प्रभु वीर ही परधान है॥

22 सब शूर-वीरो में अधिकतर विश्वसेन प्रसिद्ध है।
सारे सुगधित-पुष्प-चक्र में श्रेष्ठतर अरविद है॥
सब क्षत्रियो में श्रेष्ठ जैसे दान्त वाक्य सुधीर है।
सब साधुओ मे श्रेष्ठ तैसे वीतरागी वीर है॥

23 सम्पूर्ण दानो में अभय सद्दान ही है श्रेष्ठतर।
निरवघ सत्य ही सत्य वचनो मे कहा है श्रेष्ठतर॥
जेसे तपो में श्रेष्ठता है विश्व विश्रुत शील की।
तैसे जगत में श्रेष्ठता मुनि, ज्ञात नन्दन वीर की॥

24 दीर्घायु वाले देव-गण मे श्रेष्ठ पचानुत्तरी।
सारी सभाओ मे सुधर्मा श्रेष्ठ है मगलकरी॥

भजन संग्रह
संघ समर्पणा गीत
नानेश चालीसा
रामेश चालीसा
एवं
स्तवन आदि

खम्मा खम्मा ओ महावीर भगवान ने

(तर्ज खम्मा खम्मा ओ कुवर अजमान रा)

खम्मा खम्मा ओ महावीर भगवान ने।
त्रिशला के बाल सिद्धार्थ रे लाल ने।।टेर।।

चैत सुदी तेरस ने थे तो, कुडलपुर मे जन्म्या हो।
तीन लोक मे कीर्ति छाई, सुर नर सारा नमग्या हो।।
तीस वर्षा सू त्याग्यो परिवार ने-महावीर ।।

सगम देवता तो था पर, उमड़ घुमड कर आया हो।
पगा ऊपर खीर रॉधी, काना खिला ठाया हो।।
तो भी न डोल्या ध्याया शुक्ल ध्यान ने-महावीर ।।

पापीड़ो गोशाला दोय, सता ने जलाया हो।
चण्ड कोशियो भी आकर, डक लगाया हो।।
थे तो पहुचाया बाने स्वर्ग धाम मे-महावीर ।।

इन्द्रभूति ग्यारह गणधर चर्चा करवा आया हो।
चन्दना रा बधन टूट्या, थारा दर्शन पाया हो।
बारह वर्षा सू पायो, केवलज्ञान ने-महावीर ।।

मुनि अगर श्रेणिक राजा ने, समकित में चमकाया हो।
नवमल्ली नवलच्छी राजा, पोषा करवा आया हो।।
काती अमावास पहुच्या निर्वाण मे-महावीर ।।

राम गुरु के दर्शन से, होत कर्मो का नाश।
ज्ञान ध्यान में वृद्धि होवे, पावे अविचल वास।।

किसी को दुःख मत दो, किसी का अपमान मत करो।

नवकार मंत्र है महामंत्र

(तर्ज दिल लूटने वाले जादूगर)

नवकार मत्र है महामत्र, इस मत्र की महिमा भारी है।
आगम मे कही गुरुवर से सुनी, अनुभव में जिसे उतारी है।।टेर।।

अरिहताण पद पहला है, अरि आरति दूर भगाता है।
सिद्धाण सुमिरण करने से, मन इच्छित सिद्धि पाता है।।
आयरियाण तो अष्ट सिद्धि, नव निधि के भडारी है।।1।।

उवज्झायाण अज्ञान तिमिर हर, ज्ञान प्रकाश फैलाता है।
सव्वसाहूण सब सुख दाता, तन मन को स्वस्थ बनाता है।।
पद पाच के सुमिरण करने से, मिट जाती सकल बीमारी है।।2।।

श्रीपाल सुदर्शन मेणरया, जिसने भी जपा आनद पाया।
जीवन के सूने पतझड़ में, फिर फूल खिले सौरभ छाया।।
मन नन्दन-वन में रमण करे, यह ऐसा मगलकारी है।।3।।

नित नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहनाती।।
अशोक मुनि जय विजय मिले, शाति प्रसन्नता बढ जाती।।
सम्मान मिले, सत्कार मिले, भव जल से नैया तारी है।।4।।

सत्य हमेशा स्थिर रहता है और झूठ के पॉव नही होते, इसलिए सदा सत्य बोलना चाहिए।

तेरहवा विमलनाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी-2
चौदहवा अनन्तनाथ देव चेतनजी॥
पन्द्रहवा धर्मनाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी-2
सोलहवा शान्तिनाथ देव चेतन जी॥
सिद्धा जैसो जीव हे सुणो चेतन जी-2
काटो करम री कार चेतन जी॥
सतरहवां कुन्थुनाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी-2
अठारहवा अरनाथ देव चेतन जी॥
उन्नीसवा मल्लिनाथ बान्दस्या सुनो चेतन जी-2
बीसवा मुनि सुव्रत देव चेतन जी॥
थारी ओ निर्मल आत्मा ओ सुनो चेतन जी।
कर्म मलिनता निवार चेतन जी॥
इक्कीसवा नमिनाथ बान्दस्या सुनो चेतनजी-2
बाईसवा अरिष्टनेमि देव चेतन जी॥
तेईसवा पारसनाथ बान्दस्या सुनो चेतनजी-2
चौबीसवा महावीर स्वामी देव चेतन जी॥
आतम ने थे ओलखो सुनो चेतनजी-2
करो समीक्षण ध्यान चेतन जी॥
अनन्त चौबीसी ने बान्दस्या सुनो चेतनजी-2
बीस विहरमान देव चेतन जी॥
ग्यारह ही गणधर बान्दस्या सुनो चेतनजी-2
तिरण-तारण गुरुदेव चेतन जी॥
आत्म शुद्धि रो मूल है सुनो चेतन जी-2
प्रतिक्रमण सुखकार चेतन जी॥

आओ नी निज घर मांय चेतन जी

तर्ज पणिहारी

हाथ जोडी ने करा विनती ओ सुनो चेतन जी-2
आओ नी निज घर माय चेतनजी ॥टेर॥
पहला ऋषभनाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी-2
दूजा अजितनाथ देव चेतनजी ॥
तीजा सभव नाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी-2
चौथा अभिनन्दन देव चेतन जी ॥
भटक रह्या कद सु अठे, सुनो चेतन जी -2
निज घर सुख री ठोर चेतन जी ॥
पाचवा सुमतिनाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी-2
छठा पद्म प्रभु देव चेतन जी ॥
सातवा सुपार्श्व नाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी -2
आठवा चन्दा प्रभु देव चेतन जी ॥
बन्दी बण्या जग जाल में ओ सुनो चेतन जी ॥
मुक्त बणो अविकार चेतन जी ॥
नवा सुविधिनाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी-2
दसवा शीतलनाथ देव चेतन जी ॥
ग्यारवा श्रेयासनाथ बान्दस्या ओ सुनो चेतन जी-2
बारहवा वासुपूज्य देव चेतन जी-2
मोह भावा री तोडो प्रीतड़ी ओ सुनो चेतन जी-2
शक्ति पिछाणो नी आज चेतन जी ॥

बहनां सुणो तो सही

बहना सुणो तो सही ए, बहिना सुणो तो सही।
रामजी दयाल ज्याने भूल क्यो गई॥टेर॥

घर मे बाता बाहिर बाता, बाता पाणी जाता।
ए बाता थारी जभी मिटेली, यम मारेगा लाता॥ब ॥

पाच भाई भेला रहे तो लागे घणा प्यारा।
ज्यो बहिना रा दाव लागे, कर दे न्यारा न्यारा॥ ब ॥

अकेली ज्यो बाई हो, तो खायोड़ी नहीं खूटे।
पाच बाया भेली हो तो, घर भाग ने ऊठे॥ ब ॥

लडवाने तो शूरी पूरी, राम भजन में माठी।
जवाया री गाल्या गावा जावे शहर में नाठी॥ ब ॥

छाछ घालता छाती फाटे, दूध घालता दोरो।
रोटी देता आवे रोवणो, झूठ बोलवो सोरो॥ ब ॥

एरन की तो चोरी करे, करे सुई को दान।
ऊची चढ चढ बहिना देखे, कब आसी विमान॥ ब ॥

एड़्या निरखे चाल निरखे, ये बहिना रा चाला।
कहत कबीरा सुणज्यो बहना, जम करसी मुह काला॥ब ॥

समय से पहले और भाग्य से अधिक
किसी को कुछ नहीं मिलता।

थे रोकड रोज मिलावो

थे रोकड़ रोज मिलावो भव जीवा ।।टेर।।

कितनी आज मै करी सामाईक, कितनी फेरी माला।
कितनी आज मै करी ठगाया, कितनी बोली गाल्या ।।

कितनी आज दया मै पाली, कितनी हसी टाली।
कितनी आज साच मै बोली, कितनी गप्पा मारी ।।

कितनो आज तीजो व्रत पाल्यो कितनी चोरी कीनी।
कितनो आज शील मै धायो, कितनी बुद्धि विषय में दौड़ी ।।

कितनी आज करी सत् सगत, कितनी परहित दौड़ी।
कितना व्रत पच्चक्खाण बन्धाया, कितना मूल मै तोड़ी ।।

जमा की कलमा लिखो जमा मे नामा की नामा मे।
गडबड़ गोटा भूल न राखो, तो दु ख पड़े न थाने ।।

दिनो दिन नामा की कलमा, हलकी करता जानो।
खूब बढाओ जमा बाजू तो अविचल सुख थे पावो ।।

द्रव्य रोकड में गड़बड़ हो तो हथकड़िया पड़ जावे।
जो कदाचित् ना पड़े तो पोल चलन नहीं पावे ।।

लेखो राई राई को भई परभव मे पूछेला।
धन्ना मुनि ढाल रची मन रगी आत्म सुख पावेला ।।

राम गुरु कृपा करो, दो मुझे सद्गुण ज्ञान
आपके पुण्य प्रताप से, सूरज पाऊँ निज ठाम ।।

पालणियो

पालणियो परतख घड़ियो, ओ रुडा रत्ना जडियो।
माय सोने री साकल री कड़िया ओ पालणियो झूलो॥
ओ महावीर प्रभु झुलो॥टेर॥
रेशम डोर रगी आ तार-तार चगी।
माही कली कली करी रगी॥ ओ महावीर प्रभु
देव आज्ञा देवे माता जी हेलो गावे।
माता त्रिशला दे हुलरावे॥ ओ महावीर प्रभु
पगा पायल बाजे घूघरिया रूठा रण के।
प्रभु चाले चतुराई रे ठमके॥ ओ महावीर प्रभु
बालक रूठा जावे माताजी लारे जावे।
माता बेगा मनाय घर लावे॥ ओ महावीर प्रभु
बालक मोटा होसी स्कूल पढवा जासी।
माता-पिता री आश पूर्ण करसी॥ ओ महावीर प्रभु
सखी सहेलिया साथे वो पट पट हाटे।
ले जावे नदी॥ ओ महावीर प्रभु
सरस हस मैना कोयल मृदु बैना
देख्या ठरे माताजी रा नैना॥ ओ महावीर प्रभु
पालणियो परतख घड़ियो ओ चित धरियो।
मुनि माणिक चन्द गुण गायो॥ ओ महावीर प्रभु
जो पालणियो गासी सदा ई सुख पासी।
ज्यारे मुक्ति तणा सुफल पासी॥ ओ महावीर प्रभु

भाया ध्यान तो धरो

भाया ध्यान तो धरो रे, भाया ध्यान तो धरो।
मानुष जनम पा काई तो करो।।टेर।।

बिना बाजबी फिरता डोलो, पढो न अक्षर एक।
मूर्खों की इस देश मे सरे किण राखी है टेक।। भा ।।

लाल केश्या ख्याल तमाशा गाता लाज न आवे।
ऐसा कपूत छोरा-छोरी कुल के दाग लगावे।। भा ।।

आखो दिन थे गाल्या काढो, मा बहिना नहीं देखो।
अणी कर्म सू भगवत के घर थे कद देख्यो लेखो।। भा ।।

अमल तमाखू भाग गाजो, दारु खूब उड़ाओ।
अधगेल्या थे होकर फिर भी, मूछा ताव लगाओ।। भा ।।

लुगाया री गाल्या सुणकर घणा खुशी हो जाओ।
थाकी ऐबा सन्मुख आवे, थे क्यू नहीं शर्माओ।। भा ।।

सत ने सामो रखकर भाया, चोखो गेलो चालो।
प्रभु भजन व जग सेवा कर, अमर नाम कर डालो।। भा ।।

राम कृष्ण महावीर प्रभु की, हरदम महिमा गाओ।
प्यारे भाइयो दुनिया में क्यू वृथा जन्म गमाओ।। भा ।।

अगर थोड़ी भी हमदर्दी है, अपने समाज के प्रति।
मरघट बनने से पहले, मानवता का मदिर बना डालो।।

इनसे हमेशा बचो—बुरी संगत, स्वार्थ, निंदा

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथो में।
है जीत तुम्हारे हाथो मे, और हार तुम्हारे हाथो मे।।टेर।।

मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हे पा जाऊँ मै।
अर्पण कर दू दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथो में।।

जो जग में रहू तो ऐसे रहू, ज्यो जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हो, करतार तुम्हारे हाथो मे।।

यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणो का पुजारी बनू।
इस पूजक की एक एक रग का, हो तार तुम्हारे हाथो में।।

जब जब ससार का कैदी बनू, निष्काम भाव से कर्म करू।
फिर अत समय मे प्राण तजू, निराकार तुम्हारे हाथों मे।।

मुझमें तुझमे बस भेद यही, मै नर हूँ तुम नारायण हो।
मै हूँ ससार के हाथो में, ससार तुम्हारे हाथो मे।।

जीवन की हर श्वास को, सार्थक कर डालो तुम।
क्योकि इन श्वासो पर, पल भर का भी विश्वास नहीं है।

पंख होते तो उड़ आती सिमंधर भगवान

पख होते तो उड़ आती रे, सिमधर भगवान।
आके दर्श तुम्हारा पाती रे, सिमधर भगवान।।टेर।।

महा विदेह मे आप विचरते, चौसठ इन्द्र सेवा में रहते।
एक करोड है देव शरण मे, सुर नर इन्द्र भी वदन करते।।

जल बिन जैसे मछली है तड़फे, बिन बादल के मोर है तरसे।
चदा यह सदेश तू कहना, तुम दर्शन बिन मन मेरा तरसे।।

राहो में नदिया सागर है बहते, कोस हजारो दूर आप रहते।
लोक अलोक के ज्ञाता तुम्हीं हो, दु खी जनो के दु ख आप हरते।।

तुम मेरे मन में बसे हो तन मे, ध्यान धरू हर घडी पल छिन मे।
गुण तेरा सदा ही गावे हो के दिवानी तेरी लगन मे।।

◆◆◆

ससार भावना (मल्लिनाथ भ.)

दाम बिना निर्धन दु खी, तृष्णावश धनवान।
कहूँ न सुख ससार में, सब जग देख्यो छान।

बड़ी मंगलिक

अष्ट लब्ध नव निध भडार गौतम सुख सपत दातार।
प्रभाते उठ लीजे नाम, जो मनवाछित सीजे काम॥
मत्र माहे मोटो मत्र ते, सुण्या होय कान पवित्र।
चवदह पूरबस केरो सार, प्रहर उठी समरो नवकार॥
अणी मत्र सु नहीं आवे आपदा, अणी मत्र सु नहीं दु ख आवे क्दा।
वेरी विखम पाव पड़े, जे नर उज्जड अटवी माहे पडे॥
भोजन वेला पेली एक, दुर्गत पड़ता राखो टेक।
अरिहत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्व साधुतणा लागू पाय॥
ज्ञान दर्शन चारित्र तप सार, ये नव पद जीजे भवनो पार।
श्रीपाल मैना अधिकार, सुन जो सुतर के अनुसार॥
चौबीस तीर्थंकर ने नमु भव भव ना ये पातक दयू।
महावीर जी को शासन लेई, धर्म में उद्यम कर जो सई॥
धर्म से धन होवे भडार, धर्म से दूर नासे काल।
कान कहे वचन रसाल सुनजो, जीव दया प्रतिपाल॥

नवकार-महिमा

मन्त्र बडो नवकार, सदा साकडो उबारे।
मन्त्र बडो नवकार, ताव तेज रो निवारे॥
मन्त्र बड़ो नवकार, रहे भाग भडार भरपूर।
मन्त्र बडो नवकार, कायर भी होवे सूर।
मन्त्र बडो नवकार, रोग आपदा टाले।
मन्त्र बडो नवकार, सुगत के सुख मे मेले।
पिगल पढे न फारसी पढे न गीता छद।
एक नवकार मत्र के गण्या पीछे नितको करो आनद।

क्या करूं नाथ मुझे कर्मों ने घेरा

मै क्या करू नाथ, मुझे कर्मो ने घेरा ।।टेर।।

ज्ञान पढू तो मुझसे पढा नहीं जाये।
सिर पचाऊँ पढू, फिर भूल जाऊँ ।।
मिटाओ अज्ञान, मुझे कर्मो ने घेरा ।। 1 ।।

सामायिक करू तो मुझसे बैठा नहीं जावे।
पैर दुखे कमर दुखे जिया घबरावे ।।
चाहूँ मैं आराम, मुझे कर्मो ने घेरा ।।2।।

माला फेरू तो मन घूमने को जावे।
उसे समझाऊ तो नींद आ जावे ।।
कैसे जपू जाप, मुझे कर्मो ने घेरा ।।3।।

उपवास नहीं होवे मुझसे आयबिल नहीं होवे।
एकासना करू तो शाम भूख लग जावे ।।
चाय नहीं छूटे, मुझे कर्मो ने घेरा ।।4।।

पुण्य नहीं होवे, मुझसे पाप नहीं छूटे ।।
देने के नाम से पेट मेरा दु खे ।।
दयाल हो विश्वास, मुझे कर्मो ने घेरा ।।5।।

जब तक तुम्हारे धवल व्यक्तित्व मे विलीन है अस्तित्व हमारा,
उन्नति पथ पर यह चरण भी तभी तक बढता रहे हमारा ।।

कान अच्छा नहीं लगता—ज्ञान बिना।

स्तवन सात वार का

रविवार दिन भोली दुनिया, मनुष्य जमारो पाय जी।
छ काया री आरभ करता, गयो जमारों हारजी॥

सुणो सुणो भवियण जिण जी री वाणी, महापुरुषा री।
मीठी वाणी, सत्गुरु सा री साची वाणी, आ वाणी वीतरागरी॥

सोमवार रे सुता मूरख, मन मतवाली नींद जी।
काल सिरहाने आय खडो जिम तोरण आयो बींद जी॥सुणो

मगलवार रे मगलाचार, दया धर्म सु प्रेम जी।
सामायिक प्रतिक्रमणो करतो, लाहो ल्यो नित नेमजी॥सुणो

बुधवार री बलि अवस्था, बुढापो दु ख दाय जी।
बैठ खाट पोल के अदर, पड़ियो करे विलाप जी॥ सुणो

बृहस्पतिवार ने विखो पड़ियो, कोई न मेटनहार जी।
मात पिता री करो बदगी, जिम उतरो भव पार जी॥ सुणो

शुक्रवार रे शुक्राचार, जासी शिवपुर माय जी।
अनत सुखा में डेरो दियो, ज्यारो हुसी खेवो पार जी॥सुणो

थावरवार रे थिरचा हुसी, हूँ धनवन्त नार जी।
सेर सेर सोना पहरती, मोत्या मरती भारजी॥सुणो

ए सातुवार सदा सिमरीजे, आ सतगुरु की सीख जी।
ए सातुवार नित नित समरिया हु जासी खेवो पारजी॥सुणो

समय गोयम मा पमायए। समय मात्र भी प्रमाद मत करो।

बेटा सरवण पानी पिलाय

बेटा श्रवण पानी पिलाय, वन माई प्यास लगी।
लाला श्रवण पानी पिलाय, वन माई प्यास लगी।
आला गीला बास कटाया, कावड लीनो बनाय।
माता-पिता ने माय बैठा के, श्रवण तीर्थ करवा जाय।।
ना कोई कुआ बावडी रे, ना कोई समद तालाब।
माता-पिता ने प्यास लगी है, आछी करी रे भगवान।।
ऊचा नीचा कदमा ऊपर, बगुला उड़ उड़ जाय।
जब श्रवण मन मे जाणियो रे, अब जल लाऊ मोरी माय
ले झारी श्रवण चालियो रे, आयो सरयू के पास।
जाय नीर झिकोलियो रे, तब दशरण जी छोड़ियो बाण।।
चक्कर खाय धरती पर पड़ियो, मुख से राम उच्चार।
तब दशरथ जी मन मे जाणियो रे, हे कोई भगत सुजान।।
पड़ते श्रवण यू कह्यो रे, थे सुणो हमारी बात।
प्यासा है म्हारा माता-पिताजी, यो जल दीज्यो बाने पाय।।
इतना कहकर श्रवण का अब, छूट गया प्राण।
हाय हाय दशरथ जी बोलिया, आछी करी रे भगवान।
ले झारी दशरथ चालियो रे, आया कावड के पास।
ऊबो सरवण अर्ज करे यो, जल पीवोनी मोरी माय।।
ना सरवण की बोली कहीजे, ना सरवण की चाल।
यो जल म्हे नहीं पीवा रे, हो गयो जहर समान।।
तुलसीदास भजो भगवान, हरी सु हेत लगाय।
बुढा बुढी स्वर्ग सिधाविया, दशरथ ने दियो है सराप।।

नाक अच्छा नहीं लगता—इज्जत बिना।

संयम-सुखकारी

तर्ज होवे धर्म प्रचार

सयम सुखकारी, तू धार सकेतो धार सयम सुखकारी ।।टेर।।
कर्म बन्ध का काम नहीं है, करो धर्म बस काम यही है।
छूटे पाप अठार, सयम सुखकारी ।।
रोटी कपड़े री नहीं कोई चिता, पीसण पोवण का छूटे फदा।
सीधो मिले तैयार, सयम सुखकारी ।।
एक जगह नहीं बधकर रेहणो, देश दिशावर खूब विचरणो।
खूब करो उपकार, सयम सुखकारी ।।
त्याग तपस्या करो कराओ, भव सागर से तिरो तिराओ।
दोनो लोक सुधार, सयम सुखकारी ।।
ज्ञान ध्यान की खूब कमाई, ब्रह्मचर्य की ज्योति जगाई ।।
दिन दिन बढे अपार, सयम सुखकारी ।।
चार गति का रुलना छूटे, जन्म मरण का दु खड़ा छूटे।
आनन्द का भडार, सयम सुखकारी ।।
वीर जिनेश्वर मुख से बोले, सारी दुनिया दु ख में झुले।
एक सुखी अणगार, सयम सुखकारी ।।
दुनिया वदना करी लुली ने, खम्मा खम्मा बोले घणी ने।
बोले जय जयकार, सयम सुखकारी ।।
लालमुनि जी रिद्धि-सिद्धि त्यागी, सब परिवार बणियो वैरागी।
लीनो सयम भार, सयम सुखकारी ।।

लाखीणी थारी जिन्दगी

लाखीणी थारी जिन्दगी, थे एक कोड़ी मे गमाई रे।
छोडी ने हीरो लाखीणो, थे ककरिया चुगण मे गमाई रे ।।टेर।।
मत कर तू थारो मारो अठे-अठे हा अठे पड़यो रे जावेला।
माल खजाना सु भरी रे तिजोरी थारे-2 हा थारे काम नहीं आवेला ।।
खावेला दूजो मालडो तू भेलो करीने जो जावो ।।लाखीणी
इण जग री आ रीत यही जो आवे-2 आवेला सो जावेला।
बोवे है तू बीज आकडो आबो-2 अरे आब कठे सू पावेला हा ।।
मीठी सी थारी बोलडी, थे तीखी छुरी क्यू चलाई रे ।।लाखीणी
बालपणो हस खेल गमायो यौवन-2 अरे यौवन दास लुगाई रो।
बुढापे मे डगमग डोले भाई-2 हॉ रे भाई नहीं है भाई रो ।।
ससारी नाता जोड़ने थे साची रहा भुलाई रे।। लाखीणी

रसना का स्तवन

रसना मतवाली, तू बिना विचारी मत बोल ।।टेर।।
पर निन्दा मे प्रसन्न घणी, तू कलह करावन हार।। रसना
सज्जन स्नेही मैत्री करे, तू भेद पडावन हार।।रसना
खावा मे बड़ी चटोकडी, तू भ्रष्ट किया नरनार।।रसना
बात बिगाड़े बोल ने, तू खाय बिगाडे आहार।।रसना
'खूबचन्द मुनि' विनवे तू ज्ञानी का गुण लेवनहार।।रसना

तीन लोक नव खण्ड मे, गुरु से बड़ा न कोय।
जो कर्त्ता न कर सके, सद्गुरु से सब होय।।

चिन्ता नही, चिंतन करो

गर्भावास में ऊधो लटक्यो, नौ महीना गू-मूत में लपट्यो।
पडयो अग-सिकोड, दुनिया ॥

नरक गति का दु ख अनता, छेदन भेदन खूब करता।
शीला पर देत पछाड, दुनिया ॥

तिर्यच गति का दु ख अपारा, मरता डरता भगे विचारा।
दु ख सू पाड़े राड, दुनिया ॥

जो सुख चाहो दुनिया छोड़ो, सयम से तुम नाता जोडो।
पाप कर्म सब छोड, दुनिया ॥

घर मे बेटा पोता-पोती, दादी रसोई न्यारी करती।
दु ख सू कापे हाड, दुनिया ॥

कोई के घर में नव दस बेटा, परण्या न्यारा हो गया मोटा।
बुड्ढो कमावे दौड़, दुनिया ॥

❖❖❖

एकत्व (नमिराजर्षि)

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यो कबहूँ या जीव को, साथ सगो न कोय।

दुनियाँ दुःखकारी

दुनिया दु खकारी, तू छोड सके तो छोड़ ॥टेर॥

पाप अठारह करना पडता, पाप कर्म भी बढता जाता
कर्म बध की ठौड, दुनिया ॥

पेट पापियो खूब सतावे, देश दिशावर मे भटकावे।
करनी दौडा दौड़, दुनिया ॥

कोई के घर में पुत्र कस सा, कोई के घर मे नार कर्कशा।
होती माथा फोड, दुनिया ॥

कोई के घर मे सासू लड़ती, नणद भोजाई झगड़ा करती।
बोले कड़वा बोल, दुनिया ॥

लडकी मोटी वर नहीं मिलियो, कोई को वर खोटो मिलियो।
गयो दिशावर छोड, दुनिया ॥

घणी बेटिया दु खड़ो मोटो, इज्जत रखणी धन रो टोटो।
पुत्र मर्‌यो दिल तोड, दुनिया ॥

मन रो चायो कुछ नहीं होवे, जो नहीं चावो वो झट होवे।
जग में मोटी खोड, दुनिया ॥

तन मे मन मे लगी बीमारी, रोग शोक से दु खियॉ भारी।
जीव झुरे चउ ठोड़, दुनिया ॥

जन्म मरण का दु ख अनता, दु खड़ा जैसे सुई चुभन्ता।
साढा तीन करोड़, दुनिया ॥

धन्ना - ठीक समय पर तूने सजनी, सोता सिह जगाया।

ले आज बता दू मेरी माँ ने, कैसा दूध पिलाया-2।

नारी को, दुनियादारी को, यह चला मै ठोकर मार के।

अब सयम पाल दिखाऊगा ॥ सुन सजनी ॥

सुभद्रा - स्वामी ! स्वामी ! कहॉ जाते हो, हसी को साच न मानो।

फिर से ऐसा ! नहीं कहूगी, मानो मानो मानो -2॥

हो स्वामी एक बार बस मानो॥

यह तेरी, चरणों की चेरी, इसे कर दो क्षमा प्रदान तुम।

यो मत छोड चले जाओ ॥ सुनो स्वामी ॥

धन्ना - वचन बाण का घायल शूरा, लौट कभी ना आये।

चाहे हो बलिदान प्राण का, अपनी टेक निभाये॥

हो भागिनी अपनी टेक निभाये॥

जाऊगा, बस अब जाऊगा, मै कठिन तपस्या धार के।

मुक्ति महल ही जाऊगा ॥ सुन सजनी ॥

कवि- प्रणपालक अहो शूर शिरोमणि, धन्य है धन्ना तुमको।

इतिहास तुम्हारा पढ पढ होता, गर्व हमारे दिल को॥

हो धन्ना ! गर्व हमारे दिल को॥

जय रमणी ! धन तेरी जननी ! जिसने जना है तुझसा पूत रे।

पारस तेरे गुण गाए॥

धन्ना सुभद्रा संवाद

(तर्ज मन डोले मेरा मन डोले)

धन्ना - सुन सजनी, सच कह कथनी, तेरा मुखडा आज उदास क्यो ?
यह बहती आसू धार क्यो ? ॥टेर॥

शालिभद्र सा जिसका भाई, उसके भाग्य सवाये।
फिर भी अचरज होता मुझको, नयन नीर क्यो आये-2॥
कह सजनी, सच कह कथनी, तेरा मुखडा आज उदास क्यो॥1॥

सुभद्रा -सुनो स्वामी सच यह कहानी, मेरा मुखड़ा आज उदास यू।
यह बहती आसू धार यू-2॥टेर॥

भैया ने वैराग्य रग में, कामभोग बिसराया।
नित प्रति इक भाभी छिटकाता, योग उसे मन भाया-2॥
समझाया, पर समझ न पाया, सुन स्वामी आज उदास यू॥यह ॥

धन्ना - कायर सुनरी तेरा भाई, इक इक नारी छोड़े।
सिहनी जाया शूर वीर तो, एक साथ मुह मोड़े-2।
जो करना, वह धीरे करना, यह तो अबला रीत री॥
यह पुरुषो की रीत नहीं॥ सुन ॥

सुभद्रा - कह दिखलाना सरल है स्वामी, उसमें जोर न आये।
वह जननी का सच्चा जाया, जो करके दिखलाये-2॥
धन-जन को, दुल्हन बधन को, सब त्याग के सयम धारना॥
कोई बच्चो का खेल नहीं ॥ सुनो स्वामी ॥

रतन जड़त रो पिजरो माता, सुओ जाणे फन्द।
काम भोग ससार ना माता, ज्ञानी जाणे झूठो बन्द॥ मा ॥
पच महाव्रत पालणो जबू, पाचू ही मेरु समान।
दोष बयालीस टालणा जबू, लेणा सुझतो आहार॥ जबू ॥
पच महाव्रत पाल सू माता, पाचू ही सुख समान।
दोष बयालीस टालसू माता, लेसू सुझतो आहार॥ मा ॥
सजम मारग दोहिलो जबू, चलणो खाडे री धार।
नदी किनारे रुखड़ो जबू, जद तद हो विनास॥ जबू ॥
चाद बिना किसी चादनी जबू, तारा बिना कैसी रात।
वीरा बिना किसी बेनड़ी जबू, झुरसी वार तिवार ॥ जबू ॥
दीपक बिना मदिर सूनो जबू, पुत्र बिना परिवार।
कत बिना किसी कामिनी जबू, झुरसी बारु मास ॥ जबू ॥
मात-पिता मेलो मिल्यो, माता मिली अनती बार।
तारण समरथ कोई नहीं माता, पुत्र पिता परिवार॥ मा ॥
मोह मत कर मोरी मातजी, मोह किया बधे कर्म।
हालर हूलर काई करो माता, करजो जिनजी रो धर्म ॥ मा ॥
ये आठू ही कामणी जबू, सुख विलसो ससार।
दिन पीछा पडया पछे, थे तो लीजो सजम भार ॥ जबू ॥
ये आठू ही कामणी माता, समझाई एकण रात।
जिनजी रो धर्म पिछाणियो माता, सजम लेसी म्हारे साथ ॥मा ॥
मात-पिता ने तारिया जबू, तारी छे आठू ही नार।
सासु सुसरा ने तारिया जबू, पाच सौ प्रभव परिवार॥
जबू भलो चेतियो जाया, लीना सजम भार॥टेर॥
पाचसो ने सताईस जणा साथे, जबू लीनो सजम भार।
इग्यारे जीव मुगते गया सरे, बाकी स्वर्ग मझार॥ जबू ॥

जम्बू कह्यो मान ले रे जाया

राजगृही ना वासिया जी, जम्बू नाम कुमार।
ऋषभदत्त रा डीकराजी, भद्रा ज्यारी माय॥
जबू कह्यो मान ले जाया, मत ले सजम भार॥टेर॥
सुधर्मा स्वामी पधार्या जी, राजगृही रे माय।
कोणिक वादण चालियो जी, जबू वादण जाय॥जबू ॥
भगवत वाणी वागरी जी, बरसे अमृत धार।
वाणी सुणी वैरागिया जी, जाण्यो अथिर ससार॥जबू ॥
घर आया माता कनेजी, विनवे बारबार।
अनुमति दीजो मोरी मातजी, माता लेसू सजम भार॥जबू ॥
माता मोरी साभलो, जननी लेसू सजम भार॥टेर॥
ये आठों ही कामणी जबू, अपछर रे उणिहार।
परणी ने किम परिहरो, ज्यारा किम निकले जमार॥जबू ॥
ये आठूं ही कामणी जबू, तुम बिन बिलखी थाय।
रमिया ठमिया सु नीसरे, ज्यारा बदन कमल बिलखाय॥जबू ॥
मत हीणो कोई मानवी, माता मिथ्या मत भरपूर।
रुप रमणी सू राचिया, ज्यारा नहीं हुवे दुरगत दूर॥माता ॥
पाल पोसो मोटो कियो, जबू इम किम दो छिटकाय।
मात-पिता मेले झूरता, था ने दया नहीं आवे दिल माय॥माता जबू ॥
एक लोटो पानी पियो माता, मायर बाप अनेक।
सगला री दया पाल सू, माता आणी ने चित्र विवेक।माता ॥
ज्यू आधा रे लाकड़ी जबू, तू म्हारे प्राण आधार।
तुझ बिन म्हारे जग सूनो, जाया जननी जीतब राख॥ जबू ॥

वो बादल बेकार है, जिसमे बरसाते नहीं, वो दिल बेकार है जिसमे प्रभु की याद नहीं।

पीछे से राजुल दे आई, हाथ तव पकडयो छिन माई।
कहाँ तू जावे मोरी जाई, और वर हेरु सुखदाई॥
मेरे तो वर एक हीं, हो गये नेम कुमार।
और भुवन में वर नहीं, चाहे करो क्रोड़ उपचार॥
झुरती छोडी माँ प्यारी॥ देखण ॥

सहेल्याँ सब ही समझावे, दाय नहीं राजुल के आवे।
जगत सब झूठो दर्शावे, मेरे मन नेमकुवर भावे॥
तोडया काकण डोरड़ा, तोड़यो नवसर हार॥
काजल टिकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार॥
करी अब सयम की तैयारी॥ देखण ॥

तज्या सब सोले सिणगारा, आभूषण रत्न जड़ित सारा।
लगे मोय सब ही सुख खारा, छोड़ कर चली परिवारा॥
माता-पिता परिवार को, तजवा न लागी वारा
रह नेमि समझाय के, जाय चढी गिरनार॥
दीक्षा फिर राजुल ने धारी ॥ देखण ॥

दया दिल पशुअन की आई, त्याग जब कीनो छिन माही।
नेम जिन गिरनारे जाई, पशु के बधन छुड़वाई॥
नेम-राजुल गिरनार पे, कीनो अविचल ध्यान।
नवलमल यह करी लावणी, उपन्यो केवलज्ञान॥
जिनों की किरिया बुद्ध सारी॥ देखण ॥

ईश्वरीय शक्ति ही असम्भव को सम्भव बना सकती है।
इसलिए सदा ईश्वर का स्मरण करो।

नेमजी की जान बणी भारी

(तर्ज लावणी)

नेमजी की जान बणी, भारी देखण को आये नर नारी ॥टेर॥
हीसता घोडा रथ हाथी, मनुज की गिणती नहीं आती।
ऊट पे ध्वजा जो फर्राती, धमक से धरती थर्राती॥
समुद्र विजय जी का लाडला, नेम कुवर जी नाम।
राजुल दे को आये परणवा, उग्रसेन घर धाम॥
प्रसन्न भई नगरी सब सारी॥ देखण ॥
कसुबल बागा अति भारी, कानन कुडल की छवि न्यारी।
किलगी तुर्रा सुखकारी, माल मोतियन की गल डारी॥
काने कुण्डल झिगमिगे, शशि मुकुट सुखकार।
कोटि भानु की बनी ओपमा, शोभा अधिक अपार॥
बाज रया बाजा टक सारी॥ देखण ॥
छूट रही हुक्का सरणाई, ब्याह मे आये बड़े भाई।
झरोखे राजुल दे आई, जान को देखत सुख पाई॥
उग्रसेन जी देख के, मन में कियो विचार।
बहुत जीव को करी एकठा, बाडो भयो तिवार॥
करी जब भोजन की त्यारी ॥ देखण ॥
नेमजी तोरण पर आये, पशु सब मिलकर कुर्राये।
नेम जी वचन यू फरमाये, पशु ये काहे को लाये॥
इणको भोजन होवसी, जान वास्ते त्यार।
एह वचन सुण नेमकी, थर-थर कपी काय॥
भाव से चढ गये गिरनारी ॥ देखण ॥

सपने मत बनाओ सपने टूट जाते हैं, अपने मत बनाओ अपने छूट जाते है।

वन में तो बाज्यो बैरी बायरो रे।
टूटी छे चम्पा के री डाल रे॥
खाती मुनिवर ने तीजो मृगलो रे।
पहुच्या है पचमे देवलोक रे॥
आयु स्थिति पूर्ण करी मिनखा भवे रे।
होसी प्रभु त्रयोदशम जिनराय रे॥
चारु ही तीर्थ धर्म चलावसी रे।
शिवपुर जासी कर्म खपाय रे॥
अजरामर सुख पासी तिहा शाश्वता रे।
थासी प्रभु अविनाशी अविकार रे॥
एहवा मुनिवर ना गुण मुख गावता रे।
अहोनी सर्वज्ञ जय जयकार रे॥

सर जावे तो जावे

सर जावे तो जावे, मेरा जैन धर्म न जाने पावे,
धर्म के खातिर महावीर स्वामी, कानो मे कील ठुकाये
धर्म के खातिर पारस स्वामी, जलता नाग बचावे,
धर्म के खातिर गौतम स्वामी, घर-घर अलख जगावे,
धर्म के खातिर सेठ सुदर्शन, शूली पर चढ जावे,
धर्म के खातिर हरिश्चन्द्र राजा, भगी घर बिकजावे,
धर्म के खातिर मोरध्वज नृप, सुत पर आरा चलावे,
धर्म के खातिर जम्बू स्वामी, सुख वैभव छिड़कावे,
धर्म के खातिर मुनिवर सारे, नगे पैरो ढावे।

जैसा बोलते हो वैसा करो, जैसा करते हो वैसा बोलो।

मन मोयो रे तुंगियापुर नगर सुहावणो रे...

मन मोयो रे तुगियापुर नगर सुहावणो रे।
जहाँ उतर्‌या मुनि बलभद्र साध रे।।टेर।।

मास खामण रो मुनि रे पारणो रे।
आया छे बलभद्र मुनिराय रे।।

कुआ रे काठे कामण सचरी रे।
लारे रोवतड़ो नानो बाल रे।।

रूप सुरुपे मुनिवर फूटरा रे।
दीसे छे इन्द्रतणो उणिहार रे।।

चुकलिया रे बदले बालक फासियो रे।
दीनो छु कुवा में उतार रे।।

धिक् धिक् म्हारा रूप ने रे।
धिक् धिक् इन ससार रे।।

इण नगरी में नहीं लेस्या गोचरी रे।
इण नगरी में नहीं लेस्या आहार रे।।

वन में तो मुनिवर पाछा सचर्या रे
बैठा छे तरुवर केरी छाय रे।।

वन मे तो भावे मृगलो भावना रे।
आवे छे मुनिवर केरे पास रे।।

वन मे तो फाडे खाती लाकड़ा रे।
खातण लावे छे उणरे भात रे।।

दोष बयालीस मुनिवर टालने रे।
लीनो छे सूझतो आहार रे।।

मिटा दो खुद को इतना कि रहे न कुछ निशाँ बाकी अगर पाना सनम को है, खुदी से हाथ धो बैठो।

जम्बू - निश्चय लीनी धार माता ! सजम की मन मायजी।
माता - एकाएकी लाल बेटा ! छोड कठे जाय जी॥
जम्बू - छोड मोह-जाल किणरा बेटा किणरी मायजी।
माता - राज सुख भोग पीछे, लीजो सयम जायजी॥
जम्बू - नही इण बातो में सार, लेस्या सजम भार॥5॥
माता - सजम खाडे की धार, कहूँ समझाय जी।
जम्बू - आज्ञा देवो प्रेम से, तो मुश्किल कुछ नायजी॥
माता - पच महाव्रत पालणो, चलणो जीव बचाय।
जम्बू - पाचो सुख समान, माता लेस्यू निभाय जी॥
माता - मै भी हूँ तैयार, जम्बू राजकुमार॥6॥
कवि - पॉच सौ अरु सत्ताईस सग लारे आय जी।
पिता पुत्र माय सग, आठो नार धाय जी॥
ससार असार जाण, लीनी दीक्षा जाय जी।
जीतमल धन्य जम्बू, धन्य थारी माय जी।
समझ झूठा ससार, लीनो सजम भार॥7॥

धन गया तो कुछ नहीं गया,
स्वारथ गया तो थोड़ा सा गया,
अगर चरित्र गया तो सब कुछ ही चला गया।

इजाजत दे माता लेस्यां संजम भार

जम्बू - इजाजत दे माता, लेस्या सजम भार।। टेर।।
माता - इस्यो काई दु ख व्याप्यो, जम्बू राजकुमार।।टेर।।
जम्बू - भगवान सुधर्मा स्वामी, आया बाग माय जी।
माता - धन्य अहो भाग्य जो, कीनो पावन आयजी।।
जम्बू - सुन के शुभागमन गयो दरश तायजी।
माता - धन्य ऐसे लाल को जो, धर्म को दीपाय जी।।
जम्बू - सुना वहाँ धर्म प्रचार।। लेस्या ।।1।।
माता - चित्त क्यो उदास जम्बू ! कहो समझाय जी।
जम्बू - सुनके उपदेश माता ! वैराग्य मन भाय जी।।
माता - ऐसो काई बोले, क्यो चित को दु खाय जी ?
जम्बू - झूठा है ससार माता ! सगी कोई नायजी।
माता - ओ काई करियोगे विचार ? जम्बू राजकुमार।।2।।
जम्बू - ममता को दे छोड़ आज्ञा देवो अब माय जी।
माता - इस्यो काई दियो ज्ञान, गयो भरमाय जी।
जम्बू - वीतराग वाणी सुनी सजम मन भाय जी।
माता - छोटा सू मोटो कियो, क्यो अब छिटकाय जी।।
जम्बू - है मतलब का ससार, लेस्या सजम भार।।3।।
माता - राजपाट धन धाम, कमी कोई नाय जी।
जम्बू - है सब बेकार, माता सग चले नाय जी।।
माता - सग आठ नार थारे महला के मायजी।
जम्बू - दियो ज्ञान एक रात, दीनी समझाय जी।।
माता - सजम को छोड विचार, जम्बू राजकुमार।।4।।

सुर नर वदित शियल अखडित, शिवा शिव पद गामिनी ए।
जपते नामे निर्मल थइ ए, बलिहारी तस नाम नी ए॥

काचे तातणे चालणी बाधी, कूप थकी जल काढियो ए।
कलक उतारवा सती सुभद्रा, चम्पा द्वार उघाडियो ए॥

हस्तिनापुरे पाण्डु राय नी, कुन्ती नामे कामिनी ए।
पाण्डु माता दशे दशार्हनी, बहन पतिव्रता पद्मनी ए॥

शीलवती नामे शीलव्रत धारणी त्रिविधे तेहने वदिये ए।
नाम जपता पातक जाये, दरश ने दुरित नीकन्दीये ए॥

निषधा नगरी नल नरेन्द्र नी, दमयती तस मोहिनी ए।
सकट पड़ता शीयलज राख्यो, त्रिभुवन कीरति जेहनी ए॥

अनग अजीता जद जन पूजिता, पुष्प चूला ने प्रभावती ए।
विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए॥

वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाखे मुदा ए।
व्हाणु वाता जे नर भणसे, ते लेशे सुख सम्पदा ए॥

अन्यत्व भावना (नमिराजर्षि)

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रकट ये, पर है परिजन लोय॥

श्री सोलह सतियों का स्तवन

आदिनाथ आदि जिनवर वदू, सफल मनोरथ कीजिए ए।
प्रभात उठी मगलिक कामे, सोलह सतीना नाम लीजिए ए।।

बालकुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरत नी बेनडी ए।
घट घट व्यापक अक्षर रूपे, सोले सती मा जे बड़ी ए।।

बाहुबल भगिनी सती शिरोमणी, सुदरी नामे ऋषभ सुताए।
अक स्वरूपी त्रिभुवन माहे, जेह अनुपम गुण जुता ए।

चन्दनबाला बालपणे थी, शियल वती शुद्ध श्राविका ए।
उ़ड़द ना बाकला वीर प्रतिलाभ्यो, केवल लहि व्रत भाविका ए।

उग्रसेन धूया धारिणी नदिनी, राजमती नेम बल्लभा ए।
जोवन वय में काम ने जीत्यो, सयम लेई देव दुर्लभा ए।।

पच भरतारी पाण्डव नारी, द्रुपद तनया बखाणी ए।
एक सौ आठ चीर पुराणी, शीयल महिमा तस जाणी ए।।

दशरथ नृप नी नारी निरूपम, कौशल्या कुल चद्रिका ए।
शीयल सलोनी राम जनेता, पुण्य तणी प्रणालिका ए।।

कौशम्बीक ठामे सतनिक नामे, राज करे रग राजियो ए।
तस घर धरनी मृगावती सती, सुर भुवने जस गाजियो ए।।

सुलसा साची शीयले न काची, राची नहीं विषया रसे ए।
मुखड़ा जोता पाप पलाए, नाम लेता मन हुल्लसे ए।।

राम रघुवशी तेहनी कामिनी, जनक सुता सीता सती ए।
जग सहू जाणी धीरज करता, अनल शीतल थयो शियल थी ए।।

कर्मा सेती देखी अजना ले चाल्या हनुमत गढ में॥
विमान मोहे खेलत बालक उछल पडयो हो पहाडा मे
टुक टुक सिला का हो गया, इचरज पाम्या है जुग मे॥
खेलत बालक देखत मामा खुशी हुआ अपने दिल में
हरखत हरखत खुशी हुआ उठाय लियो हो गोदया में॥
जीत हुई घर आया पवन जी तुरन्त गया छे महला मे
सती अजना नेणा नहीं दीसा घणी उदासी आई मन मे॥
मुख नहीं धोयो अन्न नहीं खायो, तुरत गया छे जोवा मे
महेन्द्रपुरी नगरी मे आया घणी उदासी राजा मे॥
भोजन की जब हुई तैयारी सोच करे राजा मन मे
पुत्री ने आगण नहीं राखी ए आया छे लेवाने॥
सालाजी रे छोटी बेटी ले बैठया से गोद्या मे
कहो कुवर बाई थारा भुआसा, काई करे रग महला मे॥
पुत्री केवे सुणो फूफा सा बात कहूँ इक मै थाने।
आगण तो उभा नहीं राख्या पाछा काढ्या छे वन मे॥
ठोकर छोडने उठ्या पवन जी मत्री बोले राजा ने।
डोसा थारी अक्ल किधर गई घर नहीं राखी पुत्री ने॥
सासु सुसरा दिया दसाये बाप नहीं राखी घर मे
(सासु सुसरा दिया दसा ये माय नहीं राखी घर मे)
मामोजी मोसालो लेग्या जस फैल्यो सारे जग मे)
नीनाणु चवर का देखो तगासा दया दान तणी दिल मे
जिणद के बाई पुत्र तेरो आनन्द पाम्या छै मन मे॥
सती अजना मिल्या पवन जी तुरत गया रग महला मे
हनुमत कवर लियो गोद मे आनन्द पाम्या छे मन मे॥

सती अंजना का स्वप्न

पति व्रता इक सती अजना राजा महेन्द्र की लडकी
अशुभ कर्म पूर्व का आया देखो विचरत कर्मां की॥
मान सरोवर तट के ऊपर श्याम धणी हेटे पटकी
चकवा चकवी रैन बिछेव सुरत लगी इक तिरियाकी॥
आधी रात का आया पवन जी आया मिल्या अपनी धरनी
गुप्त महल तिरिया के आया बात्या कर रया तन मन की॥
कडा मूदडी दिया सेनाणी स्वय मिलया हो खारदी
होजी उस दिन से तो गर्भ रह्यो है देखो विचरत कर्मो की॥
गर्भवती ने देखी अजना सासु बोली कुडवती किणरो
कलक लगायो ए पापणी थारे छे कोई और पति॥
हाथ जोड़ ने केवे अजना सुणो सासूजी गुणवन्ता
कड़ा मूदडी दिया निशानी बक्स गया मेरा प्राणपति॥
तू झूठी थारी दासी झूठी बा झूठी थारे कुल की
दोना ने देऊ देश निकालो दासी रे सग वन वन फिरसी॥
मात-पिता घर आई अजना बधव देखा गर्भवती
बिन आदर बिन पाछी काढी देखो विचरत कर्मो की॥
आई उदासी गया पहाड मे आगे खड़ा म्हारा ज्ञान गुरु
हाथ जोड कर करू विनती कद मिलसी म्हारा प्राणपति॥
भली देशना दीनी गुरुजी धीरज रखो अपरे मन मे
चन्द्र सरीखा पुत्र होसी, पति मिले थोड़ा दिन मे॥
भली देशना दीनी गुरुजी पुत्र जन्म्या गुफा मे
कर्म रेख तो देखी पुत्र की जैसी ज्योति सूरज की॥
घणा दिना रा बिछडा मामा आय मिल्या इस पहाड़ा में

गजगति चाल्या मलकताजी, आया राजाजी के पास।
भद्रासन आसन दियोजी, राय पूछे हुल्लास।जिनन्द ॥12॥
कहो किम कारण आवियाजी ? कहो थारा मनरी बात।
चवदे सपना देखियाजी, अर्थ करो स्वामीनाथ।जिनन्द ॥13॥
स्वप्ना सुनी राय हर्षियाजी, कीनो स्वप्न विचार।
तीर्थकर चक्रवर्ती हुसीजी, हम कुल नो आधार।जिनन्द ॥14॥
परभाते पडित तेडियाजी, कीनो स्वप्न विचार।
तीर्थकर चक्रवर्ती हुसीजी, हम कुल नो आधार।जिनन्द ॥15॥
पडित ने बहु धन दियोजी, वस्त्र ने फूलमाल।
गर्भमास पूरण हुआ जद, जनम्या पुण्यवत बाल।जिनन्द ॥16॥
चौसठ इन्दर आवियाजी, छप्पन दिशा कुमार।
अशुचि कर्म निवारने फिर, गावे मगलाचार।जिनन्द ॥17॥
प्रतिबिम्ब घर में धर्योजी, माताजी ने विश्वास।
शक्रेन्द्र लीधा हाथ में जी, पच रूप प्रकाश।जिनन्द ॥18॥
मेरु शिखर नहलावियाजी, तेहनो बहु विस्तार।
इन्द्रादिक सुर नाचियाजी, नाची अप्सरा नार।जिनन्द ॥19॥
अट्ठाई महोत्सव सुर कियोजी, द्वीप नन्दीश्वर जाय।
गुण गावे प्रभुजी तणाजी, हिवडे हरष न माय।जिनन्द ॥20॥
परभाते सपना जो भणेजी, भणता ही आनन्द थाय।
रोग शोक दूरा टले जी, अशुभ कर्म सब जाय।जिनन्द ॥21॥
दान शीयल तप भावनाजी, यह जग में तत्त्व सार।
पालो आराधो भला भावसुजी, हो जासी खेवपा पार।जिनन्द ॥22॥
सवत उन्नीस सौ पॉच में जी, धारा नगर मझार।
ज्ञानचन्द गुण गावियाजी, मन मे हर्ष अपार।जिनन्द ॥23॥

चौदह स्वप्न का स्तवन

दशमा स्वर्ग थकी चव्याजी, चौवीसमा जिनराय।
चवदे सपना देखियाजी, त्रिशला देवी माय।जिनन्द ॥1॥
जिनन्द माय, दीठा हो सपना सार॥टेर॥

पहले **गजवर** देखियोजी, सूडा दण्ड प्रचण्ड।
दूजे **वृषभ** देखियोजी, धोरी धोली सण्ड।जिनन्द॥2॥
तीजे **सिह** सुलक्षणोजी, करतो मुख सू बगास।
चौथे **लक्ष्मी** देवताजी, कर रह्या लील विलास।जिनन्द॥3॥
पच वरण फूला तणीजी, थी मोटी दो माल।
छट्ठे **चन्द्र** उजासियोजी, अमीय झरे आकाश।जिनन्द॥4॥
दिनकर उग्यो तेजसुजी, किरणा झाके झमाल।
फरकन्ती देखी **ध्वजाजी**, ऊँची अति असराल।जिनन्द॥5॥
कुम्भ कलश रतना जड्योजी, उदक भर्यो सुविशाल।
कमल फूला को ढाकणोजी, नवमो स्वप्न रसाल।जिनन्द॥6॥
पद्म **सरोवर** जल भर्यो जी, कमला करी रे शोभाय।
देव देवी रग में रमेजी, देख्या आवे दाय।जिनन्द॥7॥
क्षीर **समुदर** चारो दिशाजी, जेहनो मीठो नीर।
दूध जैसो पाणी भरयोजी, कठिन पावणो तीर।जिनन्द॥8॥
मोत्या केरा झूमकाजी, देख्या देव विमान।
देव देवी, कौतुक करेजी, आवता असमान।जिनन्द॥9॥
रत्ना की राशि निर्मलाजी, देख्यो स्वप्न उदार।
स्वप्नो देख्यो तेरमोजी, हिवडे हर्ष अपार।जिनन्द॥10॥
ज्वाला देखी दीपतीजी, **अग्नि शिखा** बहु तेज।
इतने मे जाग्या रानी पदमनीजी, धर स्वप्ना सु हेज।जिनन्द॥11॥

ब्राह्मी सुन्दरी दोनु पोत्या, दोनो अखड कवारी जी।
मोटी सतिया मोक्ष पधारी, काट करम की जारी जी॥

पैसठ हजार पीढिया नजरा देखी, नाम जिन्हो का धरिया जी।
शोक सन्ताप तो कदियन देख्यो, पूरा पुण्यज कीधा जी॥

गेले जातो मोरा दे जी, पूछे भरत जी ने बाता जी।
मीठा शब्द गेर गभीरा, ई बाजा कठे बाजे जी॥

समोसरण मे कहे भरत जी, सुणो माजीसा बाता जी।
तीर्थकर जी का महोत्सव मे, गहरा बाजा बाजे जी॥

इन्द्र इन्द्राणी देवी देवता, नरनारी का वृन्दो जी।
समोसरण में साहब सोवे, जिम तारा बीचे चन्दो जी॥

केसरिया कसुमल साडी, चूडी रत्ना जड़िया जी।
धोला वस्त्र कदियन पेरया, जब पेरया जब पचरग्या जी॥

उपवास एकासन कदिन कीधा, आबल और न नीवींजी।
मोरा दे जी खाता पीता, मोक्ष कने कर लीनो जी॥

बुढापो तो आई लागो, शक्ति म्हारी घट गई जी।
थारा दर्शन कदियन हुआ, रिखबो रिखबो करती जी॥

करोड पूर्व को आउखोने, पाच सौ धनुष की काया जी।
बुढापो तो कदियन सतायो देखो पूर्व पुण्य की बाताजी॥

अग मे कभी न हुई असाता, ओखद एक न लीनो जी।
मोरा देवी जीव्या ज्या लग, टसको एक न कीधो जी॥

सिहासन पर बैठा सोवे, माथे छत्र धरावे जी।
ऐसी सायबी पुत्र भोगवे, माजी के कौन चितारे जी॥

मरुदेवी माता का स्तवन

क्रोड पूर्व लग पामी साता, मोरा देवी माताजी ।।टेर।।

नगर वनीता भली विराजे, जगमग-2 सोहे जी।
कचन माही कोट विराजे, सुर नर के मन मोहे जी।।

नगर वनीता बारह योजन, पूरब पश्चिम जानो जी।
नव योजन की उत्तर दक्षिण, शास्त्र माही बखाणी जी।।

सोना रा तो कोट कागरा, रूपा रा दरवाजा जी।
अधबीच अधबीच जोड हीरा विराजे, मोत्या की लड लुबाजी।।

आदिनाथ जी आई उपन्या, मोरा देवी के कूखोजी।
जग में जामण हुआ है ठावा, जाया ऋषभ सरीखा बेटाजी।।

बेटा पोता पडपोता ने लडपोता री जोडया जी।
सघली बहुवा पावा लागी, आशीष दे दे थाका जी।।

सेजा माही बैठा सोहे, तेवड तकिया गादी जी।
भरत बाहुबल सरीखा बेटा पोता, जग में दीप्या दादीजी।।

अठाणु घर नाना पोता, लुर लुर पावा लागे जी।
रूप अनुपम नवल विराजे, मुलकता मुख आगे जी।।

सेजा माहे बैठा सोहे माथे चवर ढुलावे जी।
पूर्वभव के पुण्य योगे, माजी साहब कहावे जी।।

हाथी घोडा रथ पालखी, मणि माणक ने मोती जी।
तीन बधाई नित की आवे, दया का फल देखो जी।।

जिसको झुकना आता है वह सपूर्ण विश्व को झुका सकता है।

चन्दन बाला का पारणा

(तर्ज राजस्थानी लोकगीत तेजा की)

॥ दोहा ॥

महासती श्री चन्दना महाश्रमण महावीर।
अमर कथा दोन्या तणी, जय जयकार समीर॥क॥
मास पॉच पच्चीस दिन, अभिग्रह अभिराम।
प्रभुवर आज पधारिया, सेठ धन्नावे धाम॥ख॥
हाथो में हथकडी चरणा मे बेडी ओ।
छाज उड़दा रा पड़िया बाकला॥
तीन दिना री भूखी, आख्या माही आसू ओ।
गिण गिण उठाया खावण बाकला॥
इतरे निहारया आता महावीर स्वामी ओ।
हिवडो हरसायो सुख्या आसूडा॥
खुल्या खुल्या भाग देखो चन्दना रा आज रे।
गगा घर आई पातक धोयबा॥
आओ आओ प्रभुवर ! करुणा निधान रे।
नावा तिरावो म्हारी डूबती॥
बारे बोल मिल्या पर आसू नहीं देख्या ओ।
आयै पगा ही मुडिया वीर जी॥
चन्दन बाला देख देख बिलखाई रे।
हिवडो भरीज्यो आसू चालिया॥
गद्गद् स्वर स्यू बौले प्रभु नै बोल रे।
आत पसीजै कापे कालजो॥
जाणो खाली हाथ हो तो आणै रो स्यू अर्थ रे।
जाणी निरभागण कै मू मोड़ियो॥

मोह घणेरो करती जामण, थारी रिद्धि भारी जी।
किसकी माता किसका बेटा, मोह कर्म से हारी जी॥

या सतयुग मे जोती जामण चढिया उज्ज्वल भावोजी।
मोह कर्म से जीत्या मोरा देवी, पाया केवलज्ञानी जी॥

इण चौबीसी सगला पेली शिव रमणी में बैठा जी।
मोरा देवी मोक्ष पधारया, ज्या घर लील विलासोजी॥

सम्वत् उन्नीसे साल छियत्तर, मेघनगर चौमासो जी।
कातीसुद सातम मुकन गुण गावे, ते नर पावे साताजी॥

हे प्रभु आनंद दाता

हे प्रभु आनद दाता ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुगुणो को दूर हमसे कीजिए॥
लीजिए हमको शरण मे हम सदाचारी बने।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक, वीर व्रतधारी बने॥1॥

प्रेम से हम गुरुजनो की नित्य ही सेवा करे॥
सत्य बोले झूठ त्यागे मेल आपस मे करे॥2॥

निदा किसी की हम किसी से भूलकर भी ना करे।
धैर्य बुद्धि मन लगाकर वीर गुण गाया करे॥3॥

ऐसी अनुग्रह और कृपा हम पे हो परमात्मा।
हो सभासद सब यहॉ के शीघ्र ही धर्मात्मा॥4॥

हे प्रभु यह प्रार्थना है आप इसे मजूर करे।
सब सुखी ससार हो यह भाव रग-रग मे भरे॥5॥

बरसे सोनैया देव-दुदुंभि बाजै रे।
टूटे हथकडियाँ टूटै बेडिया॥
सादुलपुर शुभ सेठिया-सदन रे।
गायो नगराज प्रभु पारणो॥
शती महावीर री पचीसवीं मनावा रे।
पुष्प चढावा पद पच्चीस ऐ॥

यह मीठा प्रेम का प्याला

यह मीठा प्रेम का प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला।
यह सत्सग वाला प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला।टेर।
प्रेम गुरु है प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है प्रेम है मेला।
प्रेम की फेरो माला, कोई फिरेगा किस्मत वाला।यह मीठा।1।
प्रेम बिना प्रभु भी नहीं मिलते, मन के कष्ट कभी नहीं टलते।
प्रेम करे उजियाला, कोई करेगा किस्मत वाला।यह मीठा।2।
प्रेम का गहना प्रेमी पावे, जन्म मरण का दु ख मिटावे।
कटे कर्म जजाला, कोई काटेगा किस्मत वाला।यह मीठा।3।
प्रेमी सबके कष्ट मिटावे, लाखो से दुराचार छुडावे।
प्रेम मे हो मतवाला, कोई होवेगा किस्मत वाला।यह मीठा।4।
मुक्ति का सुख प्रेमी पावे, नरको में हरगिज नहीं जावे।
प्रेम का भोजन आला, कोई करेगा किस्मत वाला।यह मीठा।5।
गुरु श्री पृथ्वीचन्द हमारे, अमृत प्रेम पिलाने वाले।
प्रेम का पथ निराला, कोई चलेगा किस्मत वाला।यह मीठा।6।

***

जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि

राजमहल छुट्या बाप रो वियोग रे।
माता मरी हा ! खैची जीभ नै॥
ककण झणझण करता जिण हाथा रे।
लोह जजीरा आज बाधिया॥
बिछिया री छिम-छिम उठती झणकारा रे।
बाजै चरणा मे खण-खण बेडिया॥
बेची जो बाजार बीच, दासी रे मोल रे।
अकथ कहानी म्हारे दु ख री॥
पाछला तो घाव आज सारा हर्या हूया रे॥
लुण लगायो क्यो थे पूठ दे॥
दोष देऊ किणने मै तो रूठ्या म्हारा भाग रे।
आप रा बाध्या आप भोगवै।
सुख रा ही साथी सारी दुनिया रा लोग रे।
दु ख में तो देवै सारा आतरो॥
घायल री गति, घायल जाणै रे।
फाट्या बिवाई परखै पीर नै॥
उड़द रा बाकला ऐ भीलणी रा बोर रे।
भगती रा आछा भगवान भूगडा॥
भगती रो क्रन्दन पडियो प्रभु रै काना मे।
चरण मुड़या है पाछा वीर रा॥
गज गति चलता अै दुनिया रा नाथ रे।
आया भगवान भगती बान्धिया॥
शीतल शशाक आख्या अमृत बरसै रे।
घाव भरीज्या प्रभु रै झाकता॥
कर सम्पुट फैलायो महावीर रे।
उलट भावास्यू दीन्हा बाकला॥

लोग कहते हैं हम जीते है श्वास से, मगर सच तो है हम, जीते है विश्वास

ब्रह्मी सुदरी दोनो बहना सतियो में सिरदार जी।
करणी करने मोक्ष गयी छे, शील तणे प्रताप जी॥

कलावती ना पूर्व कर्म थी राय कपाव्या ने करजी।
बेरखा सहित बाहु थया शील तणो प्रभाव जी॥

चपा पोले ताला जडिया दीधा देव कुमार जी।
सती सुभद्रा ए पोल उघाडी शील तणो प्रभाव जी॥

एवु जाणी शीलव्रत पालो तेने जाऊ बलिहार जी।
कर जोड़ी ने कवियण कहे पालो शील नर नार जी॥

मिल के गाना

तर्ज इचक दाना

मिल के गाना दिल से गाना,
गुरुवर के गुण गाना, जय गुरु नाना,
हु शि उ चौ श्री जग नाना माला जपते जाना।
छोटा सा नाम है, लगता न दाम है,
जय गुरु नाना-2 रटना सुबह शाम,
दिन मे गाना रात मे गाना हरपल गाते जाना॥जय॥

तन के तदूरे में जितने भी तार है,
बिना गुरु सुमिरण के यू ही बेकार है,
सुख में ध्याना दु ख में ध्याना भक्ति में खो जाना॥जय॥

करेंगे कल्याण गुरु करुणा निधान है,
सच्चे गुरु राम मेरे शासन की शान है,
वदन करना शीश झुकाना भव सागर तिर जाना॥जय॥

***

अपना सुधार ससार की सबसे बड़ी सेवा है।

शील मूंदड़ी घणी रे प्यारी

शील मूदडी घणी रे प्यारी जो पाले नर नार जी।
ज्ञान मूदड़ी घणी रे प्यारी जो पाले नर नार जी।।टेर।।

सोलह वर्ष रा जबु कुवर जी, लीदो सजम भार जी।
छिन्नु क्रोड सोनैया तज ने, त्यागी आठू नार जी।।

विजय सेठ ने विजय सेठाणी, पलग बीचे तलवार जी।
आछी रे आणियो शीलज पालियो ज्यारी जाऊ बलिहारजी।।

रथ फेर ने नेम जिनेश्वर चढ गया गढ गिरनारजी।
पशुओ तणी पुकार सुणी ने, त्यागी है राजुल नार जी।।

सेठ सुदर्शन ने शूली रे उपर चढायो, मन रमरियो नवकार जी।
शूली टूट सिहासन हुवो, शील तणे प्रताप जी।।

मिथ्यात्वी रे घर श्रावगणी परणाई मन रमरियो नवकार जी।
कुडी मे सासु सर्पज घालियो, सर्प हुवो फूल मालजी।।

वैश्या रे घर स्थूलिभद्र मुनीसर कीनो एक चौमासो ठायजी।
काउस्सण करने उबा (खडा) रहिया पहुच्या शिवपुर मायजी।।

धम धम करता आयो रे जोगीसर भिक्षा घालो सीता मायजी।
भिक्षा किस विध घालु रे जोगीडा, राम दिराय कारजी।।

मथुरा नगरी रो राय पद्मोत्तर लेग्यो द्रौपदी नारजी।
कृष्ण वासुदेव जी कीदी रे खराबी लाया इज्जत पारजी।।

सती रे सीता ने कलक चढायोस निकल गया बनवास जी।
सतु रे खीरा अगार जलता, होय गयी जल री धारजी।।

श्रीपति नर-पति चरण शरण में आते-2।
पा धर्म-बोध निज जीवन को चमकाते।
जीवदया का काम किया बहु भारी॥ हुए एक
पूज्य जवाहर लाल सुयश मे गाता-2।
थे महा तेजस्वी ओजस्वी व्याख्याता॥
दया दान का डका तुमने खूब बजाया-2।
हे राष्ट्र धर्मी ! तव क्रातिकारी माया॥
वादी मान मर्दक थे दृढ़ व्रत धारी॥ हुए एक
पूज्य गणेशीलाल महात्मा ज्ञानी-2।
थे श्रमण सघ के सचालक अगवानी॥
पर यश-पद-लिप्सा जरा कभी नहीं जागी-2।
सयम रक्षा हित पदवी तुमने त्यागी॥
थे श्रमण धर्म के रक्षक शुद्धाचारी॥ हुए एक
नानेश गुरु ने अष्टम पाट दीपाया-2।
दीक्षाओ का भी जब्बर ठाठ लगाया॥
ध्यान-समीक्षण समता दर्शन प्यारा-2॥
हे धर्मपाल प्रतिबोधक ! नयन सितारा॥
दीर्घ दृष्टा विचक्षण व ब्रह्मचारी॥ हुए एक
खिला सघ का भाग्य राम गुरु पाये-2।
पा क्रिया-निष्ठ अनुशासक सब हर्षाये॥
है तपसी ध्यानी मौनी सरल स्वभावी-2॥
प्रशान्त मना शास्त्रज्ञ व सेवाभावी॥
युग युग जीओ हे नवमे पट्ट अधिकारी॥ हुए एक
गुण ग्राही बनकर सभी पूज्य गुण गाए-2।
श्री चतुर्विध सघ ऐक्य भाव अपनाए॥
दृढ श्रद्धा निष्ठा भाव समर्पण लाए-2।
जिनशासन की हम महिमा खूब बढाए॥
'मुनि गौतम' महापुरुषो का सदा पूजारी॥ हुए एक

आचार्य पाटावली

(तर्ज यह गढ चित्तौड की)

जिनशासन मे श्री साधुमार्ग सुखकारी।
हुए एक एक से पुण्य-पुरुष गुण धारी ।।टेर।।
प्रथम पाट पर हुक्म मुनीश्वर सोहे-2।
कर छट छट पारणा जन जन का मन मोहे।।
बधन टूटा और कुष्ठ रोग हुआ दूरा-2।
रुपये बरसे, सयम मे फिर भी शूरा।।
क्रियोद्धारक गुरु राज बड़े उपकारी।। हुए एक
ज्ञान क्रिया सयुक्त कवि विख्याता-2।
शिवलाल महामुनि शिव मारग के दाता।।
थे तत्त्व ज्ञान में प्रमुख सिह सम गाजे-2।
किये तैतीस वर्ष एकान्तर मोक्ष के काजे।।
हुक्म गच्छ की खूब खिलाई क्यारी।। हुए एक
उदय सागर महाराज तत्त्व अनुरागी-2।
तोरण पर जाकर मोह माया को त्यागी।।
थी क्रिया निर्मल क्षमा शील गुण धामी-2।
थे अनुशासन मे वज्र सघ के स्वामी।।
महा प्रभावक विनयी उग्र विहारी।। हुए एक
चौथे पाट पर चौथ पूज्य गुणवन्ता-2।
थे शात दात गभीर महा निर्ग्रन्था।।
सहे कठिन परिषह तजकर ममता तन की-2
की शुद्ध साधना से शुद्धि चेतन की।।
स्वाध्याय रसिक थे पूज्यवर अल्पाहारी।। हुए एक
पूज्य श्री श्रीलाल काम विजेता-2।
जम्बू स्वामी सम अद्भूत योगी नेता।।

परदेशी बाबा रा सुणने चमत्कार हर्षावे॥
शुद्ध समकित धारण कर सयम लेवे नर नारी।

मालव और मेवाड पावन कर बीकानेर में आवे।
पाच दीक्षा दे शिवमुनि ने सघ रो भार भोलावे॥
जावद मे विचरता आया पुन गुणधारी॥

अकस्मात हुई तन में वेदना, सथारो स्वीकारे।
उन्नीसो सतरे वैशाख सुदी पचमी स्वर्ग सिधारे॥
महापुरुषा री देखो आज पुण्यतिथि आई प्यारी॥

'मुनि धर्मेश' गौतम प्रशम सग टोडारायसिह आयो।
पूज्य हुक्म री स्मृति-सभा मे गीत गाय सुनायो॥
श्रद्धा सू गावे जो पावेला सुख भारी॥

जिस भजन में राम का नाम न हो

जिस भजन मे राम का नाम न हो,
उस भजन को गाना ना चाहिए॥टेर॥

जिस मॉ ने हमको जन्म दिया उसे, कभी भुलाना नहीं चाहिए,
जिस पिता ने हमको पाला है उसे, कभी बिसराना नहीं चाहिए॥1॥

चाहे बीबी कितनी सुन्दर हो, कोई भेद बताना नहीं चाहिए,
चाहे भाई कितना दुश्मन हो, कोई भेद छुपाना नहीं चाहिए॥2॥

चाहे बेटा कितना लाडला हो, उसे सिर पे चढाना नहीं चाहिए,
चाहे बेटी कितनी लाडली हो, आजादी दिलाना नहीं चाहिए॥3॥

चाहे कितनी अमीरी हो जाये, अभिमान जताना नहीं चाहिए,
चाहे कितनी गरीबी आ जाये, स्वाभिमान भुलाना नहीं चाहिए॥4॥

तू फूल बनकर महक, तुझको ज़माना जाने। तेरी भीनी-भीनी महक, अपना बेगाना जाने।

हुक्म पूज्य हितकारी

(तर्ज नखरालो देवरियो)

क्रियोद्धारक जग माय, हुक्म पूज्य हितकारी।
ज्यारो नित उठ जपलो जाप, जाप मगलकारी।।टेर।।

टोडारायसिह जन्म लियो है माँ मोती पुण्याई।
पिता रतनचन्द जी रा मन मे भारी खुशिया छाई।।
चपलोत से कुल दीवलो चमक्यो है श्रेयकारी।।

मात पिता तो यौवन वय में शादी करणो चावे।
लाल गुरु उपदेश श्रवण कर आप विरक्त बन जावे।।
बूदी मे सयम लेय ज्ञान-घट भरे भारी।।

कथनी-करनी री देख-भिन्नता क्रियोद्धारक मन भावे।
गुरु सग तज आप अकेला चलकर जावद आवे।।
दृढ सयम पालन रो व्रत लियो दिल धारी।।

बेले बेले करे तपस्या, एक चादर तन धारे।
तली और मिष्ठान्न त्याग सब, तेरह द्रव्य रखे सारे।।
दो हजार नमोत्थुण सू करे स्तुति प्यारी।।

पा सयम सुवास दयालमुनि चरणो मे आ जावे।
वीरभाण जी रा शिष्य मोती मुनि आप साथ निभावे।।
सती रगू नन्द खेताजी आज्ञा शिरधारी।।

रामपुरा में सती सुंदर री, हथकड़ी बेड़ी टूटी।
गढ चित्तौड़ में कुष्ठी री, बीमारी तन सू छूटी।।
नाथद्वारा मे रुपिया री, वर्षा हुई चमत्कारी।
जिणदिश पड़े चरण आपरा आनन्द मगल छावे।

श्री शान्तिनाथ स्वामी का छन्द

श्री शान्तिनाथ को कीजे जाप, क्रोड भवा रा काटे पाप।
शान्तिनाथ जी मोटा देव, सुरनर सारे जाकी सेव॥1॥

दु ख दारिद्र जावे दूर, सुख-सम्पत्ति होवे भरपूर।
ठग फासीगर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग॥2॥

राज लोकमॉ कीर्ति घणी, शान्ति जिनेश्वर माथे धणी।
जो ध्यावे प्रभुजी नो ध्यान, राजा देवे अधिको मान॥3॥

गडगुबड़ पीड़ा मिट जाय, देखी दुश्मन लागे पॉय।
सघलो भागयो मन नो भ्रम, पाम्यो समकित काटो कर्म॥4॥

सुनो प्रभुजी मोरी अरदास, हूँ सेवक तुम पूरो आस।
मुज मन चितित कारज करो, चिता आदि विघ्न हरो॥5॥

मेटो म्हारा आज जजाल, प्रभुजी मुझने नयन निहाल।
आपनी कीर्ति ठामोठाम, सुधारो प्रभुजी म्हारा काम॥6॥

जो नित्य प्रभुजी ने रटे, मोती बधा फूला कटे।
चेप लावण दोनो झड़ जाय, बिन औषध जाल कट जाय॥7॥

शान्तिनाथ ना नाम थी थाय, धुन्ध पटल जाला कट जाय।
कमलो पिल्यो झर झर झरे, शान्ति जिनेश्वर साता करे॥8॥

गरमी व्याधि मिटावे रोग, स्वजन मित्र नो मिले सयोग।
एहवा देव न दिखे ओर, नहीं चाले दुश्मन को जोर॥9॥

लुटेरा सब जावे नास, दुर्जन फीटी होवे दास।
शान्तिनाथ जी की कीर्ति घणी, कृपा करो तुम त्रिभुवन धणी॥10॥

सेवा ही परम् धर्म है।

सिद्ध स्तुति

सेवो सिद्ध सदा जयकार, जासे होवे मगलाचार।टेर।
अज-अविनाशी-अगम-अगोचर, अमल अचल-अविकार।
अन्तर्यामी त्रिभुवन स्वामी, अमित शक्ति भडार।सेवो. .।1।

कर पणट्ठ कमट्ठ, अट्ठगुण, युक्त-मुक्त ससार।
पायो पद परमेष्ठि तास पद, वन्दू बारम्बार।सेवो...।2।

सिद्ध प्रभु का सुमिरण जग में, सकल सिद्धि दातार।
मनवाछित पूरण सुरतरु सम, चिता चूरण हार। सेवो...।3।

जपे जाप योगीश रात दिन, ध्यावे हृदय मझार।
तीर्थकर हु प्रणमें उनको, जब होवे अणगार।सेवो. .।4।

सूर्योदय के समय भक्ति युत, स्थिर चित दृढता धार।
जपे सिद्ध यह जप तास घर, होवे ऋद्धि अपार।सेवो. ।5।

सिद्ध स्तुति यह पढे भाव से, प्रतिदिन जो नर-नार।
सो दिव-शिव-सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार।सेवो.. ।6।

माधव-मुनि कहे सकल सघ मे, बढे हमेशा प्यार।
विद्या-विनय-विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार।सेवो ..।7।

अशुचि भावना (सनत् कुमार)

दिपै चाम चादर मढी, हाड पींजरा देह।
भीतर या सम जगत मे, और नही घिन गेह॥

मन मजबूत तो किस्मत मुट्ठी में

मेरे नाना गुरु भगवान

मेरे नाना गुरु भगवान, देते सबको सच्चा ज्ञान ।।टेर।।

पच महाव्रत पालन करते, करते जग उत्थान।
धर्मपाल तिर गये शरण से, करते है गुणगान।। मेरे

जैन जगत के दिव्य सितारे, हुक्म सघ की शान।
आयरियाण पद पर शोभे, गुण-रत्नो की खान।। मेरे

समता-दर्शन ध्यान-समीक्षण, जिनका है सधान।
समझे ध्यावे जो नर-नारी, टूटे भव सताप।। मेरे

गाव गाव ओर डगर डगर मे, देते ज्ञान का दान।
भूले भटके राहजनो को, करवाते जिन भान।। मेरे

दीर्घकाल तक तेरी वाणी, सुनता रहूँ अविराम।
गुरुवर तेरी चरण शरण मे, मेरा मन अभिराम।। मेरे

कुछ लाभदायक बातें

सदा डरा	किससे ?	पापो से, दोषो से
चले चलो	कहाँ पर ?	धर्मस्थान मे, सत्सग मे
गूगे-बहरे बन जाओ	कहाँ पर ?	निदा व निदक स्थान पर
पराक्रमी बनो	किसमे ?	क्षमा में, धैर्य धारण में
देखकर मत हसो	किसको ?	दीन को, दु खियो को

सभी शास्त्रो का सार है पाप को तजो, प्रभु का भजो।

अरज करू छूँ जोड़ी हाथ, आपशु नहीं कोई छीनी बात।
देखी रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारा पाप।।11।।

मुझ मन चितित करिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज।
तुम सम जग माही नहीं कोय, तुम भजवा थी साता होय।।12।।

तुम पास चले नहीं मृगी को रोग, ताव तेजरो नाखो तोड।
मृगी मिटाई कीधी प्रभु सन्त, तुम गुणनो नहीं आवे अन्त।।13।।

तुमने समरे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती।
काटो सकट राखो मान, अविचल पदवी आपो स्थान।।14।।

सवत् अठारे चोराणु जाण, देश मालवो अधिक बखाण।
शहर जावे चातुर्मास, हूँ प्रभु तुम चरणा को दास।।15।।

ऋषि रुगनाथजी कीधो छन्द, काटो प्रभुजी म्हारा फन्द।
हूँ जोऊ प्रभुजी नी वाट, मुज आरति चिन्ता सब काट।।16।।

दुनिया का सहारा क्या लेना

दुनिया का सहारा क्या लेना तेरा एक सहारा काफी है।
कुछ कहने की क्या जरूरत है तेरा एक इशारा काफी है।।

धन दौलत का क्या करना है इन महलो का क्या करना है।
जिदगानी चार दिनो की है बस तेरा नजारा काफी है।
नानेश गुरु का शरण मिला, रामेश गुरु का चरण मिला।
मागु तो क्या मागु भगवान बस तेरा सहारा काफी है।
माना दुनिया रगीन तेरी, हर चीज बनाई है तुने,
देखु तो क्या देखु भगवान बस तेरा नजारा काफी है।।

बड़ों को इज्जत व छोटों को प्यार दे।

नाना है मेरे गुरु

(तर्ज · फूलो सा चेहरा तेरा)

नाना है मेरे गुरु, दिल के ये अरमान है,
नाम तेरा सुनके, काम तेरा देख के, दुनिया भी हैरान है ।।टेर।।

सयम का तूने पहना है चोला, लगता ऐसे तू भगवान है।
साधना तेरी लगती है ऐसी मोक्षपुरी का तू मेहमान है।।

साझ सवेरे मे, माला जपने में, दुनिया मे भी ऐसा गुरु नहीं है।
समता मे तू है पला, विषम से अनजान है।।

हुक्मी के जैसी क्रिया है तेरी, तपो मे जैसे तू शिवलाल है।
चौथ जैसा तू सयम पुजारी, क्षमा मे जैसे उदयलाल है।।

करजोड़ कर, वदन कर ले, पाप हमारे ये धुल जायगे।
सागर मे तिरना हमे, ये किश्ती ही वरदान है।।

दादा गुरु सी प्रतिभा है तेरी, श्री लाल जैसा प्रभावक है तू।
गणेश गुरुसा क्रातिकारी, सयम मे अतर साधक है तू।।

गुण हम गा ले, कुछ गुन-गुना ले, तेरी ही भक्ति मे डूब जाएगे।
जीवन प्रभु मेरा तुझ पे ही कुर्बान है।।

गुरु गणेशी का तू है कल्याणी, तेरी ही पूजा मेरा काम है।
सयम की खुशबू फैली है ऐसी, अतर हृदय मे तेरा नाम है।।

गीत मे गाऊगी, बशी बजाऊगी हरदम मे तेरा ही नाम रटूगी।
खुशियो मे बीते ये पल, तेरा ही वरदान है।।

***

शंका का सांप श्रद्धा को खा जाता है।

गुरुदेव हमारे हो

(तर्ज क्या खूब लगती हो)

गुरुदेव हमारे हो, जन जन के प्यारे हो।
सिणगार दुलारे हो, श्री सघ सितारे हो॥
नाम तेरा जन जन को अच्छा लगता है।
शिष्य गणेशी नाना तू तो सच्चा लगता है॥टेर॥

तेरा नाम तो प्यारा लगता हा लगता।
जो हरता है जीवन का दु ख सारा॥
पा ले जो तेरा सहारा हाँ सहारा।
वो पायेगा, सुख की निर्मल धारा॥

समतामय तेरी सूरत हाँ हाँ सूरत।
जो लगती है सच्चे त्याग की मूरत॥
वाणी तेरी मन भावन हाँ हाँ भावन।
जैसे लगता है, प्यारा महिना सावन॥

''प्रफुल्ल'' हो एक तमन्ना हाँ तमन्ना।
हो जाए हम, तेरे ध्यान मे धन्ना॥
ना चाहे झूठी माया हाँ हाँ माया।
दे दो हमको सच्चे सुख की छाया॥

परमात्मा को पाने के लिए
और कुछ पाने की आवश्यकता नही रह जाती।

देशाणे रो टाबरियो

(तर्ज नखरालो देवरियो)

देशाणे रो टाबरियो, साधना रे शिखर चढग्यो।
शिखर चढग्यो, भावी शासक बणग्यो॥टेर॥

नेमीचद जी रो लाड़लो, ओ गवरा बाई रो जायो।
भूरा कुल रो देखो जग में, नाम हुयो सवायो।
जिनशासन क्षितिज मे आशा रो दीप जलग्यो॥ दे ॥

सयम लेकर गुरु चरणो मे तन मन अर्पण कीनो।
सेवा करके ज्ञान सौरभ सू जीवन सुरभित कीनो॥
गुरुवर री कसौटी पर खरो श्री राम उतरग्यो॥ दे ॥

बीकाणे रे राज प्रागण में महोत्सव हुयो सवायो।
गुरुवर नाना निज चादर दे युवाचार्य बनायो॥
चतुर्विध सघ सारो हर्ष-विभोर बणग्यो॥ दे ।

गुण गौरव गा आज म्हे तो मन मे आनद पावा।
राम राज्य आदर्श बने आ धर्म भावना भावा॥
जैनागम सद्ज्ञान सू हृदय घट पूरो भरग्यो॥दे ॥

***

दूसरों को बदलने का प्रयत्न करने के बजाय स्वय को बदल लेना कही अधिक अच्छा है।

जय गुरु नाना-2 गूंज रहा है गली गली

जय गुरु नाना-2 गूज रहा है गली गली।
नाना गुरु रो नाम लेऊ तो खिल जावे म्हारी कली कली ॥टेर॥

पितु मोड़ी रे आगन आया माँ श्रृगारा हर्षाई।
पोखरणा रे प्रागण में मगलमय बाजी शहनाई॥
पुत्र रतन अनमोल मिलया है-2 छाई घर-घर मे खुशहाली ॥नाना
तरुणाई में वैभव छोड़ा सयम की जब लौ लागी।
गणेशाचार्य के चरणो में दीक्षा ले दुनियां त्यागी॥
ज्ञान खजाना समता बाना-2 तेज साधना अलबेली ॥नाना
ठाठ अनूठा अष्टम पाट का मुख मुख पर महिमा गावे।
भाग्यशाली लाखो नरनारी अनुशासन इनका पावे॥
जैन जगत के धवल गगन में 'चाद' सी किरण फैली॥ नाना

मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणो मे।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में ॥टेर॥

चाहे बैरी सब ससार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने रहे ध्यान तुम्हारे चरणों मे॥1॥
चाहे सकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारो ओर अधेरा हो।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो मे॥2॥
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे काटो पर मुझे चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो मे॥3॥
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
तेरी याद मे आठो याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में॥4॥

मांगो उसी से जो दे खुशी से और कहे न किसी से।

ओ गवरां बाई रो लाड़लो

(तर्ज आ बाबासा री लाडली)

ओ गवरा बाई रो लाड़लो, म्हाने प्यारो लागे रे।
प्यारो लागे, प्यारो लागे, प्यारो लागे रे॥टेर॥

धन्य धन्य है पिता नेमी ने, धन्य लियो अवतार रे।
देशाणे मे जन्म लियो, भूरा कुल रा शान रे॥
नाना गुरु रे श्री चरणो में ससार त्याग्यो रे–ओ.

गुरु चरणा री सेवा माही, कसर कुछ नहीं कीनी।
विनय गुणो से सरल भाव से गुरु आज्ञा जो दीनी॥
गुरुवर रे मन माही बसग्या मन हरषावें रे-ओ

फागणिये री तीज सुहाणी युवाचार्य-पदवी दीनी रे।
बीकानेर रे राजमहल में निज चादर अर्पित कीनी रे॥
शासन रो सिरमौर राम ओ चोखो लागे रे-ओ

जय गुरु नाना जय श्री राम आ जनता सगली गावे रे।
भव सागर सू तिरण-तारण थे थारे शरणे आवे रे॥
पान-मनोहर री नैय्या ने पार लगावे रे-ओ

दिल के उपवन को हमेशा हरा रखो,
दिल की दरिया को हमेशा भरा रखो।
अगर जीवन के मूल्य को बढ़ाना है यदि
दिल का नगीना हमेशा खरा रखो॥
जो मानव निज स्वार्थ हित करता दुष्कर काम।
नहीं कभी वह बन सके, महापुरुष अभिराम॥

मेरे घट में जय श्री राम

(तर्ज घर आया मेरा परदेशी)

मेरे घट मे जय श्री राम।
चलता सुमिरन सुबह व शाम ।।टेर।।

गवरा माता हरषाई।
नेमी घर खुशियॉ छाई।।
धन्य बना देशाणा ग्राम ।।मेरे

नाना गुरु से दीक्षा ली।
चरणो में रह शिक्षा ली।।
करी धन्य सेवा निष्काम।। मेरे

सकलागम के ज्ञाता है।
जन जन भाग्य विधाता है।।
श्री राम है गुण के धाम।। मेरे

शात प्रशात छवि प्यारी।
प्रवचन आगम अनुसारी।।
गुरु गुण गाओ आठो याम।। मेरे

जन जन के है भाग्य खिले।
हम सब को श्रीराम मिले।।
'शशि कला' सम वर्धित नाम।। मेरे

राम गुरु का है सन्देश–व्यसन मुक्ति हो सारा देश।

गुरु भक्ति

(तर्ज ब्याव बिनणी)

जय गुरु नाना श्री राम सू, गूज रही है गली गली।
अन्तर सुमिरण करता ही तो, खिल जावे म्हारी कली कली ॥टेर॥

चाद-सूरज सी देखो सघ ने, काई मिली है या जोडी।
लाखो मस्तक झुक्या चरण मे, माया मद बधन तोड़ी॥

एक निष्ठा सू, भक्ति भाव सू, झुक रही दुनिया अलबेली॥
पाट विराजे दोनो सग में, छटा ही वर्णी न जावे।

अमृतधारा मुख सू बरसे, झड़िया सावण सी पावे॥
बशी बजावे वीर प्रभु री, पिलावे समता री प्याली॥

जठे पधारे जय गुरु नाना, जय श्री राम सुनलो भाई।
तीरथ बन जावे वा नगरी, चरण रज ज्यारी पाई॥

जवाहर अरु गणेश शासन मे, छाई कैसी उजियाली॥
घणी-घणी महिमा बढावो शासन री जुग जुग जीओ गुरु नाना।

उलझोड़ी ग्रन्थिया इन्द्र राम चरणे सुलझाना॥
अचरज पावे हुक्म शासन री, कीर्ति काई है फैली॥

***

> मदिर सूना एक दीप बिना, सुना एक ज्योत बिना।
> कहत कबीर सुनो भई साधो, जीवन सूना हरि नाम बिना॥

असंभव है गलतिया न करना, परन्तु सभव है क्षमा

गुणला गावां म्हे तो गुरु रे नाम रा....

(तर्ज हीरो पायो हो ऽऽऽ)

चमक्या-2 हो ऽऽऽ श्री सघ रा भाग्य आज जी।
गुणला गावा म्है तो गुरु रे नाम रा जी।।टेर।।

भूरा वश में जन्म्या मुनि रामलाल जी।
ए तो परख्या गुरु म्हारा नाना लाल जी।।

सतरा वर्ष रह्य गुरु चरणा मे।
तन मन न्यौछावर कियो सेवा काज जी।।

म्हारे हिवडो आनन्द ओछाव जी।
तोरण बाध्या म्हे तो भक्ति भाव रा जी।।

आज बधावो श्री सघ रे आगणे जी।
तप त्याग रा बाटो मिश्री मेवा जी।

हु शि उ चौ श्री जग में नानालाल जी।
शासन दीपावण प्रगट्या रामलाल जी।।

नवम् पाट रो अखड रहे अनुशासन।
इन्द्र जय जय बोले भूरा-नन्दन जी।।

***

दु:ख का कारण संपत्ति की अल्पता नही,
संतोष का अभाव है।

दान देना ही आमदनी का द्वार है।

गुजर धाबरा ॥12॥ ओछा ने झीना घणा, म्हाने नहीं सुहावेजी। सा पितमजी 2 रा पग पूछी नाख दो जी ॥13॥ भगण आई झाडनावा, रतन कम्ल ओढी जी। व चालीजी, सेणक राजा रे मिन्दराजी ॥14॥ राणी कह सुण राजाजी, थारो राज कसालो जी। म्हारे कारण जी, एक नहीं ली स्वामी लोवड़ी ॥15॥ राजा कहे सुण राणी जी, ए बाता नहीं जाणी जी। पिछाणीजी, ए बाता किम करो जी ॥16॥ दातण तो मै जब करसा, सालभदर मुख निरखसा 2 गज घोड़ा रथ पालखी जी ॥17॥ आगे कौतल हिसता, लारे पैदल नाचता। कहीं चालोजी, सालभदरजी रा मिन्दरा ॥18॥ पहले भवन में पग धरियो, राजाजी मन मे मुलक्या जी 2 यह घर तो नौकर तणा ॥19॥ दूजे भवन मे पग धरियो, राजाजी मनमे हरख्यो जी। कई हरख्या जी, यह घर तो दास्या तणा ॥20॥ तीजे भवन मे पग धरियो, राजाजी मनमे हरख्याजी। कई हरख्याजी, यह घर तो सेठा तणाजी ॥21॥ चोथे भवन मे पग धरियो, राजाजी मन में डरियाजी। कई डरियाजी, यह घर तो देवा तणाजी ॥22॥ राजा सेणकजी मुदडी, राय आगन बिच डालीजी। माता भदरा ओ, पुस भर लाया मुन्धड़ी ॥23॥ एकल रो काई देखोजी, एकल रो काई जोवोजी 2 थाल भर लाया मूँधड़ी ॥24॥ उठरे मारा नानडिया, तू काई सूतो निचितोजी। थारे आगण हो, आगण नाथ पधारिया जी ॥25॥ मै नहीं जाणा मोल ने, मै नहीं जाणा तोलने। माता

शालभद्रजी री लोवडी

राजगिरी सी नगरी जी, थे विणजारा। दिसावरी काई विणजोजी, रतन कामल ले आविया ॥1॥ पूछे गाव रा चौधरी, पूछे सेठ सुभागाजी। काई पूछे जी, सेणकरायजी रा मदिरा ॥2॥ राणीजी कहे सुण राजाजी, एक कामल ले दो जी। कई थारे 2 राणी रे कारण लोवड़ी ॥3॥ लाख लाखीणी लाखीणी, अमोलक ताजा मालोजी। मै लेसाजी, पर मण्डल रो परिगरो ॥4॥ पूछे गाव रा चौधरी, पूछे सेठ सुभागाजी। कई पूछे जी, शालभद्रजी रा मिन्दरा ॥5॥ पिरोला राख पिरोल मे, हम घर भीतर जायबा दो। देखायबादो, सेठ सुभदरा लोवड़ी ॥6॥ माता भदरा हरख्या जी, रतन कमल ले परख्याजी। कई परख्याजी, सालभद्रजी री असतरया ॥7॥ सुणरे वीरा बिणजारा, सालु छै अति झीणा जी 2 मोल करे नी वीरा एहनो। थारे कामल सोलह छे, म्हारे बहुवा बतीसोजी। बीरा परमल रे, थॅरे म्हारे सौदो ना विणे ॥8॥ माहरे कामल सौलह छै, थारे बहॅुवा बतीसो जी। माता भदरा ओ, एक एक पटु आप दो ॥9॥ तेडो राज भण्डारी ने, बीस लाख गिणदो जी। गिणदो जी, घर बैठा पहॅुचाय दो ॥10॥ कामल सौलह लीनी जी, टुकडा बतीस कीना जी। माता भदरा ओ, एक एक पटु आपियो ॥11॥ आवो ए सोक सहेलडयॉ, बैठो माणक चोकेजी 2 सासु जी मेल्या

सरवरियो, पिव बिना सूनो मिदरियो। सा पितमजी, सूनी रिध ने साहबीजी ॥39॥ जग मे स्वारथ मीठो छै, अण मिलो बहु फीको छे। साय पितमजी, सरणो एकज कथरोजी ॥40॥ जग मे सवारथ मीठो छै, अण मिलियो सब फीको जी। सुण सायधण ए, शरणो एकज धरम रो ॥41॥ ऊनो पाणी चरचरो, बाटकडी तेल चम्पेलो जी। धनोजी, बैठा सीस सवारताजी ॥42॥ धन सेठरो असतरी, आठा मे अगवाणी जी 2, काई मोर सवारथ आसू डालिया ॥43॥ गौभद्र सेठ री दीकरी, भदरा थारी माताजी। सायधण ओ, थे क्यो आसृ डालिया ॥44॥ सालभदरजीरी बहेनुली, बत्तीस भोजाया री नणदोली। सायधण ओ, थे क्यो ऑसू डालिया ॥45॥ जग मे एकज बधवो, लेसी संजम भारोजी। सा पितमजी एक, एक नारी परिहरे जी ॥47॥ बो छे मन्त्री कायरियो, ने लेसी सजम भारोजी। कायरियो काया ने सोरी राखसी, मायरियो माया ने, माया ने ऊडी राखसी ॥48॥ कायर कायर किम करोजी, वह नर कायर नाहीं। मारे वीरेजी आगण पधारिया जी, मगध देश रा रायाजी ॥49॥ बाने तो किरयाणो जाण्योजी, थारी कितनिक रिध म्हारा पितम जी। थारी रिध सायबाजी, मारे वीरेजी रे परेथण मे जाय पि ॥50॥ केने केसू बधवो जी, केने केसूजी वीर। कुण माहेरो लायसी, कुए ओढासी दिखणी रो चीर, पितमजी वह नर कायर नाहि ॥51॥ केने कैसी नानड़ो,

भदरा ओ, विणज करो नी महा सु परवारो ।।26।। आगे कदेई न पूछता, अब काई पूछोजी। कई माताजी कई जरणीजी, यह बाता किम करोजी ।।27।। आयो किरयाणो लेलोजी, मुख मागा दाम दे दोजी। माता भदरा ओ, थारे राज भडारा डाल दो जी ।।28।। सुण रे मारा नानडिया, किरयाणो नहीं आयोजी 2 ऊपर नाथ पधारिया जी ।।29।। काना कुडल झगमगे, खसबोई जैसा महकता। राजा सैणक ओ, शालभद्र खोले लियाजी ।।30।। लूणो जैसा पिगलता, सूरज जिसा तेजोजी 2 बारो अग अग तो दीपे घणो जी ।।31।। सुणरे माता भदरा ए, थारा बालुड़ो सुखदाता जी। थारे जायेने ए पाछो मिदर मोकलोजी ।।32।। जिया 2 पेड़्या पग धरे, तिया 2 मनमें दुख धरे। मैं पूरब ओ पूरब पुन किया नहीं, सुपातर दान दिया नहीं 2 जिणसू नाथ कहावियाजी ।।33।। अब के करणी ऐसी करसा, सुपातर दान मै देस्या। कोंई देस्या जी, नाथ सिगला रा मै हुसाजी ।।34।। बजर महल मे पग धरियो, राण्याजी मुख सामे जोयो। सा पितमजी, आज चिन्ता थाने बहुत हुई जी ।।35।। आदनाथ धरम आदरसौ, धन माल दूरा तजसा। मै तजसा जी, रथ घोड़ा गज पालखी ।।36।। राण्या मिल विलखी जी, माता थे उदासो जी कई असाता, असाता पामी घणीजी ।।37।। बतीसू मिल विलखी जी, माने अबला कर मत छोडो जी 2, सरण एकज कथरो ।।38।। जल बिना सू नो

प्रार्थना हृदय का गीत सगीत है।

तुमसे लागी लगन

तर्ज पारस प्यारा

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पारस प्यारा,
मेटो मेटो जी सकट हमारा।।टेर।।
निश दिन तुमको जपू, पर से नेहा तजू, जीवन सारा,
तेरे चरणो मे बीते हमारा।। तुमसे।।1।।

अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे,
सबसे नेहा तोडा, जग से मुँह को मोडा, सयम धारा।।मेटो।।
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मगल गाये,
आशा पूरो सदा, दु ख नही पावे कदा सेवक थारा।।
जग के दुख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग के सुख की भी चाह नहीं है,
मेटो जन्म मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा।।
लाखो बार तुम्हे शीश नमाऊँ, जग के नाथ तुम्हे कैसे पाऊँ।
मन व्याकुल भया, दर्शन बिना यह जिया लागे खारा।।

❋❋❋

साता कीजो जी

साता कीजो जी श्री शान्तिनाथ प्रभु, शिवसुख दीजो जी।
कि साता कीजो जी।।टेक।।
शान्तिनाथ है नाम आपको, सबने साताकारी जी।
तीन भुवन मे चावा प्रभुजी, मृगी निवारी जी।।1।।
आप सरीखा देव जगत मे, और नजर नही आवे जी।
त्यागी ने वीतरागी मोटा, मुझ मन भावे जी।।2।।

केने कैसी पूत। वॉ बिना घड़ी न आवड़े जी, किम निकले जमार।।52।। काणी खोडी कूबडी जी, छोडत करे रे विचार। रूप में रमा सारखीजी, मारे वीरा री बत्ती सू नार पि ।।53।। बाता बड नहीं नीपजे, मोठॉ लागेजी बेल। लौही तो जब निसरेजी, ज्यो चिरिजेचाम, पितम वह नर कायर नाहि।।54।। कहणो घणो सोहिलोजी, देणो घणो दोहिलोजी 2 आ रिध कूण कूण छोड़सी।।55।। कहणो घणो सोहिलोजी लेणो घणो दोहिलोजी। सुन साधण ए, मै ही आरिध छोड़सा।।56।। चटु आगली मोडी ने, धनोजी उठकर कहीं बोल्या जी। कहीं बोल्याजी, मै वीरो थे बहनड़ी।।57।। हसती तो हसा किया, रोल्या किया तमाशा जी। साय पितमजी, यह बाता थे किम करोजी।।58।। पचा मिलकर जोड़ोजी, टूटो सगपण दाजोजी 2, मै वीरो थे बहनड़ी जी। चटु आगली मोड़ी ने, घनोजी उठ कर चाल्याजी 2 सालभदरजी रे मिदराजी।।59।। उठरे मतरी कायरिया, हूँ धनो अगवाणीजी। आपा दोनु हो, दोनुॅ सजम आदरोजी।।60।। धन जी ने सालभदरजी, लीनो सजम भारोजी। साह धनोजी, मोख तणो सुख पाविया, सा सालभद्रजी देवलोका सुख पामिया।।61।।

***

संघ समर्पणा गीत

(आचार्य श्री रामलालजी म सा द्वारा कृत)

तर्ज– मेरी भावना

सघ हमारा अविचल मगल, नन्दन वन सा महक रहा।
हम सब इसके फूल व कलिया, सुन्दरतम निज सघ अहा।।
वीर प्रभु के उपदेशो ने, सघ की महिमा गाई है।
सुरनर वन्दन करे सघ को, सघ साधना भाई है।।१।।

सघ समष्टि का हित करता, व्यष्टि उसमे सामिल है।
सघ हेतु निज स्वार्थ तजे जो, वही प्रशसा काबिल है।।
व्यक्तिवाद विद्वेष बढाता, सघ वाद दे प्रेम सदा।
व्यक्तिभाव को छोड समर्पण, सघ भाव मे रहे सदा।।२।।

व्यक्ति अकेला निर्बल होता सघ सबल होता माने।
सघे शक्ति कलौ युगे की, सत्य भावना पहचाने।।
एक सूत्र कोई भी तोडे, रस्सी हस्ती को बाधे।
एक–एक मिल बना सघ यह, दु सम्भव को भी साधे।।३।।

सघ श्रेय में आत्य श्रेय है, ऐसा दृढ विश्वास मेरा।
सघ मे मुझमे भेद न कोई, बोल रहा हर श्वास मेरा।।
सघ परम उपकारी हमको, सघ ने सम्यक बोध दिया।
सघ न होता हम क्या होते, सघ ने हमको गोद लिया।।४।।

शैशव, यौवन, वद्धावस्था, सदा सघ उपकारी है।
भव सागर से तारण हारा, हम इसके आभारी है।।
नगर, चक्र, रथ, पद्म, चद्र, रवि, सागर, मेरु की उपमा।
सूत्र नन्दि मे सघ गौरव की क्या कोई है कम महिमा।।५।।

शान्तिनाथ मनमाही जपतॉ, चाहे सो फल पावे जी।
ताप तेजरो दु ख दारिद्र्र, सब मिट जावे जी।।3।।
विश्वसेन राजाजी के नन्दन, अचलादेवी रानी जाया जी।
गुरु प्रसादे चौथमल कहे, घणा सुहाया जी।।4।।

❋❋❋

सुबह अरु शाम हो

तर्ज - तन के तंदुरे से....

सुबह अरू शाम हो-2 श्रद्धा से सुमिरण करले,
जय गुरु नाना जय जय गुरु राम ॥टेर॥

1 कितनी सुन्दर पतित पावन, मिली है सुन्दर जोडी ऽऽ
चाद सूरज सी सोहे दर्श से, कर्मो को दे तोडी-2
बसन्त ऋतु सा हो-ऽऽऽ कोयल सी भक्ति बोले

2 ताप हरे, सताप हरे, गर सकट मे जो सुमरे-2
खेवनहार वीर से सच्चे, ध्यान तू दिल मे धरले-2
जवाहर गजानन्द से ऽऽऽ-2 शासन के मन को मोहे

3 लाभ उठाले, बरसे बादल, छा जाये हरियाली-2
चमक उठेगी आत्मा तेरी आत्मानन्दी भारी,
आस्था के निर्झर से ऽऽऽ-2, अन्तर कलिमश धोले

4 अब तो इस मन मदिर मे 'इन्द्र' आश लगी है दर्श की
क्या रग लाती है गुरु भक्ति, मिले हनुमत शक्ति,
नयनो से धार बरसे ऽऽऽ-2 चातक सा दिल बोले

रामायण प्रत्येक कर्म ही गीता है।

आचार्य नानेश चालीसा

भक्ति भाव शुद्ध मन पढे, प्रतिदिन जो नर नार।
भवोदधि से वो पार है शका नही लिगार।।1।।
अन्तर शान्ति प्राप्त की परचा है यह प्रत्यक्ष।
एक बार आजमाईये, कहते हैं जन दक्ष।।2।।

जय नानेश गणी अवतारी, विपद् हरो गुरुदेव हमारी।1।
माता श्रृंगारा के जाये, मोडी सुत जग मे कहलाये।2।
दाता गाव मे जन्म है पाया, जन्म भूमि का यश फैलाया।3।
नाम है नाना काम विशाला, पोखरना वश का उजियाला।4।
लघु वय मे सब लोक निहारा, छोड दिया फिर सब ससारा।5।
पूर्व प्रबल पुण्योदय आया, गणपतिगण का गणी कहलाया।6।
सहनशीलता गजब तुम्हारी, लख कर प्रमुदित जनता सारी।7।
लाखो धरमपाल बनाया, समता का सदेश सुनाया।8।
गुरु परमारथ तुमने कीना, पथ प्रभु महावीर का दीना।9।
नयनहीन इक वृद्धा माई, दर्शन कर ज्योति प्रकटाई।10।
देवनौका को उल्टी कीन्हा, भक्त उबार अभय वर दीन्हा।11।
आधि व्याधि तन मन छाई, नाम रटा तब सब ही नसाई।12।
शुभ भावो से जो कोई ध्यावे, भव जल तरणी पार लगावे।13।
पच अतिशय के तुम धारी, कलियुग मे प्रकटे अवतारी।14।
सकलागमके तुम हो ज्ञाता, महादानी तुम शिव के दाता।15।
तत्व ज्ञान नवनीत निकाला, देते भर भर प्रेम का प्याला।16।
वाणी मे है ओज निराला, सुन नर नारी कहते व्हाला।17।
नही तुमसा जग मे कोई योगी, मोक्ष मार्ग मे तुम सहयोगी।18।

माता पिता की सेवा द्वारा सदैव प्रसन्न रखे।

प्रेम सूत्र से बधा सघ है, हिल मिल आगे बढते है।
निन्दा, विकथा तज गुणिजन के गुणगण मन मे धरते हैं।।
दूर हटा छंल, छद्म अह को, सरल, सहज, सद्भाव धरे।
पर हित हेतु तज, निज इच्छा, सहज सुकोमल भाव वरे।।६।।

नाम अमर है उन वीरो का, जिनने सघ सेवा धारी।
अपना कुछ ना सोच किया, सर्वस्व सघ पे बलिहारी।।
यही प्रार्थना वीर प्रभु से, ऐसी शक्ति दो हमको।
सघ सेवा मे झोके जीवन, और न कुछ सूझे हमको।।७।।

सघ हेतु कुर्बान हमारा, तन मन जीवन सारा है।
सघ हमारा ईश्वर, हमको सघ प्राण से प्यारा है।।
चमडी कागज खून की स्याही, अस्थि लेखनी लेकर के।
रचे भले सघ गौरव गाथा, उऋण न हो उपकारो से।।८।।

अरिहत सिद्ध सुदेव हमारे, गुरु निर्ग्रन्थ मुनीश्वर है।
जिन भाषित सद् धर्म दया मय, नित्य यही अन्तर स्वर है।।
सद् गुरु आज्ञा ही प्रभु आज्ञा, इसमे भेद न कोई है।
शास्त्र–शास्त्र मे जगह–जगह पर वीर वचन भी वो ही है।।६।।

सघ नायक ! सघ मालिक, हम सब साधु मार्ग अनुयायी हैं।
और नहीं दूजे हम कोई, बस तेरी परछाई है।।
रत्नत्रय शुद्ध पालन करके, तोडे कर्मो की कारा।
नाना गुण का धाम सघ है घर–घर गूजे यह नारा।।१०।।
स्वार्थ–मान को छोड सघ की सेवा जो नर करता है।
इह–परलौकिक कष्ट दूर कर, सौख्य सपदा वरता है।।

सत्य व ध्यान से मन शुद्ध होता है।

आचार्य रामेश चालीसा

वीर प्रभु का ध्यान धार, ले सबल नानेश।
गुरु गुण गाऊ प्रेम से, जय जय जय रामेश ।1।
हुक्म गच्छ के नाथ हो, ज्योतिपुज गुणधाम।
श्रद्धायुत श्री चरण मे, वदन हो निष्काम ।2।।

जय जय राम नाम सुख कन्दा। जय जय जय भूरा कुल चन्दा ।1।
पिता नेम के नयन सितारे। मा गवरा के प्राण पियारे ।2।
दो हजार नो चेत सुहाना। सुद चौदस धारा तन बाना ।3।
देशनोक मे मगल छाया। मरूमाटी का मान बढाया ।4।
जन्म नाम जयचन्द कहाया। पुर परिजन मन राम सुहाया ।5।
पढकर जैन जवाहर वाणी। तिरे अनेको भवि जन प्राणी ।6।
कथा अनाथ सनाथ पढी जब। धर्म शक्ति पहचानी थी तब ।7।
मुनि बनू गर रोग नसावे। धारा मन मे परचा पावे ।8।
फिर नानेश शरण मे आये। सयम लेने को ललचाये ।9।
पूनम सत फतह अरू मोती। हुए प्रसन्न जब चर्चा होती ।10।
सयम पथ की करी समीक्षा। तब गुरुवर से लीनी दीक्षा ।11।
तन की ममता दूर निवारी। मन की समता खूब निखारी ।12।
मनोयोग से सेवा साधी। वीतराग आज्ञा आराधी ।13।
गुरु आज्ञा मे मुझको खोना। धारा जल्दी पावन होना ।14।
जो साधक लायक बनता है। वो सघ का नायक बनता है ।15।
बने सघ के तुम अधिकारी। फैली महिमा जग मे भारी ।16।
नाना से तुम तुम से नाना। लगता चेहरा एक समाना ।17।
पचाचार पलावे पाले। मर्यादाओ के रखवाले ।18।
सकल शास्त्रा के तुम हो ज्ञाता। पडित गण भी लख हर्षाता ।19।
महाज्ञानी है महा तपस्वी। महाध्यानी है महा मनस्वी ।20।

धन्य धन्य है जैन समाजा, पाया तुमसा गुरु महाराजा।19।
नही जो शीतलता चन्दन मे, पाई वह तेरी चरणन मे।20।
हुक्म सघ के अष्टम नेता, हो तुम अष्ट कर्म विजेता।21।
सुर नर चरण शरण मे रहते, पा वचनामृत हिय घट भरते।22।
तुम सुख शाति श्री के दाता, तुम भव्यो के भाग्य विधाता।23।
तीन लोक मे महिमा भारी, है हम सब तव चरण मझारी।24।
नही चितामणी तुम सम गुरुवर, वह तो है केवल जड पत्थर।25।
नहीं उपमा रवि शशि की देता, उष्ण सूर्य चदा घट भरता ।26।
काम धेनु है पशु बेचारा, प्रभु सागर सारा है खारा।27।
नही कोई उपमेय जगत मे, इसीलिए तव बना भगत मे।28।
जिस जन मन मे आप विराजे, अष्ट कर्म अरि दूरा भाजे।29।
श्रमण सघ के प्रबल सेनानी, नही तुमसा कोई दूजा सानी।30।
सिह गज अगनि विषधर सारे, भूतादि भय दूर निवारे।31।
शुद्ध मन सेवा जो आराधे, मन वाछित कारज वो साधे।32।
आयरिया पद के अधिकारी, शिष्य सम्पदा हे बहु भारी।33।
गजब आपकी भाषण शैली, समोवशरण की छटा निराली।34।
दर्शन एक बार जो पाया, फिर दूजा कोई दाय न आया।35।
सकल सघ है ऋणी तिहारा, कैसे उतरे कर्ज हमारा।36।
सगठन–प्रेमी गहन गभीरा, दीपे ब्रह्म तेज शरीरा।37।
जय–जय हो गणिवर नानेशा, सघ अधिनायक जय अखिलेशा।38।
तुमने लाखो प्राणी तारे, क्या है गुरु अपराध हमारे।39।
वन्दन श्री चरणो मे नाना, धर्म गौतम, को पार लगाना।40।

सुमति गुमति नभकर वर्ष मीम शहर चौमासा।
मनि श्री गौतमजी ने पूर्ण किया श्री नानेश चालीसा।।

माता पिता की यश गौरव की वृद्धि करें।

卐 मेरी भावना 卐

जिसने रागद्वेष-कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवो को मोक्ष-मार्ग का, नि स्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी मे लीन रहो ॥1॥

विषयो की आशा नहीं जिनको, साम्यभाव धन रखते है।
निजपर के हित-साधन मे जो, निशदिन तत्पर रहते है।
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते है।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत् के, दु ख समूह को हरते है ॥2॥

रहे सदा सत्सग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या मे यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन-वनिता पर न लुभाऊँ, सतोषामृत पिया करूँ ॥3॥

अहकार का भाव न रक्खू, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरो की बढती को, कभी न ईर्षा-भाव धरू।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करू।
बने जहाँ तक इस जीवन मे, औरो का उपकार करू ॥4॥

मैत्री-भाव जगत् मे मेरा, सब जीवो पर नित्य रहे।
दीन दु.खी जीवो पर मेरे, उर से करुणास्रोत बहे।
दुर्जन-क्रुर-कुमार्गरतो पर, क्षोभ नहीं मुझ को आवे।
साम्यभाव रक्खू मै उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥5॥

गुणी जनो को देख ह्दय मे, मेरे प्रेम उमड आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।

मौनी आत्म ज्यी कहलाते। महावीर का धर्म निभाते।21।
उपधि अल्प मेघावी राया। अतिशय धारी अद्भुत माया।22।
सम्यक श्रद्धा शक्तिमान है। श्री बहुश्रुत जी सत्यवान है।23। सादा
जीवन गुरुवर त्यागी। ऊँचा चितन जिन अनुरागी।24।
क्रिया चारू चरित सवाया। मानो चौथा आरा आया।25।
जीवन मे दर्शन आगम के। राम गुरु सूरज सम चमके।26।
व्यसन मुक्त सन्देश सुनाया। सुख शान्ति का मार्ग दिखाया।27।
घट घट ज्ञान प्रदीप जलाये। तत्व ग्रथि को खोल बताये।28।
मिथ्या सम्यक् भेद बताया। जिन धर्मी का मान बढाया।29।
नयनो से अमृत झरता है। पापी भी पावन बनता है।30।
कृपा किरण जब जिस पर पड़ती। मन की कलियें उसकी खिलती।31।
राम नाम सकट सब हर्ता। राम नाम सपत सब कर्ता।32।
राम नाम है जन हितकारी। राम नाम है मगलकारी।33।
जपो राम सुख दुख की बेला। जपो राम जन बीच अकेला।34।
क्षमा श्रमण हे शात सुधाकर। करुणा सागर धर्म दिवाकर।35।
सुनो सुनो गुरुदेव हमारी। आई है अब मेरी बारी।36।
मारग लम्बा घोर अधेरा। साथ चलो या करो सवेरा।37।
टूटी नैया दूर किनारा। भव जल शोखो बनो सहारा।38।
पौरुष जागे आलस भागे। शुभ आशीष यही हम मागे।39।
गौतम की है यही पिपासा। अजर अमर दो शिव पद वासा।40।

चालीसा गुरु राम का, संकट मोचन हार।
पढे सुने जो भाव से, होवे भव से पार।।
काया रस नम पद बरस, मास पोष बद ध्यान।
"मुनि गौतम" रचना करी, बालाघाट सुस्थान।।

संसार के समस्त प्राणियों की रक्षा करें।

मीमासा परिषद् द्वारा मान्य प्रार्थनाए

हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला

प्रभु पच परमेष्ठी दयाला।
मुझमे कर दो ज्ञान उजाला ।।टेर।।

अरिहन्त सिद्ध को शीश नमाऊँ,
आचार्य उपाध्याय के गुण गाऊ,
मुनिवर सब ही गुण की माला ।। हे प्रभु ।।

इनकी भक्ति का रस पीऊँ,
व्यसन मुक्त मैं जीवन जीऊँ,
पीकर जिनवाणी का प्याला ।। हे प्रभु ।।

अन्तर्दृष्टा मै बन जाऊँ,
सम्यक् ज्ञान की ज्योति जगाऊँ,
शुद्धाचार का ओढ दुशाला ।।हे प्रभु ।।

झूठ अनीति को मै छोड़ू,
विषय वासना से मुख मोड़ू,
समझू इसको विष का प्याला ।। हे प्रभु ।।।

मन वच तन के योग हो सुखकर,
जीवन हो यह स्व पर हितकर,
''धर्म'' ध्यान का हो उजियाला ।। हे प्रभु ।।

तपस्या से तन शुद्ध होता है।

होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मै, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषो पर जावे ।।6।।

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखो वर्षो तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्यायमार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ।।7।।

हो कर सुख मे मग्न न फूले, दु.ख मे कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे।
रहे अडोल-अकप निरतर, यह मन दृढतर बन जावे।
इष्ट-वियोग अनिष्ट योग मे, सहनशीलता दिखलावे ।।8।।

सुखी रहे सब जीव जगत् के, कोई कभी न घबरावे।
वैर, पाप, अभिमान छोड जग, नित्य नये मगल गावे।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावे ।।9।।

ईति-भीति व्यापे नहीं जग मे, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ हो कर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा-धर्म जगत् मे, फैले सर्व हित किया करे ।।10।।

फैले प्रेम परस्पर जग मे, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे।
बन कर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति-रत रहा करे।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दु ख सकट सहा करे ।।11।।

सत्य व ध्यान से मन शुद्ध होता है।

जय जय जय भगवान्

जय जय जय भगवान्, जय जय जय भगवान्।
अजर अमर अखिलेश निरजन, जयति सिद्ध भगवान्।1।जय
अगम अगोचर तू अविनाशी, निराकर निर्भय सुखराशी।
निर्विकल्प निर्लेप निरामय, निष्कलक निष्काम।2।जय।
कर्म न काया मोह न माया, भूख न तिरखा रक न राया।
एक स्वरूप अरूप अगुरु-लघु, निर्मल ज्योत महान।3।जय।
हे अनत हे अन्तर्यामी, अष्ट गुणों के धारक स्वामी।
तुम बिन दूजा देव न पाया, त्रिभुवन में अभिराम।4।जय।
गुरु निर्ग्रन्थो ने समझाया, सच्चा प्रभु का रूप बताया।
तुझमें मुझमें भेद न पावू, ऐसा दो वरदान।5।जय।
सूर्यभानु है शरण तुम्हारी, प्रभु मेरी करना रखवारी।
अब तुम में ही मिल जाऊ मै, ऐसा दो वरदान।6।जय

श्री महावीर-प्रार्थना

महावीर प्रभु के चरणो में, श्रद्धा के कुसुम चढ़ाये हम।
उनके आदर्शों को अपना, जीवन की ज्योत जगाये हम।टेर।
तप-सयम मय शुभ साधन से, आराध्य-चरण आराधन से।
बन मुक्त विकारों से सहसा, अब आत्म-विजय कर पायें हम।1।
दृढ निष्ठा नियम निभाने में, हो प्राण बलि प्रण पाने में।
मजबूत मनोबल हो ऐसा, कायरता कभी न लायें हम।2।
यश-लोलपुता पद-लोलुपता, न सताये कभी विकार व्यथा
निष्काम स्व-पर कल्याण काम, जीवन अर्पण कर पाये हम।3।
गुरुदेव शरण में लीन रहे, निर्भीक धर्म की बाट बहे।
अविचल दिल सत्य-अहिसा का, दुनिया को सुपथ दिखायें हम।4।
प्राणी-प्राणी सह मैत्री सजे, ईर्ष्या-मत्सर-अभियान तजे।
कथनी-करनी इकसार बना, तुलसी ! तेरा पथ पाये हम।5।

मिटाइये—माया को सरलता से, लोभ को संतोष से।

मेरे प्यारे देव गुरुवर

मेरे प्यारे देव, गुरुवर, श्री जिन धर्म महान।
सदा हो मन मे इनका ध्यान।।
इनके उपदेशो पर मेरा, जीवन हो गतिमान।
इन्हीं पर हो जाऊँ कुर्बान।।टेर।।

सिद्ध प्रभुवर को मै ध्याऊँ, अरिहन्तो को शीश नमाऊँ।
चौबीसी जिन जपता जाऊँ, मै भी उनका जिन बन जाऊँ।
अन्य देव नहीं मन को भाये, अरिहन्त सिद्ध ही प्राण।।
सदा हो मन मे इनका ध्यान ।।

राम गुरु आगम के ज्ञाता, उच्च क्रिया से जिनका नाता।।
ज्ञान ध्यान तप तेज सुहाता, जन-जन के जो भाग्य विधाता।।
नाना गुरु के पाट विराजे, जिनशासन की शान।।
सदा हो मन मे इनका ध्यान ।।

जिनवाणी की महिमा भारी, जिनवाणी भविजन उपकारी।
आत्म शाति की सच्ची क्यारी, विषय कषायो की है आरी।।
तुलना जग में नहीं है इसकी, गूजे जय-जय गान।
सदा हो मन मे इनका ध्यान ।।

यह तन विष की बेलडी,
गुरु रत्ना री खाण,
शीश दिये भी गुरु मिले,
तो भी सस्ता जाण।।

मिटाइये–क्रोध को क्षमा से, मान को नम्रता से।

लघु प्रतिक्रमण

(तर्ज देख तेरे ससार की हालत)

नित्य शाम को जीवन खाता खोलो करो विचार,

श्रावक यह तेरा आचार।

मोक्ष मार्ग मे कदम बढाये कितने दो या चार,

करले बारम्बार विचार ॥टेर॥

जो शुभ निश्चय किये सवेरे कितने पूर्ण हुए वो तेरे।
विघ्न देख घबराया, या डटकर रहा तैयार। श्रावक।1।
कितने कार्य किये पुण्यो के, कितने कार्य किये पापो के।
देख तोल कर पुण्य-पाप को, किधर है कितना भार।श्रावक।2।
कितने अवगुण त्यागे तूने, कितने सद्‌गुण धारे तूने।
तू-तू मै-मै व्यर्थ लगाकर, अथवा की तकरार।श्रावक।3।
कितना सग किया गुणियो का, कितना लाभ लिया मुनियों का।
या खेल-तमाशे ठट्ठी-हसी में, मस्त रहा बेकार।श्रावक।4।
मानव जीवन सफल बनाले, इस नर-तन से लाभ उठा ले।
लक्ष चौरासी योनी में, यह मिले न बारम्बार।श्रावक।5।
सवर करले तप आदरले, पुण्य कमाले पाप खपाले।
'केवल' कहते 'पारस' सुन रे, यह जीवन दिन चार।श्रावक।6।

जय बोलो महावीर स्वामी की

जय बोलो महावीर स्वामी की, घट-घट के अन्तर्यामी की।
जिसने जगती का उद्धार किया, जो आया शरण वो पार किया।
जिस पीर सुणी हर प्राणी को, जय बोलो महावीर स्वामी की।1।
जो पाप मिटाने आया था, जिसने भारत को आन जगाया था।
उस त्रिशलानन्दन ज्ञान की, जय बोलो महावीर स्वामी की।2।
हो लाख बार प्रणाम तुम्हे, हे वीर प्रभु भगवान् तुम्हे।
मुनि दर्शन मुक्तिगामी की, जय बोलो महावीर स्वामी की।3॥

जिसका हृदय अच्छा, उसका जीवन सच्चा।

दु:खमी आरो पॉचमो

साभल हो गौतम ! दु खमो आरो तो होसी पाचमो ॥टेर॥
मोटा नगर होसी गामडा, गावड़ा रा होसी रे मसान।
ऊँचा कुल रा छोरा-छोकरी, दीसेला दास समान।साभल।1।
राजा तो होसी जम सारखा, लालची होसी प्रधान।
ऊँचा तो कुल री नारियॉ, लाज-शरम देसी छोड़।साभल।2।
पुत्र-पितानो कहणो नाही मानसी, शिष्य-गुरु अविनीत।
ऊँचा कुल री केई नारियॉ, दीसेला वेश्या समान।साभल।3।
मिथ्यात्वी सूर बहुत पुजावसी, एक धर्म तणो भेद।
देवता रा दर्शन दुलर्भ पामसी, विद्या बहु जासी विच्छेद।साभल।4।
ब्राह्मण तो होसी धन का लोभिया, हिसा में बतासी बहु धर्म।
केई मिथ्यात्वी होसी मानवी, मुश्किल निकलेगा ज्यारो भ्रमा।साभल।5।
वश अनारज सुखिया होवसी, दु खिया तो होसी सज्जन लोग।
काल-दुष्काल पड़सी अति घणो, उन्दर-सर्पादिक होसी थोक।साभल।6।
अन्न में सरसाई थोड़ी होव-सी, आठखो पावेला पूरो नाय।
चौमासा लायक क्षेत्र साधु ने, थोड़ा मिलेला भारत माय।साभल।7।
साधु-श्रावक री पडिमा-विच्छेद जावसी, शिष्य गुरु रा अविनीत।
गुरु चेला ने थोड़ा पढावसी, मुश्किल निभेला ज्यारी प्रीत।साभल।8।
कुमाणस-क्लेशी घणा होवसी, अल्प होसी न्यायवत।
हिन्दू राजा नीचा बाजसी, म्लेच्छ होसी बलवत।साभल।9।
नीच कुल रा राजा बणसी, करसी खोटा-खोटा न्याय।
ज्यारे घर में लोह लाधसी, सो धनवन्त कहलाय।साभल।10।
सवत् उगणीसे वर्ष इगेसठ, चित्तौड़ गढ चौमास।
गुरु नन्दलाल तणा शिष्य जोड़ियो, अल्प कियो रे समास।साभल॥11॥

जिसकी जीभ जेरी, उसकी दुनिया वैरी।

प्रभु मन मन्दिर में आओ

तर्ज वीरा रूमक झूमक

प्रभु मन मन्दिर में आओ, म्हारो जीवन सफल बणाओजी ।।टेर।।
अज्ञान नींद मे सोयो, जीवन रो वैभव खोयो,
थे ज्ञान दीप जलाओ जी ।।प्रभु ।।1।।
भव-भव मे भमतो आयो, नर तन ओ उत्तम पायो,
म्हारी नावा पर लगाओ जी ।।प्रभु ।।2।।
मुझ ने है शरणो थारो, प्रभु करुणा नजर निहारो,
म्हारे दिल रा कोड़ पूरावो जी ।।प्रभु ।।3।।
पल-पल में तुझने ध्याऊँ, थारी कीरति मैं नित गाऊ,
म्हारे अन्तर मे रम जाओ जी ।।प्रभु ।।4।।
थे तीन भूवन रा स्वामी, घट-घट रा अन्तर्यामी,
निज मूरत ''विजय'' दिखाओ जी ।।प्रभु ।।5।।

गुरुवर तेरे चरणों की

तर्ज तू प्यार का सागर है .

गुरुवर तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाये,
सच कहता हूँ मेरी-2 तकदीर सवर जाये। गुरुवर तेरे ।।टेर।।
सुनते है दया तेरी दिन रात बरसती है,
इक बून्द जो मिल जाए, मन की कली खिल जाए।गुरुवर तेरे
ये मन बड़ा चचल है कैसे तेरा भजन करूँ,
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाए।गुरुवर तेरे
नजरो से गिराना नहीं, चाहे जितनी सजा दे दो,
नजरो से जो गिर जाए, मुश्किल है सभल पाए। गुरुवर तेरे
मेरे इस जीवन की बस एक तमन्ना है,
तुम सामने हो मेरे, मेरे प्राण निकल जाए। गुरुवर तेरे

जिसका विनय ज्यादा, उसका अधिकार ज्यादा।

सत् संगत से सुख मिलता है

(तर्ज जय बोलो महावीर)

सत् सगत से सुख मिलता है, जीवन का कण-कण खिलता है ।।टेर ।।

सत् सगत से सद्ज्ञान मिले, सत् सगत से ही भगवान मिले,
पानी से पौधा खिलता है ।। 1 ।

सत् सगत से ही वैराग्य बढ़े, सत् सगत से ही सौभाग्य बढे,
दीपक से दीपक जलता है ।।2।।

नास्तिक से आस्तिक बन जाता, पापी भी पावन बन जाता,
चाबी से ताला खुलता है ।।3।।

कपड़े को जैसा रग मिले, मानव को जैसा सग मिले,
बस उसी ढग में ढलता है ।।4।।

लाखों का भाग्य जगाया है, लाखो को पार लगाया है,
सत्सग से सिद्धि मिलती है ।।5।।

चेतन को चेतावनी

तर्ज जब तुम्हीं चले परदेश

तू भूल के अपने आप, रहा कर पाप,
ओ चेतन प्यारा, दुनिया में कौन तुम्हारा ।।टेर ।।

1 जब मौत शीश पर आयेगी, कोई चीज साथ नहीं जाएगी,
माँ भाई बाप नहीं देगा कोई सहारा

2 ये जितने रिश्ते नाते है, सब मरघट तक ही जाते है,
फिर हस अकेला करता कूच विचारा

3 बस धर्मध्यान सग जाएगा, जो शाति सुख पहुचाएगा,
ले जैन धर्म की शरण मिले, शिवद्वारा

4 जिन वीतराग गुण गायाकर, नित जीवन सफल बनाया कर,
मोह माया है 'चन्दन' झूठ पसारा ।।

जिसका स्वभाव बुरा, उसका हो गया चूरा

संवत्सरी आया पर्व महान्

धन्य-धन्य है दिवस आज का, सुनो सभी इन्सान,

सवत्सरी आया पर्व महान्।

राग-द्वेष को त्यागके सारे, गावो प्रभु गुणगान,

सवत्सरी आया पर्व महान्॥

गुरु चरणों में सारे आके, विनय से अपना शीश झुकाके।
रगड़े-झगड़े सभी मिटाके, अपने दिल को साफ बनाके॥
प्राणी-मात्र से मिलकर सारे, मागो क्षमा का दान॥

सवत्सरी आया ॥1॥

यह पर्व उद्धार करेगा, नवजीवन सचार करेगा।
जो जन इसको प्यार करेगा, उसके सब सताप हरेगा।
इस पर्व से मिलेगा तुझको, मुक्ति का वरदान।

सवत्सरी आया ॥2॥

भेद-भाव को दूर निवारो, जागो वीरो उठो विचारो।
जीती बाजी व्यर्थ न हारो, मिलकर आज प्रतिज्ञा धारो।
जैन धर्म का तन-मन-धन से, करेंगे हम उत्थान।

सवत्सरी आया ॥3॥

पापो के सब बन्धन तोड़ो, मोह और ममता को छोड़ो।
विषयो से मन अपना मोड़ो, सच्चा प्रभु से नाता जोड़ो।
चन्द्रभूषण जीयो और जीने दो, यही वीर फरमान।

सवत्सरी आया ॥4॥

***

मेरी जिदगी की शान हो

भगवान तेरी आराधना, मेरी जिदगी की शान हो,
मुझे एक यही वरदान हो, मेरी आत्म बलवान हो।टेर।

मुझे सुख की कोई परवाह नहीं, दु ख में भी निकले आह नहीं।
बस एक तेरा ध्यान हो, होठो पे तेरा नाम।1।

दौलत रहे या ना रहे, खुशिया हो चाहे गम रहे।
चाहे आधी हो तूफान हो, विचलित न मेरा ध्यान हो।2।

पथ में हजारों विघ्न भी आए डिगाने जो अगर।
चाहे सामने शैतान हो, मेरे प्राण भी कुर्बान हो।3।

तू सूर्य है मैं कमलिनी, तू चद्र है मैं कुमुदिनी।
तब कमल पद में स्थान हो, भक्ति ही मेरी तान हो।4।

तू धर्म भानु लोक में, तेरे दिव्य ललितालोक मे।
मिटे तिमिर ज्ञान विज्ञान हो, मुक्ति ही मेरा धाम हो।5।

घुंघरू छमछमाछम

घुघरू छमछमाछम छण णण णणण बाजै रे, बाजै रे।
तपसी रे आँगणियै, शासण देव विराजे रे।।ध्रुव।।

तप स्यू होवे निर्जरा, तप स्यू कर्म खपाय।
तप स्यू बचगी द्वारिका, कह्यो सूत्र रे माय।1।
घोर तपस्वी धन्ना मुनिवर, काढ्यो तन रो सार।
शालिभ्रद भी करी तपस्या, मासखमण अवधार।2।
हु शि उ चौ श्री जग ना रा, रसना ने दी मार।
झूम झूम गुण गाथा गावो, कटज्या कष्ट तमाम।3।
तप रो ताप तपावै तन ने, तपज्या मनो विकार।
साचो तपसी करै सदाई, क्रोध मान परिहार।4।
घर में जद गगा बहे, करल्यो आगण साफ।
मैली चादर धोयल्यो, मिटज्या मन रा ताप।5।

हर परिस्थिति में समभाव रखें।

मोती

नेमीश्वर गीगनारा वासी तो मोती दयो महाराणी जी
कोर कोरी कुलडी मे दही रे जमादयू तो गोड़े बैठ जीमादयूजी-2
काई रे करू थारे कुलड़ी रो दही तो गोड़े परतन बैठा जी-2
बागो तो केसरीया सिया दयू तो टोपी साल गुलाबी जी-2
काई रे करू थोरे केसरीया बागोतो टोपी परतनै ओढाजी-2
हाथ पगा में कड़ी रै कडुला तो गले में मादलियो जी
काई रे करू रे थारी कडी रे कडूलो तो मादलियो परतन पहराजी-2
सोने रो तनै चुटियो घड़ादयू तो दड़ी रतन जडादयू जी-2
काई रे करू थारो सोने रो चुटियो तो दड़ी परतन खेलाजी-2
दड़ी हाथ न झेलाजी-2
माता सेवादे न रीस ज आई तो दोय-2 थापड़ा मारी जी-2
हाथा मारी लाता मारी तो चुठीयो चमकायोजी-2
गीगो रुस बजारा चाल्यो तो आगे दादोसा मिलग्या जी-2
हाथ पकड़ गीगा ने ल्याया तो गीगा ने कुण रुसायो जी-2
थारो गीगो बहुत हठीलो तो सोय सोय जीनसा मागैजी-2
हार तोड़र मोती मागै जी-2
म्हारो गीगो बहुत हठीलो तो सोय-2 जीनसा देस्याजी-2
डब्बो खोल बराबर बैठायातो हार तोड़र मोती दीनोजी-2
मोती ले पीछोकर बाया तो साझ परत उग आयाजी-2
पो फाटी दिन गण लाग्यो तो लामक-झुमक लाग्या जी-2
गाडो मोतयारो ल्याया तो भरीया घीरत भड़ाराजी-2

***

छोटी बात को मोटी नहीं बनावे।

तप में शक्ति अपार

(तर्ज ना कजरे की धार)

तप में है शक्ति अपार, है आधि-व्याधि-उपचार,
है चौथा शिवपुर द्वार वीर प्रभु ने गाया है।
तप को श्रेष्ठ बताया है।

तप है शुद्धि का शासन, तप है मुक्ति का आसन,
हो सत्य अहिसा समता का जीवन में आराधन।
पाए उजाला, अमृत प्याला तप जीवन का आधार॥1॥

तप की महिमा सब ग्रन्थो, धर्मो मे है बतलाई,
जीवन को सफल बनाने तप है अतिशय वरदाई,
तप गुण गाए, मौज मनाए, तप गगा है सुखकार ॥2॥

जो मन से तप अपनाता, सुरपति भी शीष झुकाता,
तप आत्मशाति को देता गण-गौरव खूब बढाता,
मन को साधे, तप आराधे, हो जाए बेड़ा पार॥3॥

शासन में हुए तपस्वी है एक-एक से भारी,
तपसी के चरण कमल में हर बार बार बलिहारी।
तप नौका, पाले मौका, हो जाए जय-जयकार॥4॥

***

गुरु ब्रह्म गुरु र्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु साक्षात् पर ब्रह्म, तस्मै सद्गुरवै नम·॥

अपनी समझ अपने तक रखें।

म्हारे नैणों में आओ

तर्ज म्हारे आगणिये आया

म्हारे नैणो में आओ बस जाओ महावीर।
अरज सुनावे थारो चाकरियो॥टेर॥
अर्जुनमाली चण्डकोशिया हत्यारा ने तारया।
अबे म्हाने भी तारो भगवान महावीर॥1॥
चौरासी रा चक्कर काट्या हाथ नहीं कुछ आया।
भव अटवी रो छोर दिखाओ महावीर॥2॥
काम-क्रोध री अग्नि जल रही समता जल बरसाओ।
म्हाने समकित रो बोध कराओ महावीर॥3॥
प्राणा रा आधार आप तो मोक्ष जाय विराज्या।
म्हाने जल्दी सू पास बुलाओ महावीर॥4॥
जब तक मोह विछोह प्रभुजी "गौतम" ने समझायो,
मोह बिन्दु सू दूर हटाओ महावीर॥5॥

लोगो के दिलों मे पता नहीं कैसा अजीब सा तूफान आया है,
सब एक दूसरे से नफरत करते हैं, आदमी-आदमी से घबराया है,
मन ही मन हसी आती है, क्या करेगा वह चाद पर जाकर,
जबकि वह धरती पर रहना भी नहीं सीख पाया है॥

ब्रह्मचर्य परम तप है।

कासी री नगरी रे बारे मोटो मेलो लाग्यो रे

कासी री नगरी रे बारे, मोटो मेलो लाग्यो रे।
धुणी तो धुखावे बैठो जोगीडो ।। टेर ।।

जोगीड़ा ने देखण, लोगा रो टोलो आयो रे।
काष्ठ जगावै बैठो जोगीड़ो ।। 1 ।।

महला रे झरोखे बैठा, वामा दे रा जाया रे।
टोली देखी ने हेठे उतरिया ।।2।।

धोडलिये चढीने कवर, पारस जी पधार्‌या रे।
आवतोड़ा देखीने आसन ढालियो ।।3।।

जलती धुणी मे प्रभु नाग जलता देख्या रे।
हिवड़ो भरायो प्रभु आप रो ।।4।।

पूछे कवर पारस जोगी, साची बात बतावो रे।
किण कारण जलावो मोटे काछ ने ।।5।।

जप तप री बात्या कवर जी, थारे समझ नहीं आवे हो।
घोड़लिया घेरो नी हरिया बाग मे ।।6।।

काठ ने चिरायन तब, नाग ने बचाया रे।
जलतोड़ी काया को कियो छुटको ।।7।।

दया रे धरम को बोध जोगीड़ा ने दीधो रे।
साचोड़ो धर्म प्रभु भाखियो ।।8।।

घट घट रा तो भाव प्रभुजी, थासु नहीं छाना हो1
भक्त मण्डली में गाया भाव सु ।।9।।

हर बात समेटना, बिखेरना नहीं।

सुबह शाम बोलो

तर्ज छोटी छोटी गैया

सुबह शाम बोलो गुरु राम राम,
नाम लिया सू कटे कष्ट तमाम ॥टेर॥

बीकाणे री धरती, देशाणे रो राम-2
भूरा कुल मे प्रकटे आप महान्।
सुबह शाम

गगाजल जैसा आप निर्मल, चदा जैसा आप शीतल।
वाणी मे बहावे नित अमृतधार,सुणकर हर्षे नर नार।
सुबह शाम

नेमी के नन्दन, जग में महान-2
नाना गुरु से पाया, निर्मल ज्ञान। सुबह शाम

गवरा के नन्दन है, जग मे महान-2
पाता है जग जिन से, निर्मल ज्ञान। सुबह शाम

जीवन है जिनका गुणो की खान-2,
नर नारी सारे, करे गुणगान। सुबह शाम

करिये कृपा अब करुणानिधान-2,
भवजल से तारो, करो जगजाण। सुबह शाम

गुरु राम गुरु राम मेरे भगवान,
चरणो मे अर्पित है मेरे दसप्राण। सुबह शाम

गुरुवर तेरे चरणों की

तर्ज तू प्यार का सागर है

गुरुवर तेरे चरणो की गर धूल जो मिल जाये,
सच कहता हूँ मेरी-2 तकदीर सवर जाये।
गुरुवर तेरे ॥टेर॥

सुनते है दया तेरी दिन रात बरसती है,
इक बून्द जो मिल जाए, मन की कली खिल जाए।
गुरुवर तेरे ॥टेर॥

ये मन बडा चचल है कैसे तेरा भजन करूँ,
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाए।
गुरुवर तेरे ॥टेर॥

नजरो से गिराना नहीं, चाहे जितनी सजा दे दो,
नजरो से जो गिर जाए, मुश्किल है सभल पाए।
गुरुवर तेरे ॥टेर॥

मेरे इस जीवन की बस एक तमन्ना है,
तुम सामने हो मेरे, मेरे प्राण निकल जाए।
गुरुवर तेरे ॥टेर॥

विमुत्ता हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो। —आचा 1/2/2
जो साधक कामनाओं को पार कर गए हैं, वस्तुत वे ही मुक्त पुरुष हैं।

अगर तुम हंसोगे तो सारी दुनिया हंसेगी

जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा

तर्ज खडी नीम के नीचे

जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा, प्रभुवर ऐसी भक्ति दो,
समभावो से कष्ट सहूँ बस, मुझ मे ऐसी शक्ति दो। ॥टेर॥

किन जन्मो में कर्म किये थे, आज उदय में आये है।
कष्टो का कुछ पार नहीं, जो मुझ पर ये मण्डराये है।
डिगे न मन मेरा समता से, चरणो में अनुरक्ति दो॥ . ॥1॥

कायिक दर्द भले बढ जाये, किन्तु मन मे क्षोभ न हो।
रोम-रोम पीड़ित हो मेरा, किन्तु मन विक्षोभ न हो।
दीन भाव नहीं आवे मन मे, ऐसी शुभ अभिव्यक्ति हो॥ ॥2॥

आर्त्तध्यान नहीं आवे मन मे, दु ख दर्दो को पी जाऊँ।
ध्यान लगादू प्रभु चरणों में हस-हस कर मै जी जाऊँ।
रोने से ना दर्द मिटे, यह पावन चिन्तन शक्ति दो॥ ॥3॥

महावेदना भले सतावे, ध्यान तुम्हारा ना छोड़ू।
जीवन की अन्तिम श्वासो तक, अपनी समता ना छोड़ूँ।
कभी न मागू तुमसे प्रभुवर, कष्टो से मुझे मुक्ति दो॥ ॥4॥

भले न तन दे साथ जरा पर, मन साधन अनुरक्त रहे।
जीवन की हर श्वास तुम्हारे, चरणो की ही भक्त रहे।
रहे समाधि अविचल मेरी "शान्ति" की अभिव्यक्ति हो॥ ॥5॥

जब हम स्वयं ही अपने न हुए तो दूसरा कौन अपना होगा

गुरु रामलाल जी महाराज

तर्ज झीणी-झीणी उई रे

गुरु रामलाल जी महाराज परम तपस्वी है।
श्री सघ को है इन पर नाज, परम तपस्वी है।।टेर।।
नाना गुरु के शिष्योत्तम है, शिष्योत्तम है आचार्य हमारे।
करे अपने गुरु के काज, परम तपस्वी है।
गुरु रामलाल जी महाराज 1

चित्तौड मे हुई थी तैयारी, बीकानेर मे चादर धारी।
उदयपुर में पाट विराज, परम तपस्वी है।।
गुरु रामलाल जी महाराज 2

आत्म ज्ञान लो आत्मज्ञानी, फिर से लिखो नई कहानी।
नाना गुरु के शिष्य सरताज, परम तपस्वी है।
गुरु रामलाल जी महाराज 3

राम कहो आराम मिलेगा, आगम मन सुमन खिलेगा।
ये तिरण तारण की जहाज, परत तपस्वी है।।
गुरु रामलाल जी महाराज 4

-मंगल-मंत्र-

ॐ भवणवई-वाणवतर, जो इस वासी, विमाणवासी अ
जे के वि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमतु मम स्वाहा।

राम रोम मे रम रहा, दो अक्षर का नाम।
धरती गगन करेगे, युगो-युगो तक करेगे प्रणाम।

सिनेमा का एक ही काम ले दाम और भुलाए राम

शुभ मंगल हो, शुभ मंगल हो

तर्ज– शुभ मंगल हो

शुभ मगल हो, शुभ मगल हो,
शुभ मगल, मगल, शुंभ मगल हो ।।टेर।।

जिन मगल हो, दिन मगल हो,
जीवन का हर क्षण मगल हो ।।1।।

नभ मगल हो, जग मगल हो,
धरती का हर कण मगल हो ।।2।।

गति मगल हो, स्थिति मगल हो,
आयु का हर क्षण मगल हो ।।3।।

मुक्त बन्धन हो, सुख स्पन्दन हो,
रामेश चरण में वदन हो ।।4।।

गुरु स्वस्थ रहे, गुरणी भी स्वस्थ रहे,
कृपा का हर क्षण वर्षण हो ।।5।।

तन अर्पण हो, मन अर्पण हो,
गुरु राम चरण में समर्पण हो ।।6।।

पर दु.ख का चिंतन मानवता है।

मेरे सर पर रख दो

मेरे सर पर रख दो गुरुवर, अपने ये दोनो हाथ,
देना हो तो दीजिए, जन्म-जन्म का साथ

1 सुना है अपने शरणागत को अपने गले लगाते हो,
अरे हमने ऐसा क्या मागा जो देने से घबराते हो,
होऽऽ, चाहे सुख मे हो या दुख मे,
तुम देना अपना साथ

2 गम की धूप में झुलस रहे है, प्यार की छाया कर दे तू,
बिन माझी के नाव चले ना, अब पतवार पकड ले तू,
हो ऽऽ, मेरा रस्ता रोशन कर दो-2, छायी अधियारी रात।।

3 गुरु बिन ज्ञान कहाॅ से पाये, जीवन मे अधियारा है,
गुरु दर्शन हो जाये तो जीवन मे उजियारा है,
होऽऽ, हम राम गुरु से मागे-2, इतना ही आशीर्वाद।

卐 चौबीस तीर्थंकर स्तुति 卐

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र सुविधि शीतल श्रेयास जिन, वासुपूज्य पूजित सुरराय॥
विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वल, शाति कुन्थु अर मल्लि मनाय।
मुनि सुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढाय॥

***

समय बलवान है।

अंगुली पकड मेरी

अगुली पकड मेरी रस्ता दिखाता है--२
रस्ता दिखाता है, रस्ता दिखाता है।
कभी तो ये नाना माझी बन जाता है।
कभी तो ये रामा साथी बन जाता है।।टेर।।

ठोकर लगी मुझको पत्थर नुकीला था।
पर चोट ना आई, नाना ने सभाला था।
तो, चलो ना कभी तो ।।१।।

कोई याद करे उनको दु ख हल्का हो जाये।
कोई भक्ति करे उनकी ये उनके हो जाये।
तो, बोलो ना कभी तो ।।२।।

कोई चैन से सोता है, कोई भूखा रोता है।
किसी का भी दोष नहीं कर्मों का पासा है।
तो, गाओ ना.. कभी तो ।।३।।

नानेश गुरु की हम भक्ति रचाते हैं।
रामेश गुरु की हम भक्ति रचाते है।
देशाणे वाले हो हम दिल से बुलाते है।
तो, आओ ना कभी तो ।।४।।

तुम ठुकरा दिये हमको, हम किससे बोलेगे।
दर तेरे खडे होकर, छुप--छुप कर रो लेगे।
तो बोलोना कभी तो ये नाना रक्षक बन जाता है।।५।।

मेरे इस जीवन की बस यही तमन्ना है।
गुरुवर के चरणो मे मुझे मुक्ति मिल जाये।
तो, बोलो ना कभी तो ।।६।।

एक बनो, नेक बनो

नानेश कहो रामेश कहो

तर्ज : दिल लुटने वाले......

नानेश कहो, रामेश कहो, दोनो ही मगलकारी है।
एक अष्टम पद के धारी थे, एक नवम पट अधिकारी है॥
नानेश कहो ॥टेर॥

एक शृगारा के जाये थे, एक मा गवर के प्यारे है।
एक दाता गाव मे जन्मे थे, एक देशनोक अवतारी है,
नानेश कहो ॥1॥

एक धर्मपाल प्रतिबोधक है, एक श्रीवाल प्रतिबोध है,
एक ध्यान समीक्षण दाता थे, एक गुरु आज्ञा के धारी है।
नानेश कहो ॥2॥

एक मोड़ी नन्द कहाते थे, एक नेमी सुत कहलाते है।
एक समता के पुजारी थे, एक कठिन क्रिया के धारी है।
नानेश कहो ॥3॥

एक 20वीं सदी के दाता थे, एक 21वीं सदी के विधाता है।
दोनो ही सदिया धन्य हुई, हम सब तेरे बलिहारी हैं।
नानेश कहो ॥4॥

> नफरत को छोड़ो दोस्ती से रहना सीखो,
> क्या करोगे चॉद पे जाकर,
> पहले धरती पे तो जीना सीखो।

इण कलियुग रा भाग्य विधाता

तर्ज : इण कलयुग.......

इण कलियुग रा भाग्य विधाता, राम सबका कष्ट मिटाता
लाखो आखडल्या रो तारो हार हिए रो लागे
म्हाने देशाणे रो लाल प्यारो प्यारो लागे,
म्हाने नाना गुरु रो राम प्यारो-प्यारो लागे

यश कीर्ति री नहीं चाहना, मान सदा पीछे राखे,
पद पदवी सु सदा दूर रहे, सयम सु प्रीति धारे,
अनुशासन मे आगे आगे, पाखडी तो दूरा भागे,
वीर शासन रो सचालक हार हिए रो लागे ॥1॥

झालर री झणकारा सु भी, प्रियकारी मधुरवाणी,
सुनता ही मन मुग्ध बने, यह समता छकणे सु छाणी,
आ है राम गुरु री वाणी, वाणी लागे घणी सुहाणी,
ओ मधुर-2 बोलणियो, हार हिए रो लागे ॥2॥

छवि अनोखी इण मे देखी, लाखा रो उद्धार कर्‌यो,
व्यसन मुक्ति रे आदोलन सु, जीवन रो निर्माण कर्‌यो,
देन निराली निर्मल लागे, सघ सुधारे सागे सागे
वीर सपूतो ओ रामेश गुरुवर हार हिए रो लागे ॥3॥

गंवरा का प्यारा

तर्ज · झिलमिल सितारो का

गवरा का प्यारा, नेमी पिता का दुलारा,
राम गुरु है सबकी ऑखो का तारा,
नाना गुरु के चरणो मे सौपा, जीवन सारा गवरा .
देशाणे का लाल ये तो, सबसे निराला है,
शरणे जो भी आये कहते आला है,
मोह और माया से किया है किनारा,
राम गुरु है . ॥1॥
सयम मे राम गुरुवर कितने ही सख्त है,
ऐसे ही बनते नहीं लाखो लाखो भक्त है,
कथनी को करनी से जीवन में उतारा,
राम गुरु है ॥2॥
सूरज की रोशनी को कौन रोक पाता है,
रोके अगर कोई तो खुद ही धोखा खाता है,
चमकेगा जग में ये शासन सितारा,
राम गुरु है ॥3॥
चाहे कैसी घड़िया आये, विचलति ना होयेगे,
तेरी आज्ञा से कभी मुख नहीं मोड़ेगे,
समझेगे गुरुवर तेरी ऑखो का ईशारा,
राम गुरु है ॥4॥
चाहे आज कष्ट हो, चाहे विपदा भारी हो,
नाना ने तुम मे भर दी, अपनी ऊर्जा सारी,
सघ तुम्हारे राम दीप श्री सघ सारा,
राम गुरु हे ॥5॥

आत्मशुद्धि

आत्मशुद्धि हित धर्म ध्यान का, चितन जो नर करते है।
अशुभ कर्म को दूर हटाकर मोक्षमार्ग पग धरते है॥1॥

जग के अकेला आया हूँ और यहा से अकेला जाऊँगा।
कर्म शुभाशुभ सग मे लेकर, यथास्थान मै पाऊँगा॥2॥

मेरा मेरा करके फँसता, नही कोई जग मे तेरा है।
देह छोडकर उड़ेगा पछी, भिन्न स्थान होगा डेरा॥3॥
महा विडबना है परिजन की अत साथ नहीं आता है।
निर्भय होकर देखो प्राणी, मरण अकेला पाता है॥4॥

धन्य धन्य नमिराज ऋषिश्वर, एकत्व भावना भायी थी।
कगन से लेकर के प्रेरणा, झट मिथिला ठुकराई थी॥5॥

स्वर्गपति ने दस प्रश्नो का, भाव पूर्ण उत्तर पाया।
खुश होकर के स्वय शकेन्द्र ने, ऋषि वर गुण गौरव गाया॥6॥

क्षण भगुर है तेरी काया, क्षण भगुर है जग की माया।
खूब खिलाया, खूब पिलाया, फिर भी है नश्वर काया॥7॥

देख देख तन की सुन्दरता, खुश हो-होकर फूल रहा।
लूट गई तेरी रूप सपदा, सनत् चक्री को भूल रहा॥8॥

वैभव मे मतवाला बनकर, घूम रहा जैसे हस्ती।
रावण जैसे चले गए फिर, तेरी कौन भला हस्ती॥9॥

पुद्गल के ये रूप पराये, जिन्हे तू अपना मान रहा।
ज्ञानी कहते इन्हे छोड़ दे, क्यो तू अपनी तान रहा॥10॥

अंतःकरण पवित्र होना दीक्षा है

भावना दिन-रात मेरी

भावना दिन-रात मेरी, सब सुखी ससार हो,
सत्य सयम शील का प्रचार, घर-घर द्वार हो ॥टेर॥

शाति अरु आनद का, हर एक घर मे वास हो,
वीर वाणी पर सभी ससार का विश्वास हो ॥1॥
रोग अरु भय शोक होवे, दूर सब परमात्मा,
कर सके कल्याण-ज्योति, सब जगत की आत्मा ॥2॥

गुरुजनो के चरणो मे, दृढ प्रीति अरु उल्लास हो,
काम अरु क्रोधादि दुष्टो का सर्व सहार हो ॥3॥

ज्ञान अरु विज्ञान का, सब विश्व मे प्रचार हो,
सब जगत के प्राणियो का, धर्म मे सचार हो ॥4॥

आचार्य देव के विचारो का, जगत मे मान हो,
दास देवी को गुरु की शान पर अभिमान हो ॥5॥

***

निर्जरा भावना (अर्जुनमाली)

पच महाव्रत सचरण, समिति पच प्रकार।
प्रबल पच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार॥

पॉलीथीन के उपयोग से वचे।

बोल मनवा बोल णमो (तीरथधाम)

बोल मनवा बोल णमो अरिहताण
अडसठ तीर्थ धाम णमो अरिहताण
बोल मनवा बोल णमो सिद्धाण
अष्ट सिद्धी भण्डार णमो सिद्धाण
बोल मनवा बोल णमो आयरियाण
आचार पालनहार णमो आयरियाण
बोल मनवा बोल णमो उवज्झायाण
सूत्र ज्ञान दातार णमो उवज्झायाण
बोल मनवा बोल णमो लोए सव्वसाहूण
करे सकल कल्याण णमो लोए सव्वसाहूण
बोल मनवा बोल णमो अरिहताण
बोल मनवा बोल णमो सिद्धाण
बोल मनवा बोल णमो आयरियाण
बोल मनवा बोल णमो उवज्झायाण
बोल मनवा बोल णमो लोए सव्वसाहूण

卐 सन्तों का सत्कार 卐

तर्ज दिल के अरमा

सन्त का सत्कार होना चाहिए, देव सा व्यवहार होना चाहिए।
सन्त को पूजो, न पूजो पन्थ को, सत्य ही आधार होना चाहिए।
सन्त वो ही सन्त जो निर्ग्रन्थ हो, शान्त मन निर्भार होना चाहिए।
नहीं नफरत स्थान पाती है वहाँ, प्रेममय ससार होना चाहिए।
है सभी अपने न कोई गैर है, विश्व ही परिवार होना चाहिए।
ज्योति 'चन्दन' जले पावन प्रेम की, खुला दिल दरबार होना चाहिए।

अंत:करण पवित्र होना दीक्षा है।

त्यागी ममता जागी समता, नश्वरता चित्त मे लाया।
अनित्य भावना भाकर के ही, भरत चक्री केवल पाया॥11॥

रोग शत्रु जब तन को घेरे, नहीं किसी का दाव लगा।
आत्मिक शाति जब ही पाता, मन मे समता भाव जगा॥12॥

स्वय बाधता, स्वय भोगता, नहीं कोई शरण दाता।
त्राहि-त्राहि करके रोता, कोई न दुख से छुड़वा पाता॥13॥

जन्म जरा मृत्यु के भय से भयभीत बना पामर प्राणी।
कुकृत्यो को नहीं छोड़ता, पीला रहा दुख की घाणी॥14॥

तीन खण्ड के स्वामी थे पर, मिला नहीं मरते पानी।
पुरजन परिजन पास ना आए, बीती थी जब जिदगानी॥15॥

अहो अनाथी मुनि के सिर मे, घोर वेदना छायी थी।
रहे ताक ते पारिवारिक जन, चैन पलक नहीं पाई थी॥16॥

अरहट माला सम जग लीला, सदा पलटती रहती है।
नहीं जगत मे स्थिरवासा, जिनवाणी यू कहती है॥17॥

अपना अपना किसे पुकारे, जग जीवन तो है सपना।
छोड़ कल्पना अपने मन की सत्य नाम प्रभु का जपना॥18॥

जग का सुख शाश्वत नहीं होता, जैसे बादल की छाया।
क्यो भरमाया भौतिक सुख मे, बिजली सी चचल माया॥19॥

कोई किसी का नहीं है शत्रु, न ही किसी का मित्र कोई।
करमाधीन जगत की लीला, क्यो तुने सन्मति खोई॥20॥

शालिभद्र क्या ऋद्धि पाये, नृप श्रेणिक देखन् आया।
ससार भावना भा करके ही, जग बधन से मुक्ति पाया॥21॥

दु ख मुक्त रहना चाहते हो तो स्वयं को सदा व्यस्त रखो

ले लो शांति प्रभु रो नाम

ले लो शाति प्रभु रो नाम, जिनवर शाति शाति रो धाम।
धोयलो दिल रो पाप तमाम, वेगी मुक्ति मिलसी-2 ॥1॥

नहीं है जीवन रो विश्वा7स, अचानक रूक जावेला श्वास,
पूरी हुई न किणरी आस, मन की मन मे रह जासी-2 ॥2॥

बॉधो मत कर्मो रा भार, सुनकर जिनवाणी रो सार।
जग में भरीयो दु ख अपार, आखिर छोड़्या सरसी-2 ॥3॥

कोई मत कीजो थे प्रमाद, करलो शम्भु चक्री ने याद।
ले लो नर भव रो शुभ स्वाद, सूरज निश्चय री ढलसी-2 ॥4॥

छोडो सगलो आर्त्तध्यान, कर लो समता रस रो पान।
जग मे होनकार बलवान, टालियो नहीं टलसी-2 ॥5॥

सुमरो वीर प्रभु भगवान, जिनेश्वर करते है कल्याण।
मगलकारी सुख री शान, जप्या होसी बेड़ो प्यार-2 ॥6॥

卐 गुरु सांचा तेरा ही 卐

तर्ज दिल का रिश्ता

गुरु साचा तेरा ही द्वारा है, हमने दिल से तुम्हे पुकारा है।
तेरी मूरत जहॉ समा जाये, उसका तो हो गया उद्धारा है ॥टेर॥
तेरी बस्ती मे जो भी आता है-2 जिन्दगी का सफर सुधारा है ॥1
तेरी जन्नत का नूर क्या देखे, ये आशियाना हमको प्यारा है ॥2॥
जो भी ध्याये तुम्हे सदा मन से-2, आपदाओ से ही किनारा है ॥3॥
तू ही आधार तू ही साया है-2, मेरे मन ने यही स्वीकारा है ॥4॥

विषयातुर मनुष्य ही दूसरे प्राणियों को परिताप देते है।

सिद्ध अरिहंत में मन रमाते चलो

सिद्ध अरिहन्त मे मन रमाते चलो।
सर्व कर्मो के बधन छुडाते चलो ॥टेर॥

1 इन्द्रियो के ना घोडे विषय में अडे।
जो अड़े भी तो सयम के कोडे पडे।
तन के रथ को सुपथ पर चलाते चलो॥ सिद्ध

2 सन्त निर्ग्रन्थ का ध्यान धरते चलो।
पाप तज करके सब काम करते चलो।
सद्गुणो का परम धन कमाते चलो॥ सिद्ध

3 लोग कहते है भगवान आते नहीं।
माता मरुदेवी जैसे बुलाते नहीं।
चन्दना जैसी दृढता दिखाते चलो॥ सिद्ध

4 लोग कहते है भगवान भाते नहीं।
पुद्गलासक्ति माया मिटाते नहीं।
आत्म भावो की ध्वनिया गूजाते चलो॥ सिद्ध

5 दु ख मे तड़फे नहीं, सुख में फूले नहीं।
प्राण जाये मगर धर्म भूले नहीं।
प्रेम श्रद्धा के बल को चढाते चलो॥ सिद्ध

6 वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी।
सिद्धि पायेगे हम भी कभी न कभी।
ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो॥ सिद्ध

7 सूर्य या चन्द्र जब तक चमकता रहे।
तेज सत्य धर्म का दमकता रहे।
जिनशासन रसिक जग बनाते चलो॥ सिद्ध

आयु और यौवन प्रतिक्षण बीता जा रहा है।

कभी वीर बनके, महावीर बनके

कभी वीर बनके, महावीर बनके,
चले आना दर्श मोहे दे जाना-2

1 तुम ऋषभ रूप में आना-2,
तुम अजित रूप में आना-2,
सभवनाथ बनके, अभिनन्दन बनके॥ चले आना ॥

2 तुम सुमति रूप में आना-2,
तुम पदम रूप मे आना-2,
सुपार्श्व बनके, चन्द्र प्रभु बनके॥ चले आना ॥

3 तुम सुविधी रूप में आना-2,
तुम शीतल रूप में आना-2,
श्रेयासनाथ बनके, वासुपूज्य बनके॥ चले आना ॥

4 तुम बिमल रूप में आना-2,
तुम अनत रूप मे आना-2,
धर्मनाथ बनके, शातिनाथ बनके॥ चले आना ॥

5 कुथुनाथ रूप में आना-2,
तुम अर रूप में आना-2,
मल्लिनाथ बनके, मुनिसुव्रत बनके॥ चले आना ॥

6 नमिनाथ रूप में आना-2,
नेमिनाथ रूप में आना-2,0
पार्श्वनाथ बनके, वर्धमान बनके॥ चले आना ॥

मृत्यु के लिए अकाल-वक्त-बेवक्त जैसा कुछ नहीं है।

माया ममता मोह का बंधन तोड़ के

माया ममता मोह का बंधन तोड़के जी-3
कैसे आप निकले घर छोड के ओ महावीर कैसे आप

रूखी सूखी रोटी भी तो हमसे छूट नहीं सकती।
सड़ी गली इन बेचीजो से काया रूठ नहीं सकती।
कैसे पकवान छोड़े खाने के राज रसोडे
चले गए षट रस छोड़के जी 3 कैसे आप

फटे पुराने कपडो पर भी बद लगाते जाते है,
जिस दिन नया पहनते उस दिन फूले नहीं समाते है
असली सोने के गहने हीरे पन्नो से जड़े,
आभूषण कैसे फैके तोड़ के जी 3 कैसे आप

छोटा सा घर नहीं छूटता, वर्षा मे टप टप करता,
एक एक अगुली के खातिर है भाई-भाई लड़ मरता
इतने बड़े राज को और सरताज को,
पीछे न देखा मुख मोड़ के जी 3 कैसे आप

काली और कुरूप कामिनी प्राणो से प्यारी होती
बच्चा जब बीमार पड़े तो ऑखे चढ मारी जाती
छोड़ा कुटुम्ब जन तुमको अनुप धन
भाई बन्धु से नाता तोड़ के जी 3 कैसे आप

माई जणे तो ऐड़ा जण, के नाना के राम गुरुवर,
नही तो रहीजे बाझड़ी, मती गमाइजे नूर ॥

जो साधक कामनाओं को पार कर गए है, वे ही मुक्त पुरुष है।

नैतिकता का सिहनाद

नैतिकता की सुर सरिता मे, जन-जन-मन पावन हो
सयममय जीवन हो ॥टेर॥

अपने पर अपना अनुशासन नैतिकता की परिभाषा,
वर्ण-जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा,
छोटे-छोटे सकल्पो से मानस परिवर्तन हो,
सयममय जीवन हो.. ॥1॥

मैत्रीभाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढता जाए,
समता सह अस्तित्व समन्वय नीति सफलता पाए,
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो,
सयममय जीवन हो ॥2॥

विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी,
नर हो नारी बने, नीतिमय जीवन चर्या सारी,
कथनी-करनी की समानता मे गतिशील चरण हो,
सयममय जीवन हो ॥3॥

सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वय सुधरेगा,
नैतिकता का सिहनाद सारे जग मे बिखरेगा,
मानवी आचार सहिता मे अर्पित तन-मन-धन हो।
सयममय जीवन हो ॥4॥

जैसो हेत हराम से, तैसो हरि से होय।
चल्या जाय बैकुण्ठ में, पल्लो न पकड़े कोय॥

बुद्धिमान साधक को अपनी साधना में प्रमाद नहीं करना चाहिए।

मैंने बहुत किये अपराध

मैने बहुत किये अपराध, जिनद मोहे कैसे तारोगे ।।टेर।।

ऋषभ अजित सभव, सुमति पद्म सुपार्श्व
वन्दा प्रभु ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल दो शिववास
जिनद मोहे कैसे तारोगे ।।1।।

श्रेयास वासुपूज्य सुमरु, विमल विमल मतिवन्त,
अनन्तनाथ ने धर्म जिनेश्वर, शाति करो श्री सत,
जिनद मोहे कैसे तारोगे ।।2।।

कुन्थुनाथ प्रभु करुणा सागर, अरनाथ जगदीश,
मल्लिनाथ ने मुनिसुव्रत जी नित्य नमावू शीश,
जिनद मोहे कैसे तारोगे ।।3।।

इकविसमा नेमिनाथ निरूपम, अरिष्टनेमि जगधार,
तोरणसे प्रभु पाछा फिरिया, शिवरमणी भरतार,
जिनद मोहे कैसे तारोगे ।।4।।

पारस-पारस सरीखा प्रभुजी, बनारस के नाथ,
वर्धमान शासन के स्वामी, प्रणमू जोडू हाथ,
जिनद मोहे कैसे तारोगे ।।5।।

तुम बिन पायो दु ख अनता, जन्म-मरण जजाल,
तिलोक ऋषि कहे, जिम-तिम करने तारो दीनदयाल,
जिनद मोहे कैसे तारोगे ।।6।।

जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ काल है, जहाँ क्षमा तहाँ आप ।।

तत्त्व-दृष्टा को किसी के उपदेश की अपेक्षा नहीं है।

केसरिया केसरिया

केसरिया केसरिया आज हमारो रग केसरिया
बोलो, केसरिया केसरिया आज हमारो रग केसरिया
हम भी केसरिया, तुम भी केसरिया
धरती सारी आज केसरिया
केसरिया केसरिया आज हमारो रग केसरिया
गुरु गुरुणीसा आज केसरिया
श्रावक आज केसरिया
बहुडल है आज केसरिया
केसरिया केसरिया
बीकानेर नगरी आज केसरिया
तपसी भाई बहन आज केसरिया
सारा श्रीसघ आज केसरिया
केसरिया केसरिया

गतिशील करो चरणो को, मजिल पास नहीं है,
कालचक्र गतिमान, किसी का दास नही है ।
जीवन की हर श्वास को सार्थक कर डालो तुम,
क्योकि इन श्वासो पर पल भर का भी विश्वास नहीं है।

मनुष्य जन्म अनमोल रे

मनुष्य जन्म अनमोल रे, मिट्टी मे ना डोल रे,
अब जो मिला है फिर ना मिलेगा,
अभी नहीं अभी नहीं अभी नहीं रे ॥टेर॥

तू सत्सग मे आया कर, गीत प्रभु के गाया कर,
साझ सवेरे, बैठकर बदे, प्रभु का ध्यान लगाया कर,
नहीं लगता कुछ मोल रे, मिट्टी मे ना डोल रे॥ अब जो ॥1॥

तू बुलबुल है पानी का, मत जोर कर जवानी का,
सभल सभल कर चल मेरे बदे, पता नहीं जिन्दगानी का,
सबसे मीठा बोल रे, मिट्टी मे ना डोल रे॥ अब जो ॥2॥

मतलब का ससार है इसका न कोई एतबार है,
सभल सभल कदम बढाना, फूल न अगार है,
मन की ऑखे खोल रे, मिट्टी मे ना डोल रे॥ अब जो ॥3॥

समता के भडार है, नाना गुरु भगवान है,
आचार्य श्री राम है, आगम ज्ञान महान है,
जो कोई गुरु की शरण में आवे, उनका बेड़ा पार है,
गुरु वचन अनमोल रे, मिट्टी मे ना डोल रे॥ अब जो ॥4॥

महावीर की तस्वीर पर, कालिख मत डालो।
बहुत हुआ,आस्तीन के सर्प मत डालो॥
अगर थोड़ी भी हमदर्दी है, अपने समाज के प्रति,
मरघट बनने से पहले, मानवता का मदिर बना डालो॥

जो अपनी साधना मे उद्विग्न नहीं होता है, वही और साधक प्रशसित होता है।

तेरे बिना गुरुवर हमारा नहीं कोई रे

तेरे बिना गुरुवर हमारा नहीं कोई रे-2
तेरे बिना गुरुवर सहारा नहीं कोई रे-2 ॥टेर॥

भाई बन्धु कुटुम्ब कबिला, कुटुम्ब कबिला भाई बधु,
बिगडी बात बनाया नहीं कोई रे   तेरे बिना

गहरी नदिया नाव पुरानी, बड़े-बडे भवरे गहरा पानी,
डुबन लागी नाव बचाया नहीं कोई रे   तेरे बिना

जबसे मैने तुझको ध्याया, तुने मुझको अपना बनाया,
तेरे जैसा लाड लडाया नहीं कोई रे   तेरे बिना

घर-घर तेरा नाम जपाऊँ, तेरी महिमा सबको सुनाऊँ
तेरे जैसा प्यार जताया नहीं, कोई रे   तेरे बिना

कहत कबीर सुनो भाई साधु, सुनो भाई साधु कहत कबीरा,
गुरु बिना ज्ञान बताया नहीं कोई रे   तेरे

सद्गुरु वाटे रोशनी, दूर करे अधेर।
अधो को आखे मिले, अनुभव भरी सवेर॥
प्रज्ञा पुरुष प्रकाश दे, अन्तरदृष्टि योग।
समझ सके जिससे स्वय, मन मे कैसा रोग॥

नष्ट होते हुए जीवन का कोई प्रतिकार नही है।

फूलों से तुम हॅसना सीखो

फूलो से तुम हॅसना सीखो, भॅवरो से नित गाना।
वृक्षों की डाली से सीखो, फल आये झुक जाना।
सूरज की किरणो से सीखो, जगना और जगाना।
मेहदी के पत्तो से सीखो, पिसकर रग चढाना।
सुई और धागे से सीखो, बिछड़े भाई मिलाना।
दूध और पानी से सीखो, मिलकर प्रेम बढाना।
परवानो से सीखो धर्म पर हॅस हॅस प्राण चढाना।
वायु के झाको से सीखो, आगे बढते जाना।
राम के जीवन से सीखो, आज्ञाकारी बनना।
कृष्ण के जीवन से सीखो, सच्चा मार्ग बताना।
राणा के जीवन से सीखो, वचन का पक्का बनना।
बापू के जीवन से सीखो, सत्य अहिसा प्रिय बनना।
लिकन के जीवन से सीखो, सादा जीवन बिताना।
सतो के जीवन से सीखो, तिरना और तिराना।
कोयल के जीवन से सीखो, मीठी वाणी बोलना।
बगुलो के जीवन से सीखो, ध्यान का पक्का बनना।

सवर भावना (हरिकेशी मुनि)

मोह नींद जब उपशमे, सद्गुरु देय जगाय।
कर्म चोर आवत रूके, तब कुछ बने उपाय।।

कामनाओ का पार पाना बहुत कठिन है।

जब कोई नहीं आता.

जब कोई नहीं आता, मेरे गुरुदेव आते है,
मेरे दु ख के दिनो मे वो बडे काम आते है,
मेरे दु ख के

मेरी नैय्या चलती है, पतवार नहीं होती
किसी और की अब मुझको दरकार नही होती
मै डरता नहीं रास्ते सुनसान आते है,
मेरे दु ख के

कोई याद करे उनको ये दु ख हल्का हो जाये
कोई भक्ति करे उनकी ये उसका हो जाये
ये बिन बोले दु ख को पहचान जाते है,
मेरे दु ख के

ये इतने बड़े होकर भक्तो से पर करे
अपने भक्तो से दु ख पल मे स्वीकार करे
हर भक्तो का कहना ये मान जाते है,
मेरे दु ख के

हे समय नदी की धार कि जिसमे सब बह जाय करते हैं,
हे समय बड़ा तूफान, प्रबल पर्वत झुक जाया करते है।
अक्सर दुनिया के लोग समय के फेर मे चक्कर खाया करते है,
लेकिन कुछ ऐसे होते है, जो इतिहास बनाया करते है॥

कुशल मनुष्य न बद्ध है और न मुक्त।

राम धुन मचाओ

राम धुन मचाऊँ, गुरु राम-राम-राम
मेरा भजन रहे गुरु राम-राम-राम॥ रामधुन ॥1॥

मेरे हृदय मे राम, मेरे होठो पे राम
हृदय होठो पे रहे गुरु राम-राम-राम॥ रामधुन ॥2॥

मेरे विचारो में राम, मेरे आचारो मे राम
विचार-आचार में रहे गुरु राम-राम-राम॥ रामधुन ॥3॥

मेरा ज्ञान है राम, मेरा ध्यान है राम,
ज्ञान ध्यान मे रहे गुरु राम-राम-राम॥ रामधुन ॥4॥

मेरे श्वास में राम, उच्छ्वास में राम,
श्वासो-श्वासो मे रहे गुरु राम-राम-राम॥ रामधुन ॥5॥

मेरे तन मे है राम, मेरे मन मे है राम,
तन-मन मे रहे गुरु राम-राम-राम॥ रामधुन ॥6॥

मेरे घर में है राम, मेरे गाँव में है राम,
देश-विदेश मे रहे गुरु राम-राम-राम॥ रामधुन ॥7॥

जन-जन मे है राम, नाना गुरुवर का राम,
प्रकाश कहे गुरु राम-राम-राम॥ रामधुन ॥8॥

सुना है समय के पर होते है,
पर वे इतने निडर होते हैं।
उड़ते है, कहाँ जाते हे, कुछ पता नही,
जो इन्हे पकड़ ले, वे नर ''वीर'' होते हैं॥

पापकर्म न स्वय करें, न दूसरों से करवाए।

तीन बार भोजन भजन एक बार

तीन बार भोजन भजन एक बार,
उसमे भी आते है, झझट हजार।
मन करता है स्थानक मे जाऊँ,
स्थानक मे जाऊँ, जिनवाणी को पाऊँ।
इतने मे आ गए चार रिश्तेदार,
उसमे भी आते है, झझट हजार॥1॥
मन करता है सामायिक कर लूँ,
सामायिक कर लूँ माला मै जप लूँ।
इतने मे बज गई फोन की टकार,
उसमे भी आते है झझट हजार॥2॥
मन करता है दान मै देऊँ,
दान मै देकर के पुण्य कमाऊँ।
महगाई ज्यादा बड़ा परिवार,
उसमे भी आते है झझट हजार॥3॥
मन करता है उपवास मै कर लूँ,
उपवास कर लूँ बेला पचक्ख लूँ।
इतने मे याद आया निमन्त्रण कार्ड,
उसमे भी आते है, झझट हजार॥4॥

जो एक अपने को नमा लेता है—जीत लेता है, वह समग्र ससार को नमा (जीत) लेता है।

कर्म का मूल क्षण अर्थात् हिसा है।

ओ मतवाले प्रभु गुण वाले

(तर्ज फिरकी वाली तू)

ओ मतवाले प्रभु गुण गाले, तू अपनी जुबान से,
कि तुझको जाना ही पड़ेगा, ससार से ॥टेर॥

भूल गया जो तूने वादा किया था, गाऊँगा गुण गाऊँगा,
भक्ति करूगा तेरी साझ सवेरे, ध्याऊँगा तुझे ध्याऊँगा।
आकर भूला मन मे फूला, तू वादे को भूला,
जग से जोडी, मूर्ख तूने तोड़ी लगन भगवान से ॥1॥

महल अटारी, दौलत ये तेरी, सारी काम नहीं आयेगी,
कि है भलाई तू ने या कि बुराई, साथ तेरे वो जायेगी।
जैसा करले वैसा भरले, तू हृदय मे धर ले,
जेसा देगा वहाँ वो मिलेगा, कि सुनले तू ध्यान से ॥2॥

कैसा अनाडी नहीं सोचा अगाडी, अत समय क्या होवेगा,
खाता खुलेगा जब कर्मों का एक दिन, सुन-सुन कर तू रोयेगा,
पहले सोया पीछे रोया जो पाया सो खोया,
नहीं फेरी नजर गुण गान पे ॥3॥

"अर्थी को देखकर जीवन का अर्थ समझ ले। हमारा जीवन व्यर्थ न जाए, मृत्यु से पूर्व अमरत्व का प्रबन्ध कर ले।"

दु ख सब आरम्भज है, हिसा में से उत्पन्न होता है।

सावन का महीना

(तर्ज सावन का महीना)

सावन का महीना तपस्या है चारो ओर,
देख-देख कर इनको सारे हो गये भाव विभोर॥टेर॥

तपस्या की भावना तो कभी-कभी आती,
नई-नई चीजे खाने जीभ ललचाती।
खाने पर भी लगती यह काया कमजोर-2 देख-देख ॥1॥

तपस्या की महिमा भारी कहते है सारे,
रोग शोक मिटते पल मे तप के सहारे।
तप सरिता मे नहाओ कर मन को जरा कठोर-2 देख-देख ॥2॥

साधुमार्गी सघ तप की खान निराली,
रहती है पल-पल रामा गण में दीवाली।
बरसे घर-घर में तप की घटा घनघोर देख-देख ॥3॥

जीतयशा जी म सा ने उग्र तप ठाया,
कोरमगला सघ का भाग्य सवाया।
राम गुरु की कृपा से चहका इन्द्र चकोर देख-देख ॥4॥

गुणों की कुजी —विनय, विवेक,विशुद्धि
ज्ञान की कुजी —उप्पन्नेई वा,विगमेइवा,धुवेइया
साधुता की कुंजी—शम, दम, यम
मोक्ष की कुंजी —ज्ञान, दर्शन, चारित्र

सम्यग्दर्शी साधक पाप कर्म नहीं करता।

तपस्या जीवन

(तर्ज तपस्या जीवन)

तपस्या जीवन रो शृगार सारा ज्ञानी केवे,
तप मे भारी चमत्कार सारा ज्ञानी केवे ॥टेर॥

हिम्मत री है कीमत भारी,
हिम्मत री है महिमा न्यारी।
तपस्या हिम्मत रो आधार-सारा ज्ञानी . ॥1॥

वीर पुरुष ही तपस्या करसी,
जन्म-जन्म रा पातक झरसी।
सारो हिम्मत रो व्यापार-सारा ज्ञानी ॥2॥

तप करने स्यूँ कुल चमकेला,
तप रे आगे देव झुकेला।
तप मे शक्ति है, अपार-सारा ज्ञानी ॥3॥

तप दीपक री ज्योति निराली,
अन्तर तप ने हरने वाली।
तपस्या इच्छित फल दातार-सारा ज्ञानी ॥4॥

◆◆◆

बिना नयन पावे नही, बिना नयन की बात।
जो सेवे श्री सद्गुरु, सो पावे साक्षात्॥

कर्म से ही समग्र उपाधिया/विकृतियाँ पैदा होती है।

झण्डा ऊँचा रहे हमारा

झण्डा ऊँचा रहे हमारा, जैन धर्म का बजे नगाडा ॥टेर॥

ऋषभदेव ने इसको रोपा, भरत चक्रवर्ती को सौपा।
उसने इसका किया पसारा ॥1॥

महावीर ने इसे उठाया, भारत को सदेश सुनाया।
धर्म अहिसा जग हितकारा ॥2॥

गौतम गणधर ने अपनाया, अनेकान्त जग को समझाया।
स्याद्वाद करके बिस्तारा ॥3॥

हुआ कुमार पाल भूताला, जैन धर्म को जिसने पाला।
इस झण्डे का लिया सहारा ॥4॥

आज इसे मुनियो ने सभाला, भारत मे कर दिया उजाला।
यही करेगा देश सुधारा ॥5॥

स्याद्वाद और दया धर्म की, दुनिया प्यासी इसी मर्म की।
इसमें तत्त्व भरा है सारा ॥6॥

हम सब मिल करेगे सेवेगे, नहीं जरा नमने देवेगे।
चाहे हो बलिदान हमारा ॥7॥

पत्थर के खभे के समान जीवन मे कभी नही झुकने वाला अहकार आत्मा को नरक गति की ओर ले जाता है।

अपने समान ही बाहर में दूसरो को भी देख।

एक बार गाओ तप रा गीत

(तर्ज एक बार आओ जी)

एक बार आओ तप रा गीत आपा गावा।
कर्मा रो मैल सारो धो पावा, तप रा गीत. ॥
तप री नौका स्यू भव जल तर ज्यावा ॥स्थायी॥
जनम-जनम रा कष्ट काटै, तप सयम री साधना,
काया कचन-सी हो ज्यावे, मिटज्या मन री वासना।
आओ तप गगा में न्हाकर सुख पावा ॥1॥
खाणे मे विवेक राख्या, रोग सारा मिट ज्यावे,
जीबड़ी री स्वाद छोड़या, शेष सयम सध पावे।
तपसी सन्ता रा आपा गुण गावां ॥2॥
हुक्म गच्छ में हुअया तस्वी, एक-एक स्यूं जबरा हो,
हो ज्यावो तैयार सारा, कसकर काठी कमरा हो।
बरसे है रिमझिम सावण आपा हरसावा ॥3॥
एक बास करणे वालो भी, कर्म खपावे है भारी,
मासखमण कर कर लाखा ही, अपनी आत्मा ने तारी।
रामगुरु रे शासन मे सब मोज मनावा ॥4॥

कुशल कुभकार मिट्टी से घट बना देता है,
कुशल शिल्पी ईट पत्थर से भव्य भवन बना देता है।

सत्य में घृति कर, सत्य में स्थिर हो।

250

झीणी-झीणी उड़े रे गुलाल

(तर्ज चढ गया.)

झीणी-झीणी उडे रे गुलाल, झीला वाली नगरी में
हा लाग्ये तपस्या रो ठाठ, झीला वाली नगरी में।

1 नाना गुरुवर विराज्या, उदियापुरी रा भाग्य है जाग्या
मासखमण रा है ठाठ, झीला वाली नगरी मे
हा सत सतियों जी रा ठाठ, झीला

2 भक्ता भगवान गुरुवर, भव्य जीवा रा प्राण गुरुवर
जग भूषण अवतार गुरुवर, किरपा रो जब बरसाय, झीला

3 नोखा मे सेवत बाप जी रे देखो, नोखा में वीरेन्द्र मुनि ने देखो
वर्षीतप रा है ठाठ, नोखा नगरी में, झीला

4 युवाचार्य पद गुरुवर हो आए, भक्ति रो बादल मडरायो,
लाग्या अठाया रा ठाठ नोखा नगरी मे झीला

5 नानेश रा चेला गुरु, रामेश रा चेला,
नोखा में कर रह्या तपस्या रा मेला
बोल रह्या जय-जय कार नोखा नगरी में, झीला

6 चुन्ना भी जाग्या ए तो मुन्ना भी जाग्या
वृद्ध भी जाग्या, जूबान भी जाग्या
तपस्या लहर लहराय, नोखा नगरी में, झीला

7 तपस्या बढावे भाई कर्म घटावे,
जीवन री ज्योति ने उज्ज्वल बनावे
केशर रग बरसाय, नोखा नगरी मे, झीला,

हे मानव, एक मात्र सत्य की ही अच्छी तरह जान ले, परख ले।

फूलों से तुम हॅसना सीखो

फूलो से तुम हॅसना सीखो, भॅवरों से नित गाना।
वृक्षों की डाली से सीखो, फल आये झुक जाना।
सूरज की किरणो से सीखो, जगना और जगाना।
मेहदी के पत्तो से सीखो, पिसकर रग चढाना।
सुई और धागे से सीखो, बिछ्ड़े भाई मिलाना।
दूध और पानी से सीखो, मिलकर प्रेम बढाना।
परवानो से सीखो धर्म पर हॅस हॅस प्राण चढाना।
वायु के झोंको से सीखो, आगे बढते जाना।
राम के जीवन से सीखो, आज्ञाकारी बनना।
कृष्ण के जीवन से सीखो, सच्चा मार्ग बताना।
राणा के जीवन से सीखो, वचन का पक्का बनना।
बापू के जीवन से सीखो, सत्य अहिसा प्रिय बनना।
लिकन के जीवन से सीखो, सादा जीवन बिताना।
सतो के जीवन से सीखो, तिरना और तिराना।
कोयल के जीवन से सीखो, मीठी वाणी बोलना।
बगुलो के जीवन से सीखो, ध्यान का पक्का बनना।

पुरुषार्थ ही पुरुष का परम खजाना है।

ज्ञानी के लिए क्या दुःख, क्या सुख ? कुछ भी नहीं।

शिक्षा और धर्म

पढना ही नहीं जिन्दगी
गढना है नव इतिहास
पल पल आ रही मौत है
महगी है हर श्वास

धर्म सस्कृति की बलिवेदी पर
टिकी हुई है जग की आश
इसी आश को करना है पूरा
निकले चाहे मेरी श्वास

धर्म ध्यान तपस्या से
करना है जग का उद्धार
जैन धर्म के जिनवर ने
दिखलाया है ये मोक्ष द्वार

सत्य अहिसा सयम से
इस भव को तर जाना है
महावीर के इस मार्ग को
नाना गुरुवर ने जाना है।

आज खुशी के उत्सव पर
सदेश समता का लेना है
स्वय तर औरो को तरा
अमर धर्म सघ में हो जाना है

पढना ही नहीं जिन्दगी
गढना है नव इतिहास।

–कमल बैद पीयूष

सुख–दुख अतिथि हैं, खुश व उदास मत होइये।

इण कलियुग रा भाग्य विधाता

तर्ज : इण कलयुग......

इण कलियुग रा भाग्य विधाता, राम सबका कष्ट मिटाता
लाखो आखडल्या रो तारो हार हिए रो लागे
म्हाने देशाणे रो लाल प्यारो प्यारो लागे,
म्हाने नाना गुरु रो राम प्यारो-प्यारो लागे
यश कीर्ति री नहीं चाहना, मान सदा पीछे राखे,
पद पदवी सु सदा दूर रहे, सयम सु प्रीति धारे,
अनुशासन मे आगे आगे, पाखडी तो दूरा भागे,
वीर शासन रो सचालक हार हिए रो लागे ॥1॥

झालर री झणकारा सु भी, प्रियकारी मधुरवाणी,
सुनता ही मन मुग्ध बने, यह समता छकणे सु छाणी,
आ है राम गुरु री वाणी, वाणी लागे घणी सुहाणी,
ओ मधुर-2 बोलणियो, हार हिए रो लागे ॥2॥

छवि अनोखी इण मे देखी, लाखा रो उद्धार कर्‌यो,
व्यसन मुक्ति रे आदोलन सु, जीवन रो निर्माण कर्‌यो,
देन निराली निर्मल लागे, सघ सुधारे सागे सागे
वीर सपूतो ओ रामेश गुरुवर हार हिए रो लागे ॥3॥

जो कुशल है, वे काम भोगों का सेवन नही करते।

अपनी निंदा सुनकर धैर्य मत खोइये।

छोटी बात पर बहस मत करिये।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

अक्षय तृतीया के पावन पुनीत पर्व पर

परमागम रहस्य ज्ञाता, व्यसन मुक्ति प्रणेता, तरूण तपस्वी, आचार्य भगवन् श्री श्री 1008 श्री रामलाल जी म सा को शत्–शत् वन्दन अभिवन्दन कर (सुखसाता) ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप एवं सयम यात्रा की सुखसाता पूछते है।

तपस्वी एव वर्षीतप वालो का हार्दिक अभिनन्दन एव बहुमान करते हुए उनकी सुखसाता पूछते हुए जिनेश्वर देव से प्रार्थना करते है कि तपस्या वालों को सुखसाता प्रदान करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित –

सूरजमल, महेन्द्र कुमार, शिखरचन्द

एव समस्त छाजेड (रासीसर) परिवार

पता चौपड़ा हायर सैकण्डरी स्कूल के दक्षिण में, नई लेन,

गगाशहर, बीकानेर

महावीर भण्डार

नई लेन, गगाशहर

हृदय खाली हो जायेगा, ज्यादा मत बोलिये।

अपना मुँह व पर्स सावधानी से खोलिये।

परमागम रहस्य ज्ञाता, व्यसन मुक्ति प्रणेता नानेश पट्टधर परम पूज्य

आचार्य प्रवर श्री श्री 1008 श्री रामलाल जी म सा

के पावन चरणो में

शत्-शत् वन्दन अभिवन्दन

तथा तपस्या एव वर्षीतप वालो का

शत्-शत् अभिनदन